राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

गौरवशाली भारत

दिल्ली से प्रकाशित

R.N.I. NO. DELHIN/2011/38334 वर्ष- 10, अंक- 307 पृष्ठ - 08, नई दिल्ली, गुरुवार ,13 मई 2021, मूल्य रु. 1.50

एक नज़र...

कल मनाई जाएगी ईद आखिरी रोजा आज

नई दिल्ली, (एजेंसी)। दिल्ली समेत देश के किसी भी हिस्से में बुधवार को ईद का चांद नजर नहीं आया है, इसलिए ईद-उल-फितर का त्यौहार शुक्रवार को मनाया जाएगा तथा बृहस्पतिवार को 30वां और आखिरी रोज़ा होगा। फतेहपुरी मस्जिद के शाही इमाम मौलाना मुफ्ती मुकर्रम ने बताया कि दिल्ली समेत देश के किसी भी हिस्सों में ईद का चांद नज़र नहीं आया है, इसलिए ईद का त्यौहार शुक्रवार 14 मई को मनाया जाएगा। उन्होंने कहा कि गुरुवार को 30वां रोजा होगा और शव्वाल (इस्लामी कलेंडर का 10वां माह) की पहली तारीख शुक्रवार को होगी। शव्वाल के महीने के पहले दिन ईद होती है।

उत्तराखंड को रिलायंस फाउंडेशन ने की मदद

नई दिल्ली, (एजेंसी))। रिलायंस फाउंडेशन ने उत्तराखंड की ओर मदद का हाथ बढ़ाया है। रिलायंस फाउंडेशन ने कोरोना से निपटने के प्रयासों में मदद के लिए उत्तराखंड राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (उत्तराखंड एसडीएमएम) को पांच करोड़ रुपए की मदद की है। रिलायंस फाउंडेशन ने मुख्यमंत्री तीरथ सिंह रावत को चिट्ठी लिखकर कहा कि उत्तराखंड सरकार इन मुश्किल हालात में लगातार काम कर रही है। रिलायंस फाउंडेशन स्वीकार करता है कि मौजूदा हालात में व्यापक, टिकाऊ और लचीची प्रतिक्रिया की जरूरत है। इसलिए फाउंडेशन देश की ओर से अपेक्षित बहु-आयामी पहल के मुताबिक कार्य करने के लिए प्रतिबद्ध है।

ममता और गर्वनर के बीच लेटर वार

कोलकाता, (एजेंसी)। राज्यपाल जगदीप धनखड़ के कूचबिहार जिले में चुनाव बाद हिंसा से प्रभावित क्षेत्रों के निर्धारित दौरे की पूर्व संध्या पर मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने बुधवार को उन्हें पत्र लिखकर दावा किया कि संबंधित कदम क्षेत्रों के दौरे के मामले में उनके पूर्ववर्ती राज्यपालों द्वारा अपनाए दीर्घकालिक प्रोटोकॉल का उल्लंघन है। सीएम ने राज्य सरकार के गृह विभाग की प्रोटोकॉल नियमावली के अनुसार राज्यपाल के दौरों को सरकार से आदेश लेने के बाद राज्यपाल के सचिव द्वारा अंतिम रूप दिया जाता है। गवर्नर राज्य के अफसरों से सीधे बात कर रहे हैं और उन्हें आदेश दे रहे हैं, जबकि उन्हें ऐसा न करने का आग्रह किया था।

एडीशनल ऑथेन्टिकेशन की समयसीमा बढ़ाई

नई दिल्ली, (एजेंसी)। आरबीआई ने रिकरिंग कार्ड पेमेंट में बड़ी राहत दी है। आरबीआई ने एडीशनल ऑथेन्टिकेशन की डेडलाइन 30 सितंबर तक बढ़ाने का फैसला किया है। नए नियम को एक अप्रैल 2021 से लागू होना था, आवर्ती लेनदेन को आगे बढ़ाने के लिए कस्टमर को एडीशनल ऑथेन्टिकेशन की जरूरत होती। शुरु में इस नियम को 2,000 रु. तक आवर्ती लेनदेन के लिए लागू करने की योजना थी, लेकिन आरबीआई ने दिसंबर में घोषणा की थी कि हितधारकों के आग्रह पर इस सीमा को 5000 रुपए तक बढ़ा दिया गया है।

12 विपक्षी दलों ने लिखा पीएम मोदी को पत्र, उठाई बेरोजगारी भत्ते, फ्री कोरोना वैक्सीन-राशन की मांग

नई दिल्ली । कोरोना संकट के बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को 12 विपक्षी दलों ने एक पत्र लिखा है. इसमें कोरोना की वजह से आम लोगों को जो परेशानियां हो रही हैं उनका जिक्र करते हुए कुछ मांगें रखी गई हैं. इसमें बेरोजगारों को भत्ता, जरूरतमंदों को मुफ्त अनाज देने की मांग उठाई गई है. इसके अलावा कोरोना टीके और सेंट्रल विस्टा प्रोजेक्ट का भी इस पत्र में जिक्र है. 12 प्रमुख विपक्षी दलों के नेताओं में कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी और पूर्व प्रधानमंत्री एचडी देवगौड़ा की पार्टी भी शामिल है.

12 विपक्षी पार्टियों की तरफ से पीएम मोदी को जो पत्र लिखा गया है कि उसमें सभी बेरोजगार लोगों को छह हजार रुपये प्रति महीने देने की मांग की गई है. आगे लिखा है कि जरूरतमंदों को निऱ्शुल्क अनाज उपलब्ध कराया जाए. इसके अलावा विपक्षी दलों के नेताओं ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पत्र लिखकर निऱ्शुल्क व्यापक कोविड रोधी टीकाकरण करने, सेंट्रल विस्टा परियोजना को रोकने की मांग की है.

पत्र लिखने वालों में सोनिया गांधी, एचडी देवगौड़ा भी शामिल

कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी और पूर्व प्रधानमंत्री एचडी देवगौड़ा समेत 12 प्रमुख विपक्षी दलों के नेताओं ने कोरोना महामारी की गंभीर स्थिति को लेकर चिंता जताई है. पत्र में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से आग्रह किया कि केंद्र सरकार वैश्विक एवं घरेलू स्तर के सभी स्रोतों से टीकों की खरीद करे तथा देश के सभी नागरिकों को मुफ्त में टीका लगाया जाए.

प्रधानमंत्री को लिखे पत्र में इन नेताओं ने सभी देशवासियों को मुफ्त में टीका लगाने की व्यवस्था करने, सेंट्रल विस्टा परियोजना को रोककर इसका पैसा टीकाकरण के लिए इस्तेमाल करने, तीनों कृषि कानूनों को निरस्त करने, 'पीएम केयर्स' कोष की पूरी राशि का इस्तेमाल जरूरी चिकित्सा उपकरणों की खरीद के लिए करने और सभी बेरोजगार लोगों को प्रति माह 6,000 रुपये प्रदान की मांग भी की है.

पीएम को पत्र लिखने वालों में कौन-कौन से दल शामिल

कांग्रेस की तरफ से सोनिया और जनता दल (एस) की तरफ से देवगौड़ा के अलावा राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के प्रमुख शरद पवार, शिवसेना प्रमुख एवं महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे, तृणमूल कांग्रेस की प्रमुख और पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी, द्रमुक नेता और तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन तथा झारखंड मुक्ति मोर्चा के नेता एवं झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने यह पत्र लिखा है.

इनके अलावा समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव, नेशनल कॉन्फ्रेंस के नेता फारूक अब्दुल्ला, भाकपा महासचिव डी राजा और माकपा महासचिव सीताराम येचुरी भी यह साझा पत्र भेजने वाले नेताओं में शामिल हैं.

चुनाव के बाद हुई हिंसा के डर से बंगाल से असम भागे लोगों से मिलने जाएंगे गवर्नर जगदीप धनखड़

कोलकाता । पश्चिम बंगाल में चुनाव के बाद हुई हिंसा के डर से राज्य से पलायन कर असम गए लोगों से गवर्नर जगदीप धनखड़ मुलाकात करने जाएंगे। राजभवन की ओर से बयान जारी कर यह बात कही गई है। बयान में कहा गया है, गवर्नर जगदीप धनखड़ असम के रंगपाली और श्रीरामपुर में स्थित कैंपों में जाएंगे। वह 14 मई को जाकर लोगों से मुलाकात करेंगे। चुनाव के बाद हुई हिंसा के चलते कुछ लोगों ने बंगाल से असम में जाकर शरण ले ली थी। इससे पहले पश्चिम बंगाल के गवर्नर ने सीएम ममता बनर्जी की शपथ के दिन राज्य में हिंसा को लेकर चेतावनी भी दी थी। उन्होंने कहा था कि राज्य सरकार को कानून व्यवस्था की स्थिति को बेहतर बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए।

चुनाव के बाद हुई हिंसा को लेकर हेमंत बिस्वा सरमा ने कहा था कि राज्य में 300 से 400 बीजेपी कार्यकर्ताओं ने शरण ली है। असम के सीएम ने कहा था, बंगाल से 300 से 400 बीजेपी कार्यकर्ताओं ने असम में परिवार सहित पलायन किया है। राज्य की सीमा को पार करके ये लोग आए हैं और असम में शरण ली है। सरमा ने कहा था कि असम सरकार की ओर से बंगाल से आए लोगों के लिए खाने और शरण की व्यवस्था की जा रही है। इस बीच ममता बनर्जी ने केंद्रीय दलित आयोग से अपने बंगाल दौरे को रद्द करने के लिए कहा है। आयोग को चुनाव के बाद हुई हिंसा के दौरान दलितों पर अत्याचार के मामलों की जांच के लिए दौरा करना था। सरकार ने इसके लिए कोरोना प्रोटोकॉल का हवाला दिया है। पश्चिम बंगाल सरकार ने सोमवार को कोलकाता हाईकोर्ट में यह भी कहा कि 8 मई के बाद से राज्य में हिंसा का कोई मामला सामने नहीं आया है। वहीं एनसीएससी का दावा है कि उसे 2 मई से अब तक राज्य में दलितों पर हो रहे जुल्म को लेकर कई शिकायती चिट्ठियां मिली हैं। बंगाल सरकार का कहना है कि हमारी प्राथमिकता फिलहाल कोरोना से लड़ना है और राज्य में रोजगार का सृजन करना है।

चुनाव के बाद भी बंगाल में जारी है राजनीति- एनसीएससी पिछड़े वर्ग को शोषण से बचाने के लिए बनाई गई संवैधानिक संस्था है। बता दें कि चुनाव के बाद भी पश्चिम बंगाल में राजनीति का दौर जारी है। चुनाव नतीजों के बाद ही राज्य में हिंसा शुरू हो गई थी। नंदीग्राम समेत कई इलाकों में बीजेपी ने कार्यकर्ताओं पर हमलों का आरोप लगाया था।

सितंबर तक हर महीने कोवैक्सीन के तैयार होंगे 10 करोड़ डोज- सरकार

नई दिल्ली। देश में कोरोना वायरस की दूसरी लहर के प्रकोप के बीच केंद्र सरकार कोविड-19 के टीकों का उत्पादन बढ़ाने की तैयारी कर रही है। साइंस एंड टेक्नोलॉजी मंत्रालय ने बयान जारी कर कहा है कि भारत में स्वदेशी वैक्सीन के उत्पादन में तेजी लाने के लिए, सरकार बायटेक्नोलॉजी डिपार्टमेंट के तहत, वैक्सीन निर्माताओं को आर्थिक मदद दे रही है। इसके तहत, कोवैक्सीन की उत्पादन क्षमता मई-जून तक डबल होने की संभावना है। वहीं, सितंबर 2021 तक हर महीने कोवैक्सीन के 10 करोड़ डोज तैयार होंगे।

बता दें कि बुलंदशहर के चोला क्षेत्र में स्थित भारत इम्यूनोजिकल एंड बायोलॉजिकल लिमिटेड (बिबकोल) में भी कोवैक्सीन का उत्पादन किया जाएगा। बिबकोल कंपनी में कोवैक्सीन बनाने को लेकर केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने हरी झंडी दे दी है। कंपनी को कोवैक्सीन बनाने के लिए स्वास्थ्य मंत्रालय ने 30 करोड़ रुपये का बजट भी स्वीकृत कर दिया है।

वहीं कोवैक्सीन बनाने वाली कंपनी भारत बायोटैक और बिबकोल के बीच एमओयू भी साईन हो गया है। रिपोर्ट के अनुसार अगस्त-सितंबर माह से बुलंदशहर में कोवैक्सीन का उत्पादन शुरू हो जाएगा और यहां हर माह 2 करोड़ डोज तैयार की जाएंगी। फिलहाल कंपनी की तकनीकी टीम कोवैक्सीन तैयार करने के लिए जरूरी संसाधन जुटाने में लगी है।

बिबकोल कंपनी में अभी तक पोलियो की वैक्सीन बनाई जाती है। आरके शुक्ला, वाइस प्रेसिडेंट बिबकोल ने इस खबर की पुष्टि की। उन्होंने एक अखबार से बातचीत में बताया कि केंद्र सरकार से उनकी कंपनी में कोवैक्सीन बनाने की स्वीकृति के साथ 30 करोड़ रुपये का बजट स्वीकृत हो गया है। कंपनी में 10 मिलियन डोज प्रतिमाह कोवैक्सीन बनेगी।

कोरोना कहर के बीच सामने आई नई मुसीबत, ब्लैक फंगस से निपटने के लिए सरकार ने कसी कमर,

नई दिल्ली । कोरोना से जूझ रही केंद्र सरकार ने अब नई बीमारी म्यूकरमाइकोसिस यानी ब्लैक फंगस से निपटने के लिए कमर कस ली है। दरअसल दुर्लभ किस्म की यह बीमारी कोरोना से उबरे मरीजों में तेजी से पनप रही है। शुरुआती मामले गुजरात और राजस्थान में सामने आए हैं। लेकिन उत्तर भारत में भी अब इसका प्रकोप दिखने लगा है। इस बीमारी से अंधेपन का खतरा रहता। अब तक कई लोग आंखों की रोशनी खो चुके हैं। इसकी दवाएं और इंजेक्शन महंगे होते हैं।

इन राज्यों में तेजी से फैल रहा ब्लैक फंगस – कोरोना से रिकवर हो चुके कई लोगों के लिए यह दुर्लभ संक्रमण जानलेवा साबित हो रहा है। मध्य प्रदेश के जबलपुर से महाराष्ट्र के ठाणे तक में इस वजह से लोगों को जान गंवानी पड़ी है तो देश के कई हिस्सों में इसके मरीज मिल रहे हैं। सोमवार को ओडिशा में इसका पहला केस मिला तो दिल्ली, गुजरात, उत्तर प्रदेश और राजस्थान में भी नए केस मिले हैं। दिल्ली एम्स में भी ब्लैक फंगस मरीजों के लिए अलग वार्ड बनाया गया है।

ब्लैक फंगस के मरीजों के लिए दवाओं की किल्लत न हो इसके लिए सरकार ने दवा निर्माता कंपनियों से उत्पादन बढ़ाने को कहा है। रसायन एवं उवर्रक मंत्रालय की ओर से जारी बयान के अनुसार म्यूकर फंगस (काली फफूंद) के कारण होने वाली इस बीमारी से साइनस, दिमाग, आंख और फेफड़ों पर बुरा असर पड़ता है। अंधे होने के साथ मरीज की मौत होने की आशंका भी रहती है।

एंफोटेरिसिन बी दवा की मांग बढ़ी- बयान के अनुसार कुछ राज्यों में काली फंगस का प्रकोप बढ़ने से एंफोटेरिसिन बी दवा (इंजेक्शन) की मांग बढ़ गई है। इस मरीज से पीड़ित लोगों के लिए डाक्टर यही दवा लिख रहे हैं। सरकार इस दवा की पर्याप्त उपलब्धता बना रखने के लिए निर्माताओं से इसका उत्पादन बढ़ाने के लिए चर्चा करने के साथ इसका आयात भी करने जा रही है।

बयान के अनुसार सरकार ने 11 मई को देश में एंफोटेरिसिन बी के स्टाक और संभावित आपूर्ति का जायजा लेकर राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के लिए कोटा आवंटित कर दिया है। राज्यों को 10 मई से लेकर 31 मई तक दवा उपलब्ध कराई जाती रहेगी।

राज्यों से किया गया अनुरोध

राज्यों से अनुरोध किया गया है कि वे सरकारी और निजी अस्पतालों और स्वास्थ्य देखभाल एजेंसियों के बीच आपूर्ति के समान वितरण के लिए एक तंत्र स्थापित करें। राज्यों से इस आवंटन से दवा प्राप्त करने के लिए निजी और सरकारी अस्पतालों के लिए प्वाइंट आफ कांटैक्ट का प्रचार करने का भी अनुरोध किया गया है। बयान में कहा कि आपूर्ति की व्यवस्था की निगरानी राष्ट्रीय औषधि मूल्य निर्धारण प्राधिकरण (एनपीपीए) द्वारा की जाएगी।

भारतीय चिकित्सा विज्ञान परिषद (आईसीएमआर) के मुताबिक, म्यूकर माइकोसिस एक तरह का दुर्लभ फंगल इंफेक्शन है जो शरीर में बहुत तेजी से फैलता है। यह संक्रमण मस्तिष्क, फेफड़े और त्वचा पर भी असर कर रहा है। इस बीमारी में कई के आंखों की रौशनी चली जाती है वहीं कुछ मरीजों के जबड़े और नाक की हड्डी गल जाती है। अगर समय रहते इलाज न मिले तो मरीज की मौत हो सकती है।

KPCC के अध्यक्ष डी के शिवकुमार, विधानसभा में विपक्ष के नेता सिद्धारमैया और अन्य वरिष्ठ नेताओं और विधायकों ने बेंगलुरु में मुफ्त टीकाकरण, मुफ्त भोजन किट और विशेष पैकेज की मांग के लिए विरोध प्रदर्शन किया।

सऊदी अरब में दफनाए गए हिंदू व्यक्ति का अवशेष भारत लाया गया

नईदिल्ली, (एजेंसी)। केंद्र ने सऊदी अरब में गलती से दफनाए गए हिन्दू व्यक्ति का अवशेष भारत पहुंचने तथा उनके परिवार को सौंप दिए जाने की जानकारी बुधवार को दिल्ली हाईकोर्ट को दी। विदेश मंत्रालय की ओर से निदेशक (सीपीवी डिवीजन) विष्णु शर्मा ने जस्टिस प्रतिभा एम सिंह की एकलपीठ को यह जानकारी दी। उन्होंने न्यायालय को बताया कि मृतक का अवशेष आज सुबह भारत पहुंच गया है और उसे परिवार को सौंपने के बाद उनके हिमाचल प्रदेश में गृह नगर ऊना पहुंचा दिया गया है। कोर्ट ने इस मामले में सऊदी अरब के अधिकारियों का आभार जताया। कोर्ट मृतक संजीव कुमार के अंतिम संस्कार के लिए उनके अवशेषों की मांग को लेकर उनकी विधवा की ओर से प्रस्तुत याचिका की सुनवाई कर रही थी। कोरोना संक्रमित होने के बावजूद अस्पताल के बेड से ही मामले की वर्चुअल सुनवाई में शामिल याचिकाकर्ता के वकील सुभाष चंद्रन ने भी संतोष व्यक्त किया है। मृतक की पत्नी अंजू शर्मा ने अपनी याचिका में कहा था कि 23 साल से सऊदी अरब में काम कर रहे संजीव कुमार मधुमेह एवं उच्च रक्तचाप से पीड़ित थे और गत 24 जनवरी को ह्दयघात से निधन हो गया

हिमाचल के कई हिस्सों में जोरदार बारिश, तूफान और ओलावृष्टि

शिमला, (एजेंसी)। हिमाचल प्रदेश में ताजा पश्चिमी विक्षोभ के चलते मौसम का आज विकराल रूप देखने को मिला। अचानक आए मौसम के बदलाव से कई जगहों पर जोरदार बारिश और तूफान के साथ ओलावृष्टि हुई। राजधानी शिमला समेत कांगड़ा जिले के कई इलाकों में जोरदार बारिश और तूफान जारी है।

मौसम विज्ञान केंद्र शिमला के निदेशक डॉ मनमोहन सिंह ने बताया कि 13 मई तक बारिश, ओलावृष्टि और तेज हवाओं का ओरेंज अलर्ट जारी किया गया है।

पशिचम बंगाल विधानसभा में दो भाजपा विधायकों का इस्तीफा

कोलकाता, (एजेंसी)। प. बंगाल में विधान सभा चुनाव जीतने के बाद बीजेपी के दो सांसदों ने विधायकी से इस्तीफा दे दिया है दोनों सांसद जगन्नाथ सरकार और निशीथ प्रामाणिक ने अपना इस्तीफा सौंप दिया। राणाघाट से सांसद जगन्नाथ सरकार और कूच बिहार से सांसद प्रमाणिक ने विधानसभा जाकर विधानसभा अध्यक्ष बिमान बनर्जी को अपना त्यागपत्र सौंपा।

एमएलए की संख्या 77 से घटकर हुई 75

प्रमाणिक ने कहा कि बीजेपी नेतृत्व के निर्देश पर वे विधायक पद से इस्तीफा दे रहे हैं। भाजपा ने प. बंगाल विधानसभा चुनाव में दो अन्य लोकसभा सांसदों बाबुल सुप्रियो और लॉकेट चटर्जी के अलावा राज्यसभा सांसद स्वप्न दासगुप्ता को भी मैदान में उतारा था। हालांकि, वे चुनाव हार गए। जगन्नाथ सरकार ने कहा कि बीजेपी ने पिछले विधानसभा चुनाव में मिली तीन सीटों से काफी अच्छा प्रदर्शन करते हुए इस बार 77 सीटों पर जीत दर्ज की। सरकार संचालन में अनुभवी लोगों को जोड़ने के लिए कुछ सांसदों को भी विधानसभा चुनाव मैदान में उतारा गया था।

बंगाल के 28 फीसदी मंत्रियों के खिलाफ आपराधिक मामले

प. बंगाल के करीब तीन चौथाई मंत्री करोड़पति हैं, जबकि 28 फीसदी मंत्रियों ने माना कि उनके खिलाफ आपराधिक मामले हैं। एनजीओ एडीआर के विश्लेषण में यह तथ्य सामने आए हैं। एडीआर ने मुख्यमंत्री समेत 44 में से 43 मंत्रियों के ब्यौरे का विश्लेषण किया है। इनमें नौ महिला मंत्री हैं।

प्रशासन ने यूपी में लगाया महाजाल, फंसे आठ शव

सोती रही गाजीपुर पुलिस

बक्सर ■ एजेंसी

बिहार के बक्सर जिले में प्रशासन ने नदी में बहकर आ रही लाशों को लेकर होने वाली बदनामी के दाग को धोने के लिए एक गुप्त अभियान चलाया। बक्सर जिला प्रशासन ने उत्तर प्रदेश की सीमा में घुसकर पता लगाया कि गाजीपुर के बारे थाना क्षेत्र से लाशों को गंगा में प्रवाहित किया जाता है।फिर वे लाशें महदेवा घाट सहित बक्सर जिले में आकर फैल जाती हैं। इसके लिए बक्सर प्रशासन ने नदी पर एक महाजाल लगाया है। जिसमें पहले दिन ही आठ शव मिले हैं।

बक्सर के जिलाधिकारी ने इस गुप्त अभियान के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि अगर हम चौसा में लाश डालते हैं तो लाशें चार-पांच दिन बाद दूर कई किलोमीटर जाकर निकलेंगी। मंगलवार हमारी टीम गाजीपुर ऑफ स्ट्रीम गई। जहां टीम ने देखा कि लोग गंगा में लाश डाल रहे हैं।ये काफी गंभीर विषय है।हम लोगों ने गंगा नदी पर महाजाल लगाया है। क्योंकि हम ये देखना चाहते थे कि कितनी लाशें बहकर आ रही हैं। बुधवार को माहजाल से आठ लाशें मिली हैं। दरअसल, बक्सर जिले में जब से लाशें मिलने का मामला सामने आया था, तभी से बक्सर सहित बिहार पर कई सवाल खड़े हो गए थे।ऐसे में जिला प्रशासन की टीम रात के अंधेरे में बिहार से उत्तर प्रदेश की सीमा में गई और वहां एक मल्लाह को पकड़ा, जो लाशों को यूपी के बारे थाना की पुलिस के कहने पर गंगा में प्रवाहित कर रहा था।बक्सर प्रशासन की टीम ने उसका एक वीडियो बनाया और बतौर सबूत इसे जारी किया।ताकि सच्चाई सबके सामने लाई जा सके।

बिहार के बक्सर जिला प्रशासन ने अपने सीक्रेट ऑपरेशन को यूपी के गाजीपुर जिले में किसी सर्जिकल स्ट्राइक की तरह अंजाम दिया। इसके बाद अब उत्तर प्रदेश पुलिस सवालों के घेरे में आ गई है। और ये सवाल भी उठ रहा है कि जो लाशें बक्सर के महादेव घाट पर मिली थीं, क्या वे यूपी से आई थीं? क्योंकि उनकी वजह से बिहार का नाम बदनाम हुआ है।

सच्चाई सामने सरकार का दावा अप्रैल में रिटेल महंगाई दर मार्च से काफी कम

महंगाई तोड़ रही आम आदमी की कमर

नई दिल्ली ■ एजेंसी

देश में इस समय महंगाई आम आदमी की कमर तोड़ रही है, लेकिन सरकार का दावा है कि मार्च के मुकाबले अप्रैल महीने में रिटेल महंगाई में कमी दर्ज की गई है। बुधवार को जारी आंकड़ों के मुताबिक अप्रैल महीने में रिटेल मंहगाई गिरकर 4.29 फीसदी पर आ गई जबकि मार्च महीने में यह 5.52 फीसदी दर्ज की गई थी। सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय ने ये आंकड़े जारी किए हैं। सरकार के बुधवार को यह जारी आंकड़ों में बताया गया है कि कोरोना महामारी के कारण लगे लॉकडाउन की वजह से बाजार में ग्राहकी कम है और आवक जारी है। इससे मूल खुदरा मूल्यों में गिरावट आ रही है।आंकड़ों के अनुसार अप्रैल 2021 में खुदरा मुद्रास्फीति की दर 4.29 प्रतिशत रह गई है। मार्च 2021 में यह आंकड़ा 5.52 प्रतिशत रहा था।

अप्रैल 2021 में मोटे अनाज की खुदरा कीमतों में 2.96 प्रतिशत, दूध में 0.13 प्रतिशत, साग सब्जी में 14.18 प्रतिशत और चीनी में 5.99 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई है। इसी माह में मांस मछली की खुदरा कीमतों में 16.68 प्रतिशत, अंडा में 10.55 प्रतिशत, तेल- वसा में 25.91 प्रतिशत, फल में 9.81 प्रतिशत, दाल में 7.51 प्रतिशत, मसाले में 4.33 प्रतिशत, तैयार आहार में चार प्रतिशत और ईंधन में 7.91 प्रतिशत वृद्धि दर्ज की गई है।

हमास के हमले में 3 महिलाओं की मौत, इजरायल की जवाबी कार्रवाई में 10 बच्चों समेत 32 चरमपंथी मारे गए

येरुशलम, (एजेंसी)। इजरायल ने मंगलवार को गाजा पट्टी स्थित दो बहुमंजिला इमारतों को निशाना बनाते हुए तीन चरमपंथियों को मार गिराया। इन इमारतों का इस्तेमाल हमास के चरमपंथी करते थे। दूसरी ओर, फिलस्तीन की ओर से इजरायल पर लगातार रॉकेट से हमले किए गए। जवाबी कार्रवाई में फिलिस्तीन के 32 लोगों की मौतें हुई हैं, जबकि अनेक लोग घायल हुए हैं। दोनों के बीच 2014 के बाद यह सबसे बड़ी लड़ाई है और फिलहाल इसके खत्म होने के आसार नहीं दिख रहे हैं। इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने हमले तेज करने की बात कही है, जबकि गाजा के चरमपंथियों ने देर रात तक रॉकेट दागे जिससे घनी आबादी वाले तेल अवीव इलाके में विस्फोटों की आवाज सुनाई देती रही। फिलिस्तीनी आतंकवादी समूह हमास ने बुधवार को कहा कि उसने गाजा में एक टॉवर ब्लॉक पर हमले की जवाबी कार्रवाई में इजरायल में 200 से अधिक रॉकेट दागे। हमास की सशस्त्र शाखा ने एक बयान में कहा कि यह तेल अवीव शहर की ओर 110 रॉकेट दागे जाने की प्रक्रिया में जवाब था। इजरायल ने तेल अवीव के पास स्थित अपने शहर लोड में दंगे के बाद इमरजेंसी घोषित कर दी है। लोड में कारों को जला दिया गया है। विरोध प्रदर्शन के दौरान हुई झड़पों में 12 लोग घायल हुए हैं। शहर के मेयर का कहना है कि शहर में गृहयुद्ध की स्थिति पैदा हो गई है। इजरायली स्वास्थ्य मंत्रालय ने बताया कि रॉकेट हमले में इजरायल में तीन महिलाओं की मौत हो गई और दर्जनों लोग घायल हुए हैं। मारी गई महिलाओं में एक भारतीय महिला भी शामिल है। केरल के इडुक्की जिले की वाली सौम्या संतोष (30) इजरायल के अशकेलॉन तटीय शहर के एक घर में एक बुजुर्ग महिला की देखभाल का काम करती थी। गाजा पट्टी की सीमा से लगे अशकेलॉन में फिलीस्तीनी चरमपंथियों ने हमला किया, जिसकी चपेट में वह घर आ गया जहां वह काम करती थीं। फिलस्तीनी चरमपंथियों के हमले में मारी गई भारतीय महिला पिछले सात साल से इजरायल में रह रही थीं और उनका एक नौ साल का बेटा भी है, जो उनके पति के पास केरल में रहता है। भारतीय महिला जिस 80 वर्षीय बुजुर्ग महिला की देखभाल करती थी, वह घर पर गिरे रॉकेट के विस्फोट में गंभीर रूप से घायल हुई हैं। उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया है। रॉकेट हमले की स्थिति में रक्षा के लिए बनाया गया आश्रय स्थल महिला के घर से एक मिनट की दूरी पर है, लेकिन वे समय पर वहां नहीं पहुंच सकीं। इजरायली हमले में गाजा में 10 बच्चों समेत 32 फलस्तीनियों की मौत हुई है और 200 से अधिक लोग घायल हुए हैं। इजरायल और हमास के बीच यह लड़ाई 2014 की गर्मियों में 50 दिन तक चले युद्ध से ज्यादा भयंकर है। येरुशलम में धार्मिक तनाव से पैदा हुई यह हिंसा विध्वंसक युद्ध की याद दिलाती है। गाजा में दिन भर इजरायली हवाई हमलों की आवाज सुनी गई और जिन इमारतों को निशाना बनाया गया, वहां से धुएं का गुबार उठता देखा गया। राष्ट्रीय टेलीविजन पर प्रसारित भाषण में नेतन्याहू ने कहा कि हमास और छोटे इस्लामिक जिहादी चरमपंथी समूहों ने बड़ी कीमत चुकाई है। उन्हें अपनी आक्रामकता के लिए भारी कीमत चुकानी पड़ेगी। उन्होंने दावा किया कि इजरायल ने दर्जनों चरमपंथियों को मार गिराया और उनके सैकड़ों ठिकानों को नष्ट कर दिया।

फिलस्तीन के गाजा शहर में इजरायली हवाई हमले के बाद उठता हुआ धुआं।

नेपाल की राजधानी काठमांडू में एक कोरोना संक्रमित महिला को अस्पताल के गलियारे में ही ऑक्सीजन लगाया गया।

आईएसआईएस केवल एक क्षेत्रीय आतंकवादी संगठन नहीं, बल्कि एक वैश्विक गिरोह है : भारत

जेनेवा, (एजेंसी)। भारत ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में कहा कि इस्लामिक स्टेट केवल एक क्षेत्रीय आतंकवादी संगठन नहीं है बल्कि एक वैश्विक गिरोह है, जिससे संबद्ध संगठन दुनिया भर में सक्रिय हैं। इसलिए, इस्लामिक स्टेट को सिर्फ एक क्षेत्रीय आतंकवादी संगठन के रूप में नहीं देखा जा सकता है। जिसके हमारे पड़ोस सहित दुनिया भर में संबद्ध आतंकवादी संगठन हैं।संयुक्त राष्ट्र में भारत के उप स्थायी प्रतिनिधि-राजनीतिक समन्वयक आर रविंदर ने कहा कि आतंकवादी कृत्यों की जवाबदेही तय करने और आंतकवाद का समर्थन करने वाले देशों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने से ही इस संकट के खिलाफ वैश्विक लड़ाई की विश्वसनीयता को मजबूत किया जा सकता है।

डाएश, आईएसआईएल (यूएनआईटीएडी) के अपराधों की जवाबदेही तय करने के लिए बने जांच दल पर आयोजित सुरक्षा परिषद की बैठक में उन्होंने कहा, इराक और लेवंत में आईएसआईएल ने लोगों पर अमानवीय अत्याचार किए हैं। आईएसआईएल के भयावह अपराधों का 39 भारतीय नागरिक भी शिकार हुए हैं। आईएसआईएल को आईएसआईएस (इस्लामिक स्टेट ऑफ इराक एंड सीरिया) भी कहा जाता है, यह हिंसक विचारधारा वाला एक जिहादी समूह है जो खुद को खलीफा कहता है और सभी मुसलमानों पर धार्मिक अधिकार का दावा करता है। रविंदर ने कहा कि आईएसआईएल ने इराक और सीरिया में अपने नियंत्रण वाले क्षेत्र में नरसंहार, अत्याचार, बलात्कार, गुलामी कराने और अपहरण जैसे कृत्यों को अंजाम दिया। रविंदर ने इस बात पर जोर दिया कि भारत का यह मानना है कि आतंकवाद के खिलाफ हमारी संयुक्त लड़ाई की विश्वसनीयता केवल आतंकवादियों द्वारा अंजाम दिए भयावह एवं अमानवीय कृत्यों की जवाबदेही तय करके और उन देशों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करके ही मजबूत हो सकती है, जो इन्हें बढ़ावा दे रहे हैं। वहीं, इराक और लेवंत में इस्लामिक स्टेट द्वारा अंजाम दिए जाने वाले अपराधों की जवाबदेही तय करने वाले संयुक्त राष्ट्र के जांच दल के प्रमुख एवं विशेष सलाहकार करीम असद अहमद खान ने परिषद से कहा कि अपनी स्वतंत्र आपराधिक जांच के आधार पर, यूएनआईटीएडी के पास आईएसअईएल द्वारा यजीदी के खिलाफ एक धार्मिक समूह के रूप में नरसंहार करने के स्पष्ट एवं पुख्ता सबूत हैं। रविंदर ने कहा कि आईएसआईएल से संबद्ध आतंकवादियों तथा आतंकवादी संगठनों ने मानवता के खिलाफ भयावह अपराधों को अंजाम दिया है। उन्होंने कहा कि आईएसआईएल द्वारा जिन अपराधों को अंजाम दिया गया है, उसकी जवाबदेही तय करना इराक में दीर्घकालीक शांति हासिल करने के लिए भी महत्वपूर्ण है।

सिंगापुर में भारतीय नागरिक और भारतीय मूल के सिंगापुरी नागरिक पर आरोप तय

सिंगापुर, (एजेंसी)। एक अपार्टमेंट के निरीक्षण को लेकर अनधिकृत रूप से जानकारी देने के मामले में 22 वर्षीय भारतीय नागरिक और भारतीय मूल के एक सिंगापुरी नागरिक पर अदालत ने सरकारी गोपनीयता कानून के तहत बुधवार को आरोप तय किए। भ्रष्ट आचरण जांच ब्यूरो (सीपीआईबी) ने बताया कि दमनदीप सिंह ने इस बात के उचित आधार होने पर भी कथित तौर पर जानकारी प्राप्त की कि उस सरकारी गोपनीयता कानून के खिलाफ जाकर सूचना दी जा रही है। उसे सार्वजनिक क्षेत्र के हाउसिंग एंड डेवलपमेंट बोर्ड (एचडीबी) में कार्यरत भारतीय मूल के उच्च संपदा अधिकारी कलयरासन करुप्पया से सूचना मिली थी। सिंगापुरी नागरिक ने केंद्रीय कारोबारी जिले से कुछ दूरी पर स्थित किम टियान रोड पर एक फ्लैट के आसन्न निरीक्षण की जानकारी फ्लैट के पंजीकृत किराएदार सिंह को कथित तौर पर लीक की।

ऑर्गन ट्रांसप्लांट करवा रहे लोग कोरोना से ज्यादा रहें सावधान

लंदन, (एजेंसी)। दुनियाभर में जो लोग ओर्गन ट्रांसप्लांट करवा रहे हैं, उन्हें ज्यादा सावधान रहने की आवश्यकता है। क्योंकि वैक्सीन की दोनों खुराक लेने के बाद आपको कोरोना हो सकता है। जॉन्स हॉपकिंस के शोधकताओं ने पाया है कि सोर्स-सीओवी-2 के खिलाफ वैक्सीन की दो खुराक जो वायरस रोकने मदद कर रही थीवहीं ठीक ओर्गन ट्रांसप्लांट भी कोरोना को रोकने इसतरह सहायक रहा है। लेकिन अब ये साधन भी कोरोना को नहीं रोक पा रहे हैं। शोधकताओं ने बताया कि भाग लेने वाले ओर्गन ट्रांसप्लांट रिसीवर में से केवल 17 प्रतिशत लोगों ने दो-खुराक कोविड-19 वैक्सीन कैमिन की केवल एक खुराक के बाद पर्याप्त एंटीबॉडी का उत्पादन किया। दूसरी खुराक लेने के बाद,एंटीबॉडी वाले लोगों में वृद्धि हुई कुल मिलाकर 54 प्रतिशत रही। हमारे दूसरे अध्ययन में ऑर्गन ट्रांसप्लांट रिसीवर की संख्या जिनके एंटीबॉडी स्तर एसएआरएस-सीओवी-2 संक्रमण को दूर करने के लिए उच्च स्तर तक पहुंच गए थे। शोधकर्ता कहते हैं, जो आमतौर पर मजबूत इम्यून सिस्टम वाले लोगों में देखा जाता है। हमारे निष्कर्षों के आधार पर, हम सुझाव देते हैं कि ओर्गन ट्रांसप्लांट रिसीवर और अन्य इम्यूनो कॉम्प्रोमाइज रोगियों को टीकाकरण के बाद भी, कोविड -19 से सुरक्षित रहने के लिए एक अच्छी देखरेख की जरूरत है। जो लोग ठोस ओर्गन ट्रांसप्लांट (जैसे दिल, फेफड़े और गुर्दे) रिसीवर हैं, उन्हें अक्सर अपनी इम्यून सिस्टम पड़ प्रभाव को रोकने के लिए ड्रग्स लेना चाहिए।

अध्ययन ने इम्यूनोजेनिक प्रक्रिया का मूल्यांकन किया है, मेसेंजर आरएनए (एमआरएनए) टीके ये आधुनिक और फाइजर-बायोएनटेक द्वारा तैयार किए गया है,658 ओर्गन ट्रांसप्लांट रिसीवर के लिए, जिनमें से किसी के पास कोविड-19 का पहले इलाज नहीं था। प्रतिभागियों ने 16 दिसंबर, 2020 और 13 मार्च, 2021 के बीच अपनी दोनों खुराक को बना लियाहाल ही के अध्ययन में, शोधकताओं ने पाया कि 658 अध्ययन प्रतिभागियों में से केवल 98 झ15 प्रतिशत ने पहले टीके की खुराक के बाद 21 दिनों में एसएआरएस-सीओवी-2 का पता लगाया था। ये मार्च के अध्ययन में रिपोर्ट किया गया कि 17 प्रतिशत की तुलना में केवल एक वैक्सीन खुराक से इम्यून सिस्टम में असर दिखाई दियादूसरी खुराक के बाद 29 दिनों में, डिटेक्टिव एंटीबॉडी वाले प्रतिभागियों की संख्या 658 में से 357 हो गई जो 54 प्रतिशत थी। दोनों टीकों की खुराक दी जाने के बाद, 658 में से 301 प्रतिभागियों यानी 46 प्रतिशत का कोई पता लगाने योग्य एंटीबॉडी नहीं था, जबकि 259 39 प्रतिशत केवल दूसरे शॉट के बाद एंटीबॉडी का उत्पादन कर रहे थे। शोधकताओं ने पाया कि प्रतिभागियों के बीच, एंटीबॉडी प्रतिक्रिया विकसित करने की सबसे अधिक संभावना थी, उन्होंने एंटी-मेटाबोलाइट दवाओं सहित इम्यूनोसप्रेस्सिव रेजिमेंस नहीं लिया और मॉडर्न टीका प्राप्त किया। ये मार्च के एकल-खुराक अध्ययन में देखे गए संघों के समान थे। अंग प्रत्यारोपण में सर्जरी और महामारी विज्ञान के प्रोफेसर और महामारी विज्ञान अनुसंधान समूह के निदेशक ने कहा कि इन टिप्पणियों को देखते हुए, ओर्गन ट्रांसप्लांट रिसीवर को ये नहीं मान लेना चाहिए कि दो वैक्सीन की खुराक कोरोना से लड़ने के लिए इम्युनिटी की गारंटी देते हैं, ये सिर्फ पहली खुराक से ज्यादा असरदार है। कोवि-19 वैक्सीन का लोगों में देखते हुए डॉक्टर का कहना है कि भविष्य में इन अध्ययनों से इन वैक्सीन सुधार करना चाहिए जैसे इसमें अतिरिक्त बूस्टर खुराक या इम्यूनोसप्रेसेरिव दवाओं के उपयोग करना चाहिए ताकि हमारे शरीर को पर्याप्त एंटीबॉडी स्तर प्राप्त हो सकें।

भारतीय अमेरिकी कमला हैरिस से निराश

न्यूयॉर्क। आखिरकार अमेरिकी उपराष्ट्रपति कमला देवी हैरिस ने भारत में कोरोना तबाही पर अपनी चुप्पी तोड़ दी है। उन्होंने एक प्रभावी एशियन अमेरिकन ग्रुप में कहा कि भारत में कोविड से लगातार बढ़ती मौतें किसी सदमे से कम नहीं है। ऐसे वक्त में अमेरिका अपने मित्र के साथ मजबूती के खड़ा है। बीते 28 अप्रैल को बाइडेन प्रशासन ने भारत की 750 करोड़ से अधिक की मदद की घोषणा की थी। बाइडेन प्रशासन ने कमला हैरिस को भारतीय संबंधों को मजबूत करने के लिए अहम जिम्मेदारी दी है। फिर भी, जैसे ही कोरोना के चलते भारतीय हेल्थ सिस्टम चरमराने लगा, इस पर हैरिस और बाइडेन प्रशासन ने काफी धीमी प्रतिक्रिया दी। ऐसे में उपराष्ट्रपति की गैरमौजूदगी लोगों ने स्पष्ट रूप से महसूस की। मयो क्लीनिक में संक्रामक रोग विशेषज्ञ डॉ. प्रिया संपथकुमार कहती हैं, चित्तीस को मदद की जरूरत है।

ड्रैगन की साजिश का पर्दाफश, फर्जी अंकाऊट से कर रहा ट्वीट

ब्रुसेल्स, (एजेंसी)। वैश्विक जनमत को अपनी इच्छा से आकार देने के लिए चीन की सत्तारूढ़ कम्युनिस्ट पार्टी ने लंबी और महत्वाकांक्षी योजना के तहत नया मोर्चा खोला है। इसके तहत ट्विटर पर प्रचार के लिए वह फर्जी अकाउंट का सहारा ले रही है। लियू जियाओमिंग ने हाल ही में ब्रिटेन में चीनी राजदूत का पद छोड़ा है। चीन की ऑनलाइन मुहिम में वे कम्युनिस्ट पार्टी के सबसे सफल सेनानियों में एक रहे हैं। उन्होंने अक्टूबर 2019 में ट्विटर ज्वाइन किया था।

यहां यह जानना बहुत रोचक होगा कि बड़ी संख्या में चीनी राजनयिकों ने ट्विटर और फेसबुक पर अपना अकाउंट खोल रखा है, जबकि चीन में इन दोनों पर प्रतिबंध लगा हुआ है। ट्विटर पर अकाउंट खोलने के बाद लियू ने विस्तार से अपनी प्रोफाइल बनाई। यहां पर उनके 1,19,000 फॉलोअर्स हैं। इसके बाद वे चीन की आक्रामक विदेश नीति के प्रमुख चेहरे बन गए। अपने ट्वीट में वे चीन विरोधी पश्चिमी जगत को आक्रामक जवाब देते हैं, जिन्हें उनके समर्थक धड़ाधड़ रिट्वीट करते हैं। हालांकि, लियू और उनके सहयोगियों को ट्विटर पर मिला जन समर्थन बनावटी है।

एसोसिएटेड प्रेस और ऑक्सफोर्ड इंटरनेट इंस्टीट्यूट ने मामले में सात महीने तक गहन पड़ताल कीजिसमें पता चला कि ट्विटर पर चीन का उदय फर्जी अकाउंट के सहारे हो रहा है। फर्जी अकाउंट के द्वारा चीनी राजनयिकों और सरकारी मीडिया के ट्वीट को हजारों बार रिट्वीट कर दिया जाता है। इससे चीन का प्रचार तंत्र अपनी बात को लाखों लोगों तक पहुंचाने में कामयाब हो जाता है। कई बार तो वह बताता तक नहीं कि यह सामग्री सरकार प्रायोजित है। जून से जनवरी तक जिन अकाउंट से लियू के ट्वीट को रिट्वीट किया गया, उनमें आधे से ज्यादा वे हैं, जिन्हें नियमों के उल्लंघन के आरोप में ट्विटर ने निलंबित कर रखा है।

ड्रैगन को ढाका का करार जबाव, हमारा देश एक स्वतंत्र और संप्रभु राष्ट्र

ढाका, (एजेंसी)। बांग्लादेश के अमेरिका, भारत, जापान और ऑस्ट्रेलिया के नेतृत्व वाले क्वॉड गठबंधन में शामिल होने की अटकलों पर चीनी धमकी के बाद ढाका ने ड्रैगन के खिलाफ जोरदार पलटवार किया है। बांग्लादेश के विदेश मंत्री एके अब्दुल मोमेन ने कहा कि हमारा देश एक स्वतंत्र और संप्रभु राष्ट्र है। बांग्लादेश खुद तय करेगा कि उसकी विदेश नीति क्या होगी। उन्होंने कहा कि बांग्लादेश चीन से यह अपेक्षा नहीं की थी, और हम अपना कोई भी फैसला बांग्लादेश की जनता के हित को ध्यान में रखकर ही लेने वाले है।

मोमेन ने चीनी राजदूत ली जिमिंग की धमकी पर कहा कि उनका बयान बिना सोचे समझे दिया गया है। बांग्लादेशी विदेश मंत्री ने कहा कि चीन का किसी देश के आतंरिक मामले में हस्तक्षेप का प्रयास असामान्य है। मोमिन ने साफ किया कि अभी तक क्वॉड के किसी भी सदस्य ने बांग्लादेश से संपर्क नहीं किया हैइसके पहले चीनी राजदूत ली जिमिंगन बांग्लादेश को अमेरिका नीत क्वॉड गठबंधन में शामिल होने को लेकर आगाह कर धमकी दी थी कि ढाका के पेइचिंग विरोधी क्लब का हिस्सा बनने पर द्विपक्षीय संबंधों को भारी नुकसान होगा।

चीन के रक्षा मंत्री जनरल वेई फेंग की यात्रा के बाद बांग्लादेश में चीनी राजदूत ली जिमिंग की यह अप्रत्याशित चेतावनी सामने आई है। 27 अप्रैल को फेंग बांग्लादेश की यात्रा पर आए थे। इस दौरान उन्होंने राष्ट्रपति अब्दुल हामिद से कहा था कि पेइचिंग और ढाका को दक्षिण एशिया में सैन्य गठबंधन गठबंधन बनाने और वर्चस्ववाद कायम करने की जुगत में लगीं बाहरी शक्तियों को रोकना चाहिए। डिप्लोमेटिक कॉरेस्पोंडेंट एसोसिएशन, बांग्लादेश द्वारा आयोजित डिजिटल बैठक में ली ने कहा, बांग्लादेश के लिए चार देशों के इस छोटे से क्लब (क्वॉड) में शामिल होना निश्चित रूप से सही विचार नहीं होगा क्योंकि इससे द्विपक्षीय संबंधों को भारी नुकसान पहुंचेगा। उन्होंने कहा कि क्वॉड एक छोटा कुलीन समूह है जो चीन के खिलाफ काम कर कहा है।

इंडिस्पोरा के संस्थापक ने एनआरआई भारतीय ज्यादा से ज्यादा मदद करने की अपील की

वाशिंगटन, (एजेंसी)। सिलिकॉन वैली के उद्यमी एमआर रंगास्वामी ने भारत में कोविड-19 की ताजा लहर को अभी तक का सबसे बड़ा संकट बताकर प्रवासी समुदाय से मुश्किल घड़ी में भारतीयों की मदद करने की अपील की। गौरतलब है कि भारत में वैश्विक महामारी की दूसरी लहर का कहर जारी है, कई राज्यों के अस्तपालों में कर्मचारियों, टीकों, ऑक्सीजन, दवा और बिस्तर की कमी है।

इंडिस्पोरा के संस्थापक एमआर रंगास्वामी ने कहा,भारत अभी तक के सबसे बड़े संकट का सामना कर रहा है इसकारण, मैं आपसे अपील करता हूं कि आप भारत में अपने परिवार एवं दोस्तों की सहायता करें। रंगास्वामी की बहन की कोरोना के कारण चेन्नई में मौत हो गई थी। रंगास्वामी ने कहा कि वह अमेरिका और दुनिया के कई हिस्सों से प्रवासी समुदाय से भारत के लोगों के लिए अधिक से अधिक निधि एवं संसाधन एकत्र करने के लिए कड़ी मेहनत कर रहे हैं, जो आजादी के बाद अभी तक के सबसे बड़े जन स्वास्थ्य संकट का सामना कर रहा है।

रंगास्वामी ने एक सवाल के जवाब में कहा,यह ऐसा समय है, जब हमें अपने सामर्थ्य से अधिक देना चाहिए। प्रख्यात प्रवासी नेताओं का नेटवर्क इंडिस्पोरा अभी तक 25 लाख डॉलर एकत्र कर चुका है। सप्ताहांत में उन्होंने हेल्थ तमिलनाडु ब्रीथ कार्यक्रम में भी हिस्सा लेकर 15 लाख डॉलर एकत्र किए गए। रंगास्वामी ने कहा,परेशानी की बात यह है कि अगर भारत ने संक्रमण पर काबू नहीं पाया

तब, नेपाल, बांग्लादेश, श्रीलंका और भारत के आसपास के देशों में भी यह फैल जाएगा। इससे कई लोगों की मौत हो सकती है और आर्थिक नुकसान का सामना भी करना पड़ सकता है।

सियोल के एक बौद्ध मंदिर में प्रतिमाओं के रखरखाव के दौरान मास्क लगाये हुए लोग।

राज्यों को वैक्सीन उपलब्ध करवाने के बजाय ग्लोबल टेंडर निकालने की नसीहत देती केंद्र सरकार : सिसोदिया

नई दिल्ली, (एजेंसी)। दिल्ली के उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने राज्यों को वैक्सीन उपलब्ध करवाने में केंद्र की भाजपा सरकार के लचर रवैये पर सवाल उठाया। और राज्यों को वैक्सीन उपलब्ध करवाने के बजाय केंद्र सरकार सरकार द्वारा राज्यों को ग्लोबल टेंडर करने की नसीहत देने पर भाजपा की भर्त्सना की। उपमुख्यमंत्री ने बताया कि भाजपा कोरोना से लड़ने का नया मॉडल लेकर आई है। भाजपा के अनुसार सारे राज्य अपना ग्लोबल टेंडर निकाले और अंतरराष्ट्रीय बाजार में एक दूसरे से लड़े। उन्होंने कहा कि भाजपा ने सवाल किया है कि वैक्सीन के लिए दिल्ली ने ग्लोबल टेंडर क्यों नहीं दिया। इन्हें पता होना चाहिए कि केंद्र सरकार ने तो राज्यों के हिस्से की वैक्सीन विदेशों में बेच दी लेकिन अब अपने राज्यों को नसीहत दे रही है कि राज्य खुद से ग्लोबल टेंडर के द्वारा विदेशों से वैक्सीन खरीदे और उसकी आपूर्ति के लिए आपस में प्रतियोगिता करके लड़े। मनीष सिसोदिया ने कहा कि आज जब संकट के समय सभी राज्यों को साथ मिलकर इस महामारी से लड़ना है तो केंद्र में बैठी भाजपा राज्यों को आपस में लड़वाने पर तुली हुई है। केंद्र की भाजपा सरकार का कोरोना मैनेजमेंट मॉडल अपने राज्यों को वैक्सीन न देकर पाकिस्तान, अफगानिस्तान, बांग्लादेश और अन्य देशों को वैक्सीन उपलब्ध करवाने का है। और यदि राज्य वैक्सीन की मांग करे तो उन्हें ग्लोबल टेंडर का हवाला देकर गलाकाट प्रतियोगिता में झोंकना है ताकि राज्य आपस में लड़े और केंद्र सरकार से सवाल न करे। उपमुख्यमंत्री ने कहा कि आज केंद्र सरकार का काम सभी राज्यों को संगठित कर पूरे भारत के लिए ग्लोबल टेंडर द्वारा भारत के लिए वैक्सीन लाना है न कि राज्यों को अंतरराष्ट्रीय बाजार में वैक्सीन के लिए लड़ना छोड़ना। उन्होंने कहा कि भारत के कोरोना मैनेजमेंट की पूरी दुनिया में धज्जियां उड़ाई जा रही है, अब राज्यों को आपस में लड़वाकर केंद्र में बैठी भाजपा सरकार दोबारा ऐसा न करें। उन्होंने बताया कि अगर राज्य स्वयं वैक्सीन के लिए ग्लोबल टेंडर करेंगे तो जल्दी से वैक्सीन पाने के लिए सभी राज्य वैक्सीन अलग-अलग कीमतों पर खरीदेंगे और ज्यादा कीमत देने वाले राज्यों को पहले वैक्सीन मिलेगी इससे राज्यों में आपस में प्रतिद्वंदिता की स्थिति उत्पन्न होगी और पूरे ग्लोबल मार्केट में भारत की खिल्लियां उड़ेंगी। उपमुख्यमंत्री ने कहा कि यदि केंद्र सरकार अपने देश के युवाओं को वैक्सीन लगाने का निर्णय मार्च में लेकर विदेशों को 6.5 करोड़ वैक्सीन नहीं बेचती तो वो वैक्सीन हमारे युवाओं को लग चुकी होती लाखों ज़िंदगियां बच जाती। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार अपनी गलती मानने के बजाय रोज नए बेतुके तर्क दे रही है। कभी केंद्र सरकार झूठ बोलती है कि दिल्ली ने वैक्सीन आर्डर नहीं कि तो कभी अंतरराष्ट्रीय संबंधों का हवाला देती है। उपमुख्यमंत्री ने कहा कि अमेरिका या अन्य यूरोपीय देशों ने पहले अपने सभी नागरिकों के लिए वैक्सीन सुनिश्चित की उसके बाद कही जाकर वैक्सीन का निर्यात किया। लेकिन केंद्रीय नेतृत्व अपनी गलती स्वीकार करने, ये स्वीकार करने की वो कोरोना मैनेजमेंट में पूरी तरह फेल हो चुकी है इसके बजाय रोज नए झूठ और तर्क दे रही है। उपमुख्यमंत्री ने केंद्र सरकार से ये अपील भी की, कि केंद्र इस संकट को गंभीरता से ले और पल्स पोलियो अभियान की तरह सर्वव्यापी फ्री वैक्सीन अभियान चलाए। दिल्ली के वैक्सीनेशन अभियान पर उपमुख्यमंत्री ने बताया कि यदि दिल्ली को पर्याप्त मात्रा में वैक्सीन मिलती है तो प्रतिदिन 3 लाख वैक्सीन लगाकर दिल्ली में 3 महीने के भीतर सभी नागरिकों को वैक्सीन लगाई जा सकती है।

बालगृहों में बच्चों को अच्छी गुणवत्तायुक्त स्वास्थ्यवर्धक भोजन दिया जा रहा है : राजेन्द्र पाल गौतम

नई दिल्ली, (एजेंसी)। दिल्ली सरकार के समाज कल्याण मंत्री राजेंद्र पाल गौतम ने बालक एवं बालिकाओं के संस्कार आश्रम स्थित बाल गृह का औचक दौरा कर वहां रह रहे बच्चों को दी जा रही सभी सुविधाओं का जायजा लिया। इस दौरान उन्होंने बालगृह के रसोई घर का निरीक्षण कर स्वच्छता और पोषक आहार की जांच की। उन्होंने कहा कि बाल गृहों में बच्चों को अच्छी गुणवत्ता युक्त स्वास्थ्य वर्धक भोजन दिया जा रहा है।

अधिकारियों को निर्देश दिए कि बच्चों को तय मानकों के अनुसार भोजन दिया जाए और भोजन के पोषक तत्वों में किसी प्रकार की कमी नहीं होनी चाहिए। लॉकडाउन के दौरान मंत्री श्री राजेंद्र पाल गौतम अपने विभिन्न विभागों के वृद्धाश्रम, चाइल्ड केयर होम एवं अन्य सभी संस्थानों का दौरा कर वहां दी जा रही सुविधाओं का निरीक्षण कर रहे हैं। बुधवार को उन्होंने संस्कार आश्रम परिसर स्थित दोनों बालगृहों का औचक निरीक्षण किया। बालकों के संस्कार आश्रम में करीब 25 बच्चे रह रहे हैं, जबकि बालिकाओं के संस्कार आश्रम में करीब 42 बच्चियां रह रही हैं। दिल्ली समेत देश भर में चल रहे कोरोना के प्रकोप के मद्देनजर सभी बच्चों के कोविड-19 टेस्ट कराए गए, जिसमें एक बालक और तीन बालिकाएं कोरोना से संक्रमित पाई गईं। इन चारों बच्चों को इलाज के लिए कोविड केयर सेंटर में भेज दिया गया है और उनका बेहतर इलाज एवं देखभाल किया जा रहा है। सभी बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार है और वे स्वस्थ्य हो रहे हैं।

औचक निरीक्षण के दौरान कैबिनेट मंत्री राजेन्द्र पाल गौतम ने संस्कार आश्रम में रह रहे बच्चों को दी जा रही सभी बुनियादी सुविधाओं का बारीकी से निरीक्षण किया। उन्होंने बच्चों से उन्हें दी जा रही सुविधाओं के संबंध में बात की और वहां के स्टाफ के बर्ताव, खाने-पीने व अन्य व्यवस्थाओं के बारे में जानकारी ली।

बच्चों ने बताया कि उन्हें यहां स्वादिष्ट एवं पौष्टिक भोजन दिया जाता है और सभी स्टाफ का व्यवहार भी घर जैसा ही है। उन्हें यहां किसी प्रकार की कोई दिक्कत नहीं है। मंत्री राजेंद्र पाल गौतम ने कहा, मुझे यह जानकर खुशी हुई कि दोनों ही बाल गृहों में बच्चों को अच्छी गुणवत्ता वाला खाना दिया जा रहा है। स्वास्थ्य वर्धक संतुलित आहार दिया जा रहा है। बच्चों मनोरंजन की सुविधाएं जैसे टीवी आदि भी उपलब्ध है और कोरोना के खतरे को देखते हुए उन्हें सभी चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध कराई जा रही है।

मंत्री राजेंद्र पाल गौतम ने रसोई में जाकर खाने की सभी वस्तुओं का बारीकी से जांच पड़ताल की। अधिकारियों को सख्त निर्देश देते हुए उन्होंने कहा कि बच्चों को खाना तय मानकों के हिसाब से दिया जाए और भोजन के पोषक तत्वों में किसी प्रकार की कमी नहीं होनी चाहिए। संस्कार आश्रम परिसर में स्थित यह दोनों ही आश्रम महिला एवं बाल विकास के अंतर्गत आते हैं और यहां अनाथ, बेघर और जरूरतमंद बच्चों को बाल कल्याण समिति की सिफारिशों के आधार पर रखा जाता है। इन बाल गृहों में रह रहे सभी बच्चों को बुनियादी जरूरत की सभी चीजें मुहैया कराई जाती हैं और स्वास्थ्य वर्धक भोजन संतुलित आहार कपड़े रोजमर्रा की जरूरतों के अलावा खेलकूद मनोरंजन और चिकित्सा सुविधाओं का भी पूरा ध्यान रखा जाता है।

दिल्ली हाई कोर्ट ने एक जनहित याचिका खारिज की

नई दिल्ली, (एजेंसी)। दिल्ली हाई कोर्ट ने एक जनहित याचिका खारिज कर दी जिसमें रेड लाइट पर यातायात नियमों का उल्लंघन रोकने के लिए लगाए गए कैमरा को हटाने का अनुरोध किया गया था। अदालत ने याचिकाकर्ता पर जुमार्ना लगाते हुए कहा कि ऐसा करने पर दूरगामी नतीजे होंगे और अव्यवस्था फैल जाएगी। मुख्य न्यायाधीश डीएन पटेल और न्यायमूर्ति जसमीत सिंह की पीठ ने याचिका पर विचार करने से इनकार करते हुए याचिकाकर्ता पर 2500 रुपए का जुमार्ना भी लगाया। याचिका में ट्रैफिक लाइट पर नियमों के उल्लंघन के लिए जारी होने वाले चालान पर भी रोक लगाने का अनुरोध किया गया था। अदालत ने कहा कि विभिन्न उद्देश्यों के लिए कैमरे का इस्तेमाल होता है और इसे लगाने से रोका नहीं जा सकता क्योंकि इसके दूरगामी नतीजे होंगे। याचिका खारिज करते हुए अदालत ने कहा इससे अव्यवस्था फैल जाएगी। विधि के आखिरी वर्ष के छात्र ने याचिका में दलील दी थी कि कैमरा लगे होने से लाल बत्ती पर एंबुलेंस के आगे खड़े वाहन के आगे नहीं बढ़ने से एंबुलेंस फंसी रहती है और हरी बत्ती के इंतजार में मरीज का कीमती समय बर्बाद होता हे। याचिका में दलील दी गई, अगर ट्रैफिक लाइट से कैमरा नहीं हटाए गए तो इससे जान की अपूरणीय क्षति होगी और यह संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत स्वास्थ्य के अधिकार का उल्लंघन है।

केजरीवाल की पत्नी ने डॉक्टरों को दिया धन्यवाद

नई दिल्ली, (एजेंसी)। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की पत्नी सुनीता केजरीवाल ने कहा कि वह कोरोना वायरस संक्रमण से मुक्त होने के बाद घर लौट आईं हैं। उन्होंने ट्वीट किया, कोरोना से मुक्त होने के बाद घर आ गयी हूं। सहयोग और समर्थन के लिए मैं सभी डॉक्टरों, परिजन, मित्रों, स्टाफ और शुभचिंतकों की आभारी हूं। सभी की सुरक्षा और स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना करती हूं। पूर्व आईआरएस अधिकारी सुनीता केजरीवाल के 20 अप्रैल को कोरोना वायरस से संक्रमित होने की पुष्टि हुई थी जिसके बाद उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया था। पत्नी के संक्रमित होने के बाद केजरीवाल भी पृथकवास में रहे थे।

कोरोना काल में अग्रणी सेवा कर रहा है जीतो

नई दिल्ली, (एजेंसी)। राष्ट्रव्यापी कोरोना आपदा में जैन इंटरनेशनल ट्रेड आगेर्नाईजेशन (जीतो) देश में अग्रणीय सेवा कर रहा है। संस्था ईस्ट दिल्ली शाखा टेलीमेडिसन व भोजन इत्यादि से लेकर जरूरतमंदों को ऑक्सीजन कन्सेंट्रेटर एवं ऑक्सीजन सिलेंडर तक की सुविधाएं उपलब्ध करा रही है। प्रतिदिन सैंकड़ों लोग इनकी सेवाओं से लाभ उठा रहे हैं। इस आपदा की घड़ी में जैन समाज भी पीड़ितों के हर दुःख-दर्द में कंधे से कंधा मिलाकर सहायता कर रहा है। प्रतिदिन सैंकड़ों लोगों को कोरोना संक्रमण से होम क्वारंटीन लोगों को घर-घर पर खाना पहुंचा रहे हैं।

जीतो संस्था द्वारा होम क्वारंटीन लोगों के लिए प्रशिक्षित डॉक्टरों द्वारा परामर्श दिया जा रहा है। लोगों को ऑक्सीन सिलेंडर तथा ऑक्सीन कन्सेंट्रेटर दिए जा रहे हैं जिससे आपात स्थिति में जान बचाई जा सके। ईस्ट दिल्ली जीतो संस्था के मुख्य सचिव तरूण जैन ने बताया कि राष्ट्रीय आपदा की इस घड़ी में लोगों को मेडिकल सुविधाएं व भोजन उपलब्ध कराना सबसे बड़ी जरूरत है। हमारा संगठन जन मानस की सेवा के लिए सदैव तत्पर है।

श्री जैन ने बताया कि जीतो एक व्यापारिक संगठन है परन्तु सार्वजनिक संकट के समय किस तरह काम करना चाहिए इसका उत्तम उदाहरण जीतो ईस्ट दिल्ली चैप्टर ने सबके सामने रखा है। इस मानव सेवा में संगठन के संस्थापक चेयरमैन पारसमल जैन, चेयरमैन शैलेन्द्र सुराना, वाइस चेयरमैन भारत सुराना, वाइस चेयरमैन हेमचंद जैन आदि महत्वपूर्ण सेवा कर रहे हैं।

आप नेता आतिशी ने कहा- भारत बायोटेक ने वैक्सीन की अतिरिक्त खुराक देने से मना कर रहा

नई दिल्ली । दिल्ली में वैक्सीन की कमी को लेकर पिछले कुछ दिनों से बयानबाजी जारी है वहीं वैक्सीन की किल्लत से लोग परेशान हैं। वहीं, वैक्सीनेशन के लिए कोविन एप पर बुकिंग करते वक्त 18 प्लस के लोगों को स्लॉट ही नहीं मिल रहा है। ऐसे में कोरोना के खिलाफ लड़ाई धीमी पड़ सकती है और महामारी वापस से अपने पुराने रूप में लौट सकती है। इधर आम आदमी पार्टी की वरिष्ठ नेता आ तिशी ने वैक्सीन बुलेटिन जारी करने के दौरान बताया कि अभी फिलहाल दिल्ली के पास 16000 कोवैक्सीन की डोज उपलब्ध है यह सुबह का आंकड़ा है। यह जानकारी 44 सेंटरों से मिली है। वहीं बुधवार शाम को किसी भी सेंटर पर कोवैक्सीन नहीं दी गई है। ऐसा कमी के कारण हो रहा है। उन्होंने आगे बताया कि भारती बायोटेक ने फिलहाल और अतिरिक्त कोवैक्सीन की खुराक देने से मना कर दिया है।

बता दें कि दिल्ली के सीएम केजरीवाल ने भी पीएम मोदी को पत्र लिख कर पहले ही यह बताया था कि दिल्ली में वैक्सीन की कमी है, इसलिए केंद्र सरकार टीके का फॉर्मूला लेकर उन सभी कंपनियों को दे, जो सुरक्षित तरीके से वैक्सीन बना सकती हैं। सीएम ने कहा कि केंद्र ऐसा कर सकता है इसलिए यह जनहित में करना चाहिए। फिलहाल वैक्सीन के उत्पादन का एकाधिकार खत्म कर ज्यादा से ज्यादा प्रोडक्शन करना चाहिए। रॉयलटी के तौर पर उन दोनों कंपनियों को भुगतान किया जा सकता है।

वहीं, उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने भी कहा था कि हमने दोनों कंपनियों कोवैक्सीन से 67 लाख और कोविशील्ड से भी 67 लाख वैक्सीन का ऑर्डर दिया था। कंपनी ने मंगलवार को हमें पत्र भेजा है कि हम कोवैक्सीन नहीं दे सकते हैं। इस कारण बताते हुए कहा कि कंपनी ने कहा है कि केंद्र सरकार जितना बताएगी हम उतना ही दे सकते हैं। दिल्ली में कोवैक्सीन समाप्त है।

दिल्लीवालों के लिए राहत, हंसराज कॉलेज में आरटी-पीसीआर जांच केंद्र बनाया गया

नई दिल्ली, (एजेंसी)। दिल्ली विश्वविद्यालय के हंसराज कॉलेज ने बुधवार को अपने परिसर में कोविड-19 आरटी-पीसीआर जांच केंद्र खोला है। कॉलेज की प्रधानाचार्य रमा शर्मा ने बताया कि आईसीएमआर और एनएबीएल ने इस प्रयोगशाला को मंजूरी दी है। जेआईटीएम स्किल्स प्राइवेट लिमिटेड के साथ मिलकर कॉलेज ने इसे तैयार किया है। जांच केंद्र हर किसी के लिए खुला रहेगा।शर्मा ने नौ मई को दिल्ली के उपराज्यपाल अनिल बैजल, मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और अन्य अधिकारियों को पत्र लिखकर कॉलेज के हॉस्टल को कोविड-19 मरीजों के लिए 100 बेड्स का स्वास्थ्य केंद्र बनाने की पेशकश दी थी। उन्होंने विश्वविद्यालय के कर्मचारियों को कोविशील्ड टीका लगाने के लिए कॉलेज में टीकाकरण केंद्र बनाए जाने का भी अनुरोध किया था। उन्होंने कहा कि शिवाजी कॉलेज में दिल्ली विश्वविद्यालय का स्वास्थ्य केंद्र कोवैक्सीन लगा रहा है तो हमने सोचा कि हम अपने परिसर में कोविशील्ड लगा सकते हैं, लेकिन अगर हमें कोविशील्ड ओर कोवैक्सीन दोनों दिए जाते हैं तो हम खुश होंगे। उन्होंने बताया कि कॉलेज के करीब आठ-दस कर्मचारी कोरोना वायरस से संक्रमित पाए गए, लेकिन अब वे स्वस्थ हो चुके हैं। शर्मा ने पत्र में कहा था कि हंसराज कॉलेज जरूरत पड़ने पर हमेशा देश के साथ खड़ा रहा है। हंसराज कॉलेज में एक हॉस्टल है जिसमें 200 लोग रहते हैं। हम इस हॉस्टल को 100 बेड्स वाले आईसीयू केंद्र में बदलने के लिए तैयार हैं क्योंकि कोविड-19 मरीजों को अस्पतालों में बेड्स नहीं मिल रहे हैं और इससे बेचैनी पैदा हो रही है।

एक बच्चा अपने पिता की मदद से नई दिल्ली में एक सड़क पर एक बंदर को केला खिलाता हुए।

दिल्ली में आज तेज हवा के साथ बारिश होने की भविष्यवाणी, 2 दिन रहेगी गर्मी से राहत

नई दिल्ली । दिल्ली-एनसीआर में मौसमी उतार-चढ़ाव का दौर बुधवार को भी जारी है। दिल्ली, नोएडा, ग्रेटर नोएडा, गाजियाबाद, गुरुग्राम, पलवल समेत एनसीआर के शहरों में सुबह से आसमान में आंशिक रूप से बादल छाए हुए हैं। वहीं, भारतीय मौसम विज्ञान विभाग के मुताबिक, दिल्ली-एनसीआर में बुधवार को बादल छाए रहने और तेज हवा के साथ हल्की बारिश होने की भी संभावना है। कुलमिलाकर तेज गर्मी के बीच बुधवार को दिल्ली-एनसीआर का मौसम फिर से करवट लेगा। पश्चिमी विक्षोभ के असर से अगले दो दिन तेज हवा के साथ हल्की बारिश होने के आसार हैं। इससे तापमान और गर्मी दोनों में ही गिरावट आएगी।

इससे पहले मौसम विभाग के मुताबिक मंगलवार को दिल्ली का अधिकतम तापमान सामान्य से एक डिग्री अधिक 40.5 डिग्री सेल्सियस, जबकि न्यूनतम तापमान सामान्य से एक डिग्री कम 24.2 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। कई इलाकों में यह 41 डिग्री पार भी दर्ज हुआ। मौसम विभाग का पूर्वानुमान है कि बुधवार को बादल छाए रहेंगे और 30 से 40 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से तेज हवा चलने की संभावना है। अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 38 और 24 डिग्री रह सकता है।

मौसम विभाग ने पूर्वानुमान जताया है कि पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश और राजस्थान के कुछ हिस्सों में हल्की से मध्यम बारिश के साथ धूल भरी आंधी और एक-दो स्थानों पर ओले गिरने के आसार हैं। उत्तर और पूर्व मध्य प्रदेश, तेलंगाना, तटीय आंध्र प्रदेश और अंडमान और निकोबार द्वीप के कुछ हिस्सों में हल्की से मध्यम बारिश हो सकती है।

मौसम विभाग पहले ही पूर्वानुमान जता चुका है कि इस बार मई के दूसरे पखवाड़े में ही लू चलने के आसार हैं, क्योंकि एक-एक कर कई पश्चिमी विक्षोभ के सक्रिय रहने से बारिश, धूल भरी आंधी और ओले गिरने की संभावना बनी रहेगी। वहीं, पश्चिमी विक्षोभ के चलते हवा चलने से दिल्ली-एनसीआर के वायु प्रदूषण में हल्का सुधार हुआ है।

कोरोना से ठीक होने के बाद क्यों नहीं लेनी चाहिए खून पतला करने की दवा, एम्स के डॉक्टरों ने बताया अहम कारण

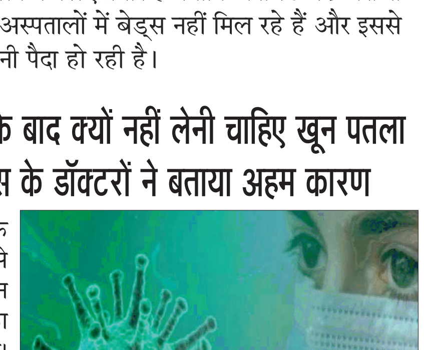

नई दिल्ली । कोरोना वायरस के मध्यम व गंभीर संक्रमण से पीड़ित मरीजों के इलाज में खून पतला करने की दवा का इस्तेमाल किया जा रहा है। कोरोना से ठीक होने के बाद भी कुछ लोगों को दवा लेने की सलाह दी जाती है। इस बारे में दिल्ली स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के डाक्टरों का कहना है कि कोरोना से ठीक हुए हर मरीज को खून पतला होने की दवा खाने की जरूरत नहीं पड़ती। यदि किसी मरीज को पहले से कोई बीमारी है या रक्त थक्का होने की आशंका हो तभी इस तरह की दवाएं देनी चाहिए। ऐसे में लोग खुद केमिस्ट से खून पतला होने की दवा खरीदकर ना लें। डॉक्टरों की सलाह के बगैर खून पतला करने की दवा का इस्तेमाल घातक भी हो सकता है।

एम्स के मेडिसिन विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. नीरज निश्चल ने कहा कि इन दिनों सभी लोगों को स्टेरॉयड, खून पतला करने की दवाओं व एंटीबायोटिक के बारे में पता चल गया है। लोग खुद दुकान से दवा लेकर इस्तेमाल करने लगे हैं। इस वजह से दवाओं को गलत इस्तेमाल तेजी से बढ़ा है। इसके बहुत सारे दुष्प्रभाव हो सकते हैं। दरअसल, कोरोना से रक्त थक्का होने की बात जरूरत से ज्यादा फैला जा रहा है। यदि किसी को पहले से कोई बीमारी नहीं है तो कोरोना से ठीक होने के बाद खून पतला करने की दवा सभी को लेने की जरूरत नहीं है। यदि किसी को पहले से हार्ट की बीमारी है, वाल्व बदला गया हो, नसों में ब्लॉक होने की आशंका हो या स्ट्रोक के मरीज हैं तो ऐसे लोगों को खून पतला करने की दवा की जरूरत होती है।

डॉक्टरों ने बताया कि कोरोना वायरस संक्रमण से ठीक हुए हर व्यक्ति को इस दवा के इस्तेमाल करने से आंतरिक रक्तस्त्राव भी हो सकता है, जो जानलेवा साबित हो सकता है। इसलिए बेवजह बहुत दवाओं के इस्तेमाल से बचना चाहिए।

संपादकीय

शिक्षित, लेकिन कमजोर होता समाज

शिक्षा का इतिहास मानव समाज एवं सभ्यता के विकास के इतिहास का सहचर रहा है। उसी तरह शुरू से ही शिक्षा एवं समाज का नाता धर्म से भी रहा है। सभी धर्मों में शिक्षा को सर्वोत्कृष्ट स्थान दिया गया है। गीता में कहा गया है न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते अर्थात इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र अन्य कुछ भी नहीं है। ज्ञान का अभिप्राय विद्या से है और विद्या सीधे रूप से शिक्षा से जुड़ी है। इस्लाम के संस्थापक हजरत मुहम्मद ने कहा था, 'मां की गोद से लहद तक (यानी जन्म से मृत्यु तक) इल्म हासिल करो।' ईसाई मिशनरियों द्वारा पूरी दुनिया में शिक्षण संस्थान स्थापित कर शिक्षा के साथ धर्म-प्रचार का कार्य जगजाहिर है। शिक्षा को मानव समाज के विकास की धुरी माना गया है। विकास के सभी प्रयासों का लक्ष्य मनुष्य के जीवन स्तर में सुधार होता है और समाज के किसी भी क्षेत्र में विकास की रीढ़ शिक्षा ही होती है। इसके अलावा, शिक्षा के प्रत्यय पर प्राचीन काल से ही चिंतकों व विचारकों ने अलग-अलग विचार रखे हैं तथा अपने ढंग से इसे परिभाषित करने के प्रयास किए हैं। भारतीय परिप्रेक्ष्य में महात्मा गांधी ने शिक्षा की सबसे उपयुक्त परिभाषा देते हुए कहा था, शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक और मनुष्य के मन, शरीर और आत्मा के उच्चतम विकास से है। गांधी धर्म-मर्मज्ञ के साथ-साथ समाज सुधारक भी थे। उनके अनुसार, बच्चे के शारीरिक विकास के लिए जैसे मां का दूध जरूरी है, उसी तरह मनुष्य की भौतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति के लिए शिक्षा आवश्यक है। वे साक्षरता और शिक्षा को बिल्कुल अलग मानते थे। उनके अनुसार, साक्षरता न तो शिक्षा का अंत है और न प्रारंभ। यह केवल मनुष्य को शिक्षित बनाने का एक साधन है। उन्होंने शिक्षा से मनुष्य के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास एवं चरित्र निर्माण का तात्पर्य दिया। आज की हाईटेक दुनिया में किसी भी शक्तिशाली अर्थव्यवस्था के लिए शिक्षा को पूर्वापेक्षित माना गया है। राष्ट्रीय एवं वैश्विक विमर्श में शिक्षा को सामाजिक एवं आर्थिक प्रगति की बुनियाद माना गया है। यूनेस्को, विश्व बैंक, एशियन डेवलपमेंट बैंक आदि द्वारा मिलकर गठित वर्ल्ड एजुकेशन फोरम पूरी दुनिया में शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए अध्ययन एवं योजना बनाने का काम करता है। इसके द्वारा शिक्षा सभी के लिए (एजुकेशन फॉर ऑल) का नारा दिया गया एवं इस हेतु संगठित रूप से अभियान चलाया गया। इन सबके साथ भारत में शिक्षा के अधिकार को मौलिक अधिकार बनाने वाला कानून बना एवं केंद्र तथा बिहार सहित अन्य राज्य सरकारों ने शिक्षा के सार्वजनीकरण पर जोर दिया। अभियान चलाकर यह सुनिश्चत करने की कोशिश की गई कि कोई भी स्कूल जाने की उम्र वाला बच्चा स्कूल से बाहर न छूटे। इसमें कोई शक नहीं कि ये सारे प्रयास बहुत हद तक सफल रहे हैं, जिसके कारण ग्रामीण इलाकों में भी साक्षरता दर बढ़ी है। हालांकि, कोरोना के बढ़ते संक्रमण के दौर में शिक्षा-व्यवस्था ही सबसे अधिक प्रभावित हो रही है। इस मुकाम पर पहुंचकर हम यह सोचने को विवश हैं कि जो कुछ भी हो रहा है, वह सिर्फ साक्षरता है या लोग वास्तविक अर्थों में शिक्षित हो रहे हैं। उनके अनुसार शिक्षा का मकसद तो चरित्र-निर्माण व गुणवत्तापूर्ण जीवन है और मनुष्य के गुणवत्तापूर्ण जीवन की कल्पना सामाजिक परिवेश से अलग नहीं की जा सकती है। हमारी मान्यता रही है कि व्यक्ति और समाज में अन्योन्याश्रय संबंध है। फिर शिक्षा तो इन दोनों के रिश्ते को मजबूत करने वाली होनी चाहिए, परंतु इसके विपरीत कभी-कभी शिक्षित व्यक्ति समाज से अपने को अलग-थलग महसूस कराने लगता है। ऐसी शिक्षा अपूर्ण ही मानी जाएगी, क्योंकि यह समाज के ताने-बाने को जर्जर बनाती है। लोक प्रचलन में आज यह मान्यता जड़ पकड़ रही है कि समाज में जिसके पास अधिक साधन होंगे, वही अधिक प्रतिष्ठा का हकदार होगा। दूसरी तरफ, सफलता व उपलब्धियों की खुशी में अधिक सूझबूझ से सामाजिकता निभाने की भावना व परंपरा कमजोर पड़ती जा रही है। सामाजिकता और नैतिकता के बिना गुणवत्तापूर्ण जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती है।

वर्तमान व सामाजिक मान्यता में शिक्षा प्रणाली चरित्र निर्माण एवं राष्ट्र निर्माण की जगह शिक्षित व्यक्ति की सफलता का पैमाना उसके धनोपार्जन की क्षमता से जोड़ दी गई है। जितनी मोटी आमदनी होती है, वह व्यक्ति सफलता की सीढ़ी पर उतना ही ऊंचा दिखता है। ऐसी प्रथा चल पड़ी है कि शिक्षा को अंधाधुंध धनोपार्जन का जरिया मान लिया गया है। धनोपार्जन के एक सूत्री कार्यक्रम के तहत व्यक्ति समाज की बात तो दूर, परिवार की चिंता भूल जाता है। तेज गति से अधिक से अधिक कमाने की होड़ में सामाजिकता पिछड़ती चली जा रही है। समाज एवं इंसान आगे बढ़ता दिख रहा है, लेकिन सामाजिकता और इंसानियत पिछड़ती जा रही है। सोच और मकसद दूषित हो जाने से शिक्षा के मूल अभिप्राय का क्षरण हो रहा है व सामाजिकता भौतिकता के आगे घुटने टेक रही है। यहां चौंकाने वाली बात समाज द्वारा इस प्रवृत्ति की सहज स्वीकार्यता है। जिस सोच के तहत समाज के बुनियाद पर आघात हो रहा है व इसके स्वरूप को विकृत किया जा रहा है, उसके प्रति समाज गाफिल दिखता है। समय आ गया है, समाज की संरचना को क्षत-विक्षत करने वाली इस मानसिकता से हमें बाहर निकलना पड़ेगा। अनुचित धनोपार्जन तभी तक बुरा लगता है, जब तक हमें मौका नहीं मिलता। स्वयं इससे लाभान्वित होने की स्थिति में सारे आदर्श धरे रह जाते हैं। शिक्षा के उद्देश्य को पवित्र रखने के लिए इस दोहरी मानसिकता से समाज को बाहर निकलना होगा। शिक्षा को प्रभावी एवं उपयोगी बनाने के लिए पहल करना सरकार का दायित्व तो है ही, साथ-साथ समाज की भी अहम भूमिका है। सामाजिकता, नैतिकता एवं राष्ट्रीयता के मूल्यों का विद्यालयी पाठ्यक्रम के साथ पारिवारिक एवं सामाजिक मान्यताओं में समाहृत करना होगा। समाज को अपने मूल्य-प्रणाली (वैल्यू सिस्टम) में अपेक्षित परिवर्तन लाना होगा। अधिकतम धनोपार्जन करने वाले को सफलतम मानने की मानसिकता छोड़नी होगी। यह समझना होगा कि हमारी सफलताओं और उपलब्धियों में समाज तथा सरकार की भी अपनी भूमिका रहती है। शिक्षित मनुष्य को देखना होगा कि वह समाज के लिए क्या कर रहा है? शिक्षित व्यक्ति को अपनी अलग पहचान बनाने की प्रवृत्ति छोड़कर समाज में अपनी उपयोगिता व प्रासंगिकता बनानी होगी।

प्रवीण कुमार सिंह

मेडिकल आक्सीजन के कारोबार का सच, राष्ट्रीय इच्छाशक्ति की आवश्यकता

इससे प्रति संयंत्र प्रतिदिन लगभग एक टन तरल आक्सीजन बन सकती है। लेकिन 162 अस्पतालों के लिए आदेशित संयंत्रों में से केवल 33 ही स्थापित हुए। क्यों? यहां तक कि राज्यों के सरकारी अस्पतालों ने अपने यहां आक्सीजन की सुविधा के लिए केंद्र की योजना को विफल कर दिया। ऑर्डर दिसंबर में दिए गए थे, लेकिन जब विक्रेता इंस्टॉलेशन के लिए अस्पतालों में पहुंचे, तो उनमें से अनेक को 'प्रतिरोध का सामना करना पड़ा', 'कोई जगह नहीं' का नाटक करते हुए। केंद्र की योजना को राज्यों द्वारा संचालित अस्पतालों द्वारा भी विफल कर दिया गया था।

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री डॉ. हर्षवर्धन ने आज से करीब ढाई महीने पहले यह घोषणा की थी, 'पिछले सात दिनों में भारत के 20 प्रतिशत जिलों में कोविड के नए मामले नहीं दर्ज किए गए हैं। ऐसा लग रहा है कि हमने कोविड के वक्र को स्थिर कर दिया है।' जिस संक्रमण के दैनिक मामले गत वर्ष 97 हजार के चरम पर पहुंच गए थे वे तब नौ हजार से भी कम के स्तर पर आ गए थे, लेकिन अप्रैल आते-आते चीजें नाटकीय रूप से बदलीं और एक अभूतपूर्व आपदा में तब्दील हो गईं। इस खराब हालत में इस संकट से निपटने के लिए बहुत बड़े राष्ट्रीय संकल्प की जरूरत थी, पर दिल्ली में आक्सीजन की कमी से हुई मौतों ने समूचे तंत्र को भावनाओं के ऐसे आगोश में ले लिया कि सभी तथ्य व तर्क अप्रासंगिक हो गए। उलटे भ्रामक तथ्यों ने सार्वजनिक विमर्श को गलत दिशा में मोड़ दिया। इस बीच मुनाफाखोरों की शिकायतें बहुत आम हो गईं।

आक्सीजन की कमी के कारण सबसे पहले दिल्ली के कॉरपोरेट अस्पतालों में मौतें शुरू हो गईं। इस महामारी की बदौलत इन अस्पतालों ने भारी मुनाफा कमाया, खासतौर से पिछले साल तो खूब चांदी काटी। उनके परिचालन आंकड़ों से इसकी पुष्टि भी होती है। इससे पता चला कि कोविड के सप्ताह भर के उपचार के लिए अस्पतालों ने आम भारतीय की सालाना आमदनी के बराबर रकम वसूली। उसमें जांच के खर्च तो शामिल भी नहीं। इस लूट के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में रिट याचिका दाखिल की गई। उस याचिका से स्वास्थ्य सेवा प्रदाता संघ (एएचपी) और फिक्की के सदस्य स्व-नियमन पर सहमत हुए। अब जरा स्व-नियमन का हाल भी देख लीजिए।

देखें कि खुद से तय की गई फीस क्या थी? जनरल वार्ड की प्रतिदिन की फीस 15 हजार रुपये। इसके अलावा, पांच हजार रुपये आक्सीजन के लिए, आइसीयू की फीस 25

हजार रुपये, 10 हजार रुपये वेंटीलेटर के लिए। फिक्की की दरें तो और भी ऊंची थीं- 17 हजार रुपये से लेकर 45 हजार रुपये प्रतिदिन तक। इससे भी बढ़कर कि अस्पतालों ने पीपीई 375 से लेकर 500 रुपये प्रति किट खरीदा और दस-बारह गुना अधिक वसूला। इस मामले में दिल्ली की तरह चेन्नई और मुंबई भी अपवाद नहीं रहे। क्या ये वही अस्पताल हैं जिन्होंने अब जीवन के संवैधानिक अधिकार के तहत सरकार द्वारा आक्सीजन आपूर्ति को लेकर याचिकाएं दायर की हैं। जिनके लिए वे रोगियों से प्रतिदिन पांच हजार रुपये ले रहे थे, क्या किसी ने भी आक्सीजन के अभाव में हो रही मौतों पर चल रही बहस के बीच लूट के इन भयावह तथ्यों को सुना? यह बहुत ही महत्वपूर्ण है, क्योंकि अनाप शनाप मुनाफा कमाने वाले ये अस्पताल मामूली कीमत पर अपना खुद का आक्सीजन संयंत्र लगा सकते थे।

मेडिकल आक्सीजन का उत्पादन, व्यापार, भंडारण और उपयोग निजी क्षेत्र के हाथ में है। भारत में मेडिकल आक्सीजन का व्यापार नियंत्रित या नियमित नहीं है, लेकिन इसकी कीमत रसायन और उर्वरक मंत्रालय के तहत एक स्वायत्तशासी संस्था 'राष्ट्रीय औषध मूल्य प्राधिकरण' द्वारा नियंत्रित की जाती है। उत्पादक आक्सीजन की आपूर्ति के लिए उद्योगों, अस्पतालों और सरकार के साथ भी निजी अनुबंध करते हैं। अस्पताल निर्णय लेते हैं कि आपात समय में आक्सीजन की कितनी जरूरत है आपूर्ति के समय का आकलन कर उसके अनुसार ऑर्डर करते हैं। उनकी सप्लाई चेन दूरी और समय दोनों दृष्टि से लंबी होती है, विशेष कर दिल्ली के अस्पतालों के लिए, जो विभिन्न राज्यों में फैले उत्पादन स्नोतों से हजारों किमी दूर हैं। ऐसे में सामान्य स्थितियों में भी समय से आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए एडवांस प्लानिंग की जरूरत होती है। लेकिन अस्पतालों ने आपात जरूरतों के लिए कोई प्लानिंग नहीं की और पैसे बचाए। इस जरूरत से आगे कमाने की जुगत भी लगाई। क्या किसी ने भी पिछले करीब 15 दिनों से चल रहे शोर शराबे के बीच इन तथ्यों पर गौर किया?

हम प्रतिदिन एक लाख टन आक्सीजन का उत्पादन करते हैं, इसमें से गुजरात की एक कंपनी ही अकेले पांचवे हिस्से का उत्पादन करती है। तरल रूप में आक्सीजन का व्यापार और परिवहन भारी व सुरक्षित टैंकरों के जरिये होता है। सबसे बदतर बात यह कि मात्र 300 रुपये के आक्सीजन को रखने वाले सिलेंडर की कीमत 10,000 रुपये होती है! दूरदराज में उत्पादन और टैंकरों से परिवहन और सिलेंडर में भंडारण सामान्य समय में भी समस्याएं पैदा करते हैं। महामारी के समय यह सप्लाई चेन दबाव का सामना नहीं कर सकी, विशेषकर दिल्ली, जहां कोविड से बड़ी संख्या में मौतें हुईं, वहां से सैकड़ों किमी दूर थी, जहां से आक्सीजन आना था।

जुबली मिशन मेडिकल कॉलेज एंड रिसर्च इंस्टीट्यूट, त्रिशूर, केरल के एनेस्थिसिया और क्रिटिकल विभाग के चेरिश पॉल, जॉन पॉल और अखिल बाबू ने पिछले साल आक्सीजन की आपूर्ति के जोखिम को उजागर किया था। इन तीनों विशेषज्ञों ने निष्कर्ष निकाला था कि अधिकांश अस्पताल आपदाओं के दौरान दुर्घटनाओं को आमंत्रित करते हुए एक ही स्थान से एकल पाइपलाइन पर निर्भर हैं। उन्होंने अस्पताल के आकार और तरल आक्सीजन संयंत्र के लिए अस्पताल की निकटता के आधार पर आक्सीजन के कई स्नोतों की सिफारिश की। इस सावधानी को दिल्ली के अस्पतालों में लागू करके वे स्वयं आक्सीजन का उत्पादन कर सकते थे, लेकिन उन्होंने नहीं किया। उन्होंने आपदा के दौरान आक्सीजन की निर्बाध आपूर्ति के लिए कभी योजना नहीं बनाई। जब आक्सीजन के लिए उनकी आपूर्ति लाइनें, जिस पर वे मुनाफाखोर निर्भर थे, असफल हो गए, तो उन्होंने जीवन के संवैधानिक अधिकार का हवाला दिया और अदालत से कहा कि वे सरकारों को आक्सीजन देने के लिए निर्देश दें! अदालत की भावनात्मक प्रतिक्रिया ने वास्तव में सरकारों पर दोष को स्थानांतरित करने में मदद की। इसने कोविड पर बहस और विमर्श को बदल दिया। क्या जनता को पिछले कुछ दिनों में इन महत्वपूर्ण तथ्यों की कोई जानकारी थी?

वर्तमान बहस तथ्य रहित है जो अस्पतालों की सप्लाई चेन की विफलता के लिए सरकार को दोष देती है। वह महत्वपूर्ण तथ्यों की अनदेखी करती है। इस तरह की आकस्मिकता का पूर्वानुमान लगाते हुए मोदी सरकार ने अक्टूबर में 200 करोड़ रुपये की लागत से 162 आक्सीजन प्लांट समूचे भारत के सरकारी अस्पतालों के लिए ऑर्डर किए थे। इससे प्रति मिनट 80,500 लीटर मेडिकल आक्सीजन का उत्पादन हो सकता था। इससे प्रति संयंत्र प्रतिदिन लगभग एक टन तरल आक्सीजन बन सकती है। लेकिन 162 अस्पतालों के लिए आदेशित संयंत्रों में से केवल 33 ही स्थापित हुए। क्यों? यहां तक कि राज्यों के सरकारी अस्पतालों ने अपने यहां आक्सीजन की सुविधा के लिए केंद्र की योजना को विफल कर दिया। ऑर्डर दिसंबर में दिए गए थे, लेकिन जब विक्रेता इंस्टॉलेशन के लिए अस्पतालों में पहुंचे, तो उनमें से अनेक को 'प्रतिरोध का सामना करना पड़ा', 'कोई जगह नहीं' का नाटक करते हुए। केंद्र की योजना को राज्यों द्वारा संचालित अस्पतालों द्वारा भी विफल कर दिया गया था।

बंगाल विधानसभा चुनाव के सबक पर एक नजर...

बंगाल में सत्ताधारी तृणमूल कांग्रेस को भी इन चुनाव परिणामों पर विश्वास नहीं हो रहा है। रविवार की शाम को चुनाव परिणामों में रुझान स्पष्ट होने के बाद खुद मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने प्रेस कांफ्रेंस में यह माना। वे चुनाव प्रचार के दौरान डबल सेंचुरी लगाने की बात कहती थीं, लेकिन उन्होंने भाजपा जैसे दमदार प्रतिद्वंद्वी के खिलाफ इतनी शानदार जीत की कभी कल्पना नहीं की थी। इसका सारा श्रेय निश्चित रूप से उन्हें ही जाता है, क्योंकि उनकी पार्टी में सब कुछ वही हैं। इस जीत के जरिये उन्होंने साबित कर दिया कि पार्टी के कद्दावर नेता भले ही उन्हें छोड़कर चले जाएं, उन पर कोई फर्क नहीं पड़ता है। पहली नजर में ममता बनर्जी दोनों पार्टियों के बीच का असली फर्क बनकर उभरी हैं। भाजपा को राज्य स्तर पर ममता के मुकाबले का कद्दावर नेता ढूंढना होगा। एक ऐसा नेता जो करिश्माई व्यक्तित्व का धनी हो और आम जनता के लिए संघर्ष करने को तैयार हो। सिर्फ व्यक्तित्व से चुनाव नहीं जीते जा सकते हैं। अगर ऐसा होता तो कमल हासन की पार्टी को तमिलनाडु में बुरी तरह पराजित नहीं होना पड़ता।

बंगाल के चुनाव नतीजों ने ममता बनर्जी को यह आत्मविश्वास भी दिया है कि वे अब राज्य की जिम्मेदारी अपने भतीजे अभिषेक बनर्जी के कंधों पर डालकर राष्ट्रीय राजनीति कर सकती हैं। ऐसा सिर्फ खुद उनको ही नहीं लगता है, बल्कि कांग्रेस और राहुल गांधी के प्रति अनिच्छुक कई विपक्षी दल भी उन्हें भाजपा विरोधी राजनीति की धुरी के केंद्र के रूप में देख रहे हैं। अगले साल उत्तर प्रदेश और पंजाब में विधानसभा चुनाव होंगे और उसके बाद लोकसभा चुनाव की तैयारियां शुरू हो जाएंगी। दीदी ने इसका संकेत भी दे दिया है। रविवार को प्रेस कांफ्रेंस में उन्होंने संकेत दे दिया कि अगर केंद्र सरकार सबको मुफ्त में वैक्सीन लगाने की घोषणा नहीं करेगी तो वे इसके खिलाफ आंदोलन करेंगी। अपनी संघर्ष क्षमता के लिए अग्निकन्या कही जा चुकीं दीदी एक बार कोई लक्ष्य तय कर लेती हैं तो फिर उसे हासिल करने के लिए वह कुछ भी कर सकती हैं।

भारतीय जनता पार्टी भले ही इस चुनाव में सत्ता तक पहुंचने में विफल रही है, लेकिन अपने प्रदर्शन से खुद को राज्य की मुख्य विपक्षी पार्टी के आसन तक पहुंचा दिया है। सीमावर्ती राज्य होने के नाते बंगाल में एक ऐसी विपक्षी पार्टी की जरूरत है जो पड़ोसी बांग्लादेश से घुसपैठ और गोतस्करी जैसे राष्ट्रीय हितों के मुद्दों पर विधानसभा और उसके आगे भी अपनी आवाज बुलंद कर सके। इसके अलावा राज्य में सत्ता पर भद्रलोक के काबिज रहने के कारण दलितों और आदिवासियों की उपेक्षा का बड़ा राजनीतिक मुद्दा तो भाजपा के पास है ही। ममता बनर्जी का परिवारवाद, उनके भतीजे की तोलाबाजी और उनकी पार्टी का सिंडिकेट राज भारतीय जनता पार्टी को अपनी जमीन मजबूत करने के लिए खाद-पानी का काम करेंगे और भविष्य में राज्य में इसके सुखद परिणाम भी सामने आएंगे। भाजपा से पहले कहने को राज्य में कांग्रेस और वामपंथी पार्टियां विपक्ष में थीं, लेकिन वे सत्ताधारी पार्टी के खिलाफ कुछ भी बोलने से गुरेज करती थीं। राज्य की जनता ने इन चुनावों में इन दोनों पार्टियों को नकार कर उन्हें सही सबक सिखाया है। गौर से देखा जाए तो इन चुनावों में सबसे ज्यादा हैरानी कांग्रेस और वामपंथी पार्टियों के सफाए पर है। विधानसभा चुनाव नतीजे आने से पहले तृणमूल के समर्थक प्रोफेसर मनोजीत मंडल भी यह मानने को तैयार नहीं थे कि मालदा और मुर्शीदाबाद में कांग्रेस को एक भी सीट नहीं मिलेगी, लेकिन ऐसा ही हुआ। मुश्किल से मुश्किल समय में भी इन दो जिलों में कांग्रेस हमेशा जीतती रही है। सिर्फ कांग्रेस का ही सफाया नहीं हुआ है, उसके साथ मिलकर चुनाव लड़ने वाली वामपंथी पार्टियों के गढ़ भी ढह गए हैं। इन दोनों पार्टियों के पराभव का सबसे ज्यादा फायदा तृणमूल कांग्रेस को हुआ है। नतीजतन, उसे पिछली बार के मुकाबले ज्यादा सीटें मिलती नजर आ रही हैं। पिछले लोकसभा चुनाव में कांग्रेस और वामपंथी पार्टियों के ये वोट भाजपा को मिले थे, इस वजह से उसे 18 सीटें मिली थीं। इस बार विधानसभा में इन वोटों का एक बड़ा हिस्सा तृणमूल के खाते में गया है। भाजपा उन्हें अपने पाले में कायम रखने में सफल नहीं रही। बंगाल का चुनाव सिर्फ एक राज्य की सत्ता पर काबिज होने के लिए नहीं लड़ा गया था, बल्कि यह क्षेत्रीय अस्मिता और पहचान की लड़ाई बन गया था।

निश्चित रूप से इस लड़ाई में ममता बनर्जी विजयी हुई हैं और भाजपा को अपनी रणनीति पर दोबारा विचार करना होगा। पहली नजर में ममता बनर्जी दोनों पार्टियों के बीच का असली फर्क बनकर उभरी हैं। भाजपा को राज्य स्तर पर ममता के मुकाबले का कद्दावर नेता ढूंढना होगा। एक ऐसा नेता जो करिश्माई व्यक्तित्व का धनी हो और आम जनता के लिए संघर्ष करने को तैयार हो। सिर्फ व्यक्तित्व से चुनाव नहीं जीते जा सकते हैं। अगर ऐसा होता तो कमल हासन की पार्टी को तमिलनाडु में बुरी तरह पराजित नहीं होना पड़ता।

विपक्षी एकता की कवायद

शिवसेना सांसद संजय राउत ने एक बार फिर कहा है कि विपक्षी दलों का एक मजबूत मोर्चा वक्त की जरूरत है। यह बात पहले से कही जा रही थी कि पांच राज्यों में चुनाव के नतीजे %अच्छे% रहे तो विपक्षी दलों को नए सिरे से संगठित करने की कोशिश हो सकती है। खास तौर पर पश्चिम बंगाल में बीजेपी की उम्मीदों को झटका देते हुए ममता बनर्जी ने जो अप्रत्याशित जीत दर्ज की, उससे विपक्ष का हौसला बढ़ा है। हालांकि राउत ने जो कहा है, उससे यह बात तय हो गई है कि इस संभावित विपक्षी मोर्चे की नेता के तौर पर ममता बनर्जी का नाम तय मानकर नहीं चला जा सकता। राउत पहले इसके लिए एनसीपी के शरद पवार का नाम ले चुके हैं। इस बार उन्होंने किसी का नाम नहीं लिया, लेकिन कुछ ऐसा भी नहीं कहा, जिससे लगे कि उनकी पार्टी अपनी इस राय से पीछे हटी है। दूसरी तरफ कांग्रेस सांसद अभिषेक मनु सिंघवी ने यह तो माना कि बीजेपी विरोधी राजनीति की अग्रिम पंक्ति में ममता बनर्जी अपनी जगह पक्की कर चुकी हैं, लेकिन उन्होंने भी साफ किया कि विपक्षी मोर्चे का नेता कौन होगा, जैसे सवाल अभी नहीं उठाने चाहिए। सिंघवी ने एक बड़ा संकेत यह दिया है कि इस मोर्चे में कांग्रेस सपोर्टिंग रोल के लिए तैयार है।

खैर, विपक्ष की एकजुटता की राह में सबसे बड़ा रोड़ा यही सवाल बनने वाला है कि उसकी अगुआई किसके हाथों में होगी। यूपीए-वन और यूपीए-टू के दौरान यह मुद्दा आसानी से हल हो गया तो इसलिए क्योंकि तब कांग्रेस सबसे बड़ी और मजबूत पार्टी के रूप में मौजूद थी। मगर पिछले कुछ वर्षों से उसकी ताकत लगातार कम होती गई है। ऐसे में विपक्षी मोर्चे का हिस्से बनने वाली क्षेत्रीय पार्टियां कांग्रेस पर हावी होने की कोशिश करें, यह स्वाभाविक ही है। लेकिन क्या कांग्रेस वाकई विपक्षी मोर्चे के नेतृत्व का दावा आसानी से छोड़ देगी? यों भी, 2024 संसदीय चुनाव में अभी तीन साल बाकी हैं। उससे पहले यूपी, पंजाब, गुजरात जैसे महत्वपूर्ण राज्यों के विधानसभा चुनाव होने हैं। विपक्षी खेमे में शामिल एसपी और बीएसपी जैसे दलों की ही नहीं, खुद कांग्रेस की हैसियत भी काफी कुछ इन विधानसभा चुनावों के नतीजों से निर्धारित होगी। साफ है, विपक्षी खेमे के नेतृत्व का सवाल आसानी से हल नहीं होने वाला। लेकिन लोकतंत्र में मजबूत विपक्ष की जरूरत सिर्फ चुनावों के लिए नहीं होती। सामान्य दिनों में शासन को जनाभिमुख बनाए रखने के लिए भी उसकी जरूरत होती है। और आज जब देश कोरोना की असाधारण चुनौती से जूझ रहा है तो विपक्ष का बिखराव किसी के हक में नहीं है। इसलिए पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव के नतीजों से मिले उत्साह की ही बदौलत अगर विपक्षी पार्टियां आपस में बेहतर सामंजस्य और तालमेल स्थापित करती हैं तो यह एक सराहनीय कदम होगा।

5 राज्यों के चुनाव परिणाम, भाजपा की राष्ट्रीय स्तर पर उपस्थिति बढ़ी क्षेत्रीय पार्टियां राज्यों में काफी मजबूत

एक हाईकोर्ट द्वारा भी आयोग पर कठोर टिप्पणियां की गईं। आयोग के पास नेताओं और पार्टी-कार्यकर्ताओं की अनुचित हरकतों पर दंडात्मक कारवाई का अधिकार नहीं है। आदर्श आचार संहिता दलों की आम सहमति पर आधारित है। उसका कानूनी आधार नहीं। अमेरिका जैसे विकसित देश में अभी तक भारत से तीन गुना ज्यादा लोग कोविड महामारी से मर चुके हैं, लेकिन वहां विपक्षी दल, मीडिया या न्यायपालिका ने उसका ठीकरा सरकार पर नहीं फोड़ा। यहां आपदा से लड़ने के बजाय सभी मोदी सरकार से लड़ने में लगे हैं। कितना दुर्भाग्यपूर्ण है कि केंद्र में गृह और वित्तमंत्री रहे पी. चिदंबरम ने कोविड आपदा प्रबंधन पर मोदी सरकार के विरुद्ध जनता से विद्रोह की अपील की? क्या यह लोकतंत्र में आस्था का प्रतीक है?

असम, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, केरल और पुडुचेरी विधानसभा के बहुप्रतीक्षित चुनाव परिणाम आ गए। असम में भाजपा, बंगाल में तृणमूल कांग्रेस और केरल में वाम मोर्चा की सत्ता में वापसी हुई, जबकि तमिलनाडु और पुडुचेरी में सत्ता परिवर्तन हुआ। केरल में 40 वर्षों से वामपंथी-एलडीएफ और कांग्रेसी-यूडीएफ के बारी-बारी से जीतने का क्रम मुख्यमंत्री पी. विजयन ने तोड़ दिया। कोविड आपदा के कारण निर्वाचन आयोग के लिए चुनाव कराना चुनौतीपूर्ण थे, पर अपनी कर्मठता और अनुभव से उसने आपदा पर लोकतंत्र की विजय सुनिश्चित की। असम में भाजपा की वापसी काफी अहम है, क्योंकि नागरिकता कानून पर वह रक्षात्मक थी। भाजपा, असम गण परिषद और बोडो समर्थित यूनाइटेड पीपुल्स पार्टी-लिबरल का गठबंधन बने रहने और कांग्रेस द्वारा सांप्रदायिक यूडीएफ से हाथ मिलाने और बदरुद्दीन अजमल को असम का चेहरा बनाने से सांप्रदायिक ध्रुवीकरण तय हो गया। बांग्लादेशी और रोहिंग्या मुस्लिमों की संख्या बढ़ने से असम के मतदाता चिंतित हैं। करीब 82 प्रतिशत मतदान इस चिंता का संकेतक था। असम में हिमंता बिस्वा सरमा और मुख्यमंत्री सर्बानंद सोनोवाल का विकास मॉडल भी प्रभावी रहा। भाजपा को असमिया मुसलमानों का भी समर्थन मिला, जो वहां के बांग्लादेशी मुसलमानों से चिढ़ते हैं।

बंगाल में तृणमूल की तीसरी बार सरकार बनना अभूतपूर्व है। पार्टी ने वहां अपना जनाधार भी बढ़ाया। भाजपा भले ही वहां अपेक्षित विजय न हासिल कर सकी हो, पर 2016 में तीन सीटों और 10 फीसद वोट से लगभग 75 सीटें और करीब 40 प्रतिशत वोट प्राप्त करना भी सराहनीय है। इसकी शुरुआत 2019 के लोकसभा चुनावों से हो गई थी, जिसमें उसे 40 फीसद से अधिक वोट और 18 सीटें मिली थीं। इसका कारण था बड़ी संख्या में दलितों, आदिवासियों, पिछड़ों का तृणमूल से छिटककर भाजपा में आना। भाजपा ने बंगाल में अपने संगठन, कैडर और विचारधारा को विस्तार तो दिया, पर इतना नहीं कि सत्ता प्राप्त कर सके। फिर भी बंगाल को उसके रूप में एक सशक्त विपक्ष मिला है, जो लोकतंत्र के लिए जरूरी है। बंगाल में कांग्रेस और वामपंथ का पूर्ण सफाया हो गया। लगता है भाजपा ने उनसे उनका जनाधार छीन लिया। केरल वामपंथ का गढ़ रहा है। स्वतंत्र भारत में प्रथम वामपंथी सरकार नंबूदरीपाद के नेतृत्व में वहीं बनी थी। पहली बार 2016 में भाजपा को एक सीट और करीब 10 प्रतिशत वोट मिले। बाद में पंचायत और नगरीय चुनावों में भी उसे सफलता मिली। भाजपा ने श्रीधरन को चेहरा बनाकर महिला सुरक्षा और विकास के मुद्दे पर विधानसभा चुनाव लड़ा। केरल में एलडीएफ की वापसी वास्तव में मुख्यमंत्री विजयन की जीत है, जिन्होंने कोविड आपदा का अच्छा प्रबंधन किया। कांग्रेस ने राहुल और प्रियंका के अलावा शशि थरूर को एक बड़े नेता के रूप में प्रयोग किया, पर उसका दुर्भाग्य कि इस बार उसका टर्न होने के बावजूद उसे सत्ता न मिल सकी। भाजपा को दक्षिणी राज्यों और खासकर केरल में सफलता हेतु और मेहनत करनी पड़ेगी।

तमिलनाडु में 1989 से द्रमुक और अन्नाद्रमुक के बीच क्रम से सत्ता परिवर्तन होता रहा है। जयललिता ने यह क्रम तब तोड़ा, जब उन्होंने 2011 और 2016 के चुनावों में लगातार जीत हासिल की। यहां भाजपा का अन्नाद्रमुक से गठजोड़ है। इस बार तमिलनाडु में द्रमुक के स्टालिन ने भी हिंदू कार्ड खेला और जीत हासिल की। द्रमुक और अन्नाद्रमुक के लगभग 30-30 फीसद वोट प्रतिबद्ध हैं, 8-9 प्रतिशत फ्लोटिंग वोटर्स परिणाम बदल देते हैं। पांच राज्यों के चुनाव परिणामों से कुछ प्रवृत्तियां रेखांकित की जा सकती हैं। एक, भाजपा की राष्ट्रीय स्तर पर उपस्थिति बढ़ी है, खासतौर पर बंगाल, केरल और केंद्रशासित प्रदेश पुडुचेरी में, जहां कांग्रेस को विस्थापित कर राजग सत्ता में आता दिख रहा है। दूसरे, क्षेत्रीय पार्टियां अपने-अपने राज्यों में काफी मजबूत हैं और विधानसभा चुनावों में राज्य का मतदाता उन्हें राष्ट्रीय पार्टियों से ज्यादा पसंद करता है। तृणमूल बंगाल में, द्रमुक और अन्नाद्रमुक तमिलनाडु में सशक्त हैं और राष्ट्रीय पार्टियों को वहां प्रवेश करने में कड़ी स्पर्धा करनी पड़ती है। शायद इसीलिए भाजपा छोटे-छोटे क्षेत्रीय दलों से गठबंधन करने से परहेज नहीं करती। असम और पुडुचेरी में भाजपा ने यही किया है।

तीसरी, महिलाओं का रुझान भाजपा की ओर बढ़ा है और वे जाति-धर्म से ऊपर उठ एक वर्ग के रूप में वोट देने लगीं हैं। संभवत~ मोदी के विकास मॉडल में जातियों के प्रभाव को कम करने का बीज है। महिला राजनीतिक सशक्तीकरण में मोदी ने आर्थिक सशक्तीकरण का तड़का लगा दिया है। अधिकतर योजनाओं को महिलाओं से जोड़कर उनके खातों में सीधे पैसे भेजकर मोदी ने महिलाओं को वित्तीय स्वायत्तता देकर उनकी आकांक्षाओं को जैसे पंख दे दिए हैं। महिला चेतना राजनीतिक अस्मिता के रूप में उभरी है, जिससे जाति-धर्म के बंधन को तोड़ महिला मतदाता सामाजिक वर्ग के रूप में स्वत~ संगठित हो गई हैं। सुरक्षा और विकास राजनीति के दो पहलू होते हैं। मोदी ने इन दोनों पर पकड़ बना समावेशी राजनीति की है, जिससे आज 18 राज्यों में भाजपा/राजग की सरकारें हैं।

इन चुनावों में कांग्रेस का जैसे और ह्रास हो गया है। पुडुचेरी और केरल में जहां इस बार उसकी सरकार बननी चाहिए थी, वहां भी उसे शिकस्त मिली। बंगाल से तो जैसे नामोनिशान ही मिट गया और असम में भी उसे घोर निराशा मिली। इसके बावजूद कांग्रेस नेतृत्व और संगठन को लेकर हठधर्मिता अपनाए हुए है। अंतिम प्रवृत्ति चुनाव आयोग पर आरोप लगाने को लेकर है। नेताओं और दलों द्वारा उस पर लांछन लगाना दुर्भाग्यपूर्ण है। एक हाईकोर्ट द्वारा भी आयोग पर कठोर टिप्पणियां की गईं। आयोग के पास नेताओं और पार्टी-कार्यकर्ताओं की अनुचित हरकतों पर दंडात्मक कारवाई का अधिकार नहीं है। आदर्श आचार संहिता दलों की आम सहमति पर आधारित है। उसका कानूनी आधार नहीं।

अमेरिका जैसे विकसित देश में अभी तक भारत से तीन गुना ज्यादा लोग कोविड महामारी से मर चुके हैं, लेकिन वहां विपक्षी दल, मीडिया या न्यायपालिका ने उसका ठीकरा सरकार पर नहीं फोड़ा। यहां आपदा से लड़ने के बजाय सभी मोदी सरकार से लड़ने में लगे हैं। कितना दुर्भाग्यपूर्ण है कि केंद्र में गृह और वित्तमंत्री रहे पी. चिदंबरम ने कोविड आपदा प्रबंधन पर मोदी सरकार के विरुद्ध जनता से विद्रोह की अपील की? क्या यह लोकतंत्र में आस्था का प्रतीक है?

गौरवशाली भारत के स्वामी प्रकाशक एवं मुद्रक प्रवीण कुमार सिंह द्वारा आला प्रिंटिंग प्रेस 3636 कटारा दिना बेग लाल कुआं, दिल्ली.... से मुद्रित एवं, ब्लॉक नं. 23 मकान नं. 399 त्रिलोकपुरी दिल्ली....91
से प्रकाशित संपादक -प्रवीण कुमार सिंह टेलीफोन नं. 011.22786172 फैक्स नं. 011.22786172
RNI, No. DELHIN383334, E-mail: gauravashalibarat@gmail.com इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के पीआरबी एट के तहत

कोरोना महामारी के बीच ब्लैक फंगस की भी दस्तक, सीएम योगी ने किया आगाह; अफसरों से मांगी रिपोर्ट

लखनऊ । कोरोना की दूसरी लहर का मुकबला करने के लिए उत्तर प्रदेश सरकार किसी स्तर पर कोई कसर नहीं छोड़ना चाहती है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने इस युद्ध में हर स्तर पर पूरी सतर्कता व ठोस रणनीति के साथ कदम बढ़ाए जाने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि कोरोना महामारी के खिलाफ जारी लड़ाई के बीच ही ब्लैक फंगस नाम की बीमारी का असर भी देखा जा रहा है। उन्होंने अपर मुख्य सचिव स्वास्थ्य और प्रमुख सचिव चिकित्सा शिक्षा, राय स्तर पर गठित स्वास्थ्य विशेषज्ञों की परामर्शदात्री समिति से इस पर विमर्श कर बीमारी से बचाव, इलाज और तैयारियों के बारे में मुख्यमंत्री कार्यालय को विस्तृत रिपोर्ट देने को कहा है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बुधवार को लखनऊ स्थित अपने सरकारी आवास पर कोविड प्रबंधन की समीक्षा बैठक में टीम-9 को विभिन्न दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि कोरोना महामारी के खिलाफ लड़ाई में ट्रेस, टेस्ट और ट्रीट की नीति के अनुरूप सभी प्रदेशवासियों के जीवन और जीविका की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए सभी जरूरी प्रयास किए जा रहे हैं। संक्रमण दर लगातार कम होता जा रहा है, जबकि रिकवरी दर हर दिन बेहतर हो रही है। विगत 24 घंटों में प्रदेश में 18,125 नए कोविड केस की पुष्टि हुई है, जबकि इसी अवधि में 26,712 लोग स्वस्थ होकर डिस्चार्ज हुए हैं। वर्तमान में प्रदेश में 2,06,615 एक्टिव केस हैं, जो प्रदेश में संक्रमण के पीक 3.10 लाख से लगभग 1 लाख 4 हजार कम हैं। 30 अप्रैल से 11 मई के 11 दिनों में संक्रमण में आई यह कमी संतोषप्रद है। अब तक 13 लाख 40 हजार 251 प्रदेशवासियों ने कोविड को हराकर आरोग्यता प्राप्त की है।

कम्युनिटी किचन की संख्या को बढ़ाया जाए ~ सीएम योगी आदित्यनाथ ने कहा कि

कोविड मरीजों के लिए बेड बढ़ोतरी की दिशा में प्रयास और तेज किए जाने की आवश्यकता है। बीते 24 घंटो में चिकित्सा शिक्षा विभाग के विभिन्न अस्पतालों में 115 बेड, वाराणसी में डीआरडीओ अस्पताल में आईसीयू के 250 और लखनऊ के हज हाउस स्थित एचएएल हॉस्पिटल में आईसीयू के 100 बेड की बढ़ोतरी हुई है।

उन्होंने कहा कि आंशिक कोरोना कर्फ्यू को दृष्टिगत रखते हुए रेहड़ी, पटरी, ठेला व्यवसायी, निर्माण श्रमिक, पल्लेदार आदि के भरण-पोषण की समुचित व्यवस्था की जाए। अधिकांश जिलों में कम्युनिटी किचन प्रारम्भ हो चुके हैं। इनकी संख्या और बढ़ाये जाने की जरूरत है।

ऑक्सीजन प्लांट लगाने की प्रक्रिया तेज की जाए : सीएम योगी आदित्यनाथ ने ऑक्सीजन प्लांट की स्थापना प्रक्रिया को तेज करने के निर्देश दिए हैं। सहारनपुर में नए ऑक्सीजन प्लांट अगले दो दिन में चालू हो जाएंगे। चीनी विभाग द्वारा 75 जिलों में प्लांट स्थापना की प्रक्रिया तेजी से की जा रही है। कोविड के उपचार हेतु एयर सेपरेटर यूनिट, ऑक्सीजन प्लांट की स्थापना आदि के संबंध में सांसद/विधायक निधि से सहयोग किया जा सकता है। उन्होंने बताया कि बीते 24 घंटों में 1014.53 मीट्रिक टन ऑक्सीजन का वितरण किया गया है। इसमें रीफिलर को 619 एमटी और मेडिकल कॉलेजों को 313 एमटी ऑक्सीजन उपलब्ध कराई गई। ऑक्सीजन की मांग आपूर्ति और खर्च में संतुलन बनाने के लिए कराए जा रहे ऑक्सीजन ऑडिट के अछे परिणाम मिले हैं। प्रधानमंत्री की प्रेरणा से संचालित पीएम केयर्स के माध्यम से प्रदेश के सभी जिलों में ऑक्सीजन प्लांट की स्थापना की स्वीकृति मिल गई है।

कोविड टीकाकरण में प्रथम स्थान पर उत्तर प्रदेश : सीएम योगी आदित्यनाथ ने कहा कि कोविड टीकाकरण की प्रक्रिया प्रदेश में सुचारु रूप से चल रही है। 45 वर्ष से अधिक और 18-44 आयु वर्ग के लोगों को कोविड सुरक्षा कवर प्रदान करने में उत्तर प्रदेश प्रथम स्थान पर है। अब तक 1,11,63,988 लोगों को पहली डोज और 29,35,607 लोगों ने वैक्सीन की दोनों डोज प्राप्त कर ली है। इस तरह 01 करोड़ 40 लाख 99 हजार 95 कोविड वैक्सीन एडमिनिस्टर हुए हैं। प्रदेश के 18 जिलों में 18-44 आयु वर्ग के लोगों के 2,16,897 लोगों ने टीका-कवर प्राप्त कर लिया है, इनमें 49,744 लोग बीते 24 घंटों में वैक्सीनेट हुए हैं।

धार्मिक मान्यताओं के अनुरूप की जाए अंत्येष्टि : सीएम योगी आदित्यनाथ ने कहा कि कोविड के कारण होने वाली हर मृत्यु दुखद है। मृतकों के परिजनों के प्रति प्रदेश सरकार की संवेदनाएं हैं। अंत्येष्टि की क्रिया मृतक की धार्मिक मान्यताओं के अनुरूप ससम्मान किया जाए। अंत्येष्टि क्रिया को सुचारू रूप से संपन्न कराने के लिए प्रदेश सरकार द्वारा आवश्यक वित्तीय सहायता भी दी जा रही है। किसी भी मृतक की अंत्येष्टि के लिए जल प्रवाह की प्रक्रिया पर्यावरण के अनुकूल नहीं है। इस संबंध में धर्मगुरुओं से संवाद किया जाए, लोगों को जागरूक करने की आवश्यक्ता है।

संक्षिप्त खबर

खड़े ट्रक में तेज रफ्तार ट्रक ने मारी जोरदार टक्कर, चालक की मौत

गायघाट (मुजफ्फरपुर)। बेनीबाद ओपी क्षेत्र के रमौली चौक स्थित एनएच 57 पर खड़े ट्रक में तेज रफ्तार में आ रहे ट्रक ने जोरदार टक्कर मार दी। इस घटना में ट्रक चालक की मौके पर ही मौत हो गई। वहीं उप चालक बाल-बाल बच गया। मृतक की पहचान वैशाली जिले के सराय निवासी 30 वर्षीय मनोहर कुमार के रूप में की गई है। वह पटना से डाक का सामान लेकर पूर्णिया जा रहा था। टक्कर इतनी जोरदार थी कि ट्रक के अगले हिस्से के परखच्चे उड़ गए। वहीं केबिन में फंसे चालक के शव को जेसीबी से केबिन तोड़ कर निकला गया। घटना से आक्रोशित स्थानीय लोगों ने बताया कि एनएच किनारे कई दिनों से एक ट्रक खराब हालत में खड़ा था। इसकी सूचना स्थानीय प्रशासन को दे दी गई थी। बावजूद हाईवे से खराब ट्रक को नहीं हटाया जा सका। वहीं बेनीबाद से रमौली चौक तक दर्जनों ट्रक बिना काम खड़े कर दिए जाते हैं जिसके कारण हमेशा घटनाएं घटती रहती हैं। मौके पर पहुंची ओपी पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम हेतु एसकेएमसीएच भेज दिया। ओपी प्रभारी राजकुमार ने बताया कि ट्रक में रखे कागजात के आधार पर ट्रक व मृतक की पहचान की गई है। मृतक के स्वजनों को सूचना दे दी गई है।

पंजाब कांग्रेस में चरम पर कलह, अब मंत्री भी अपनी सरकार पर उठा रहे सवाल, पार्टी नेतृत्व मौन

चंडीगढ़ । पंजाब में सत्तारूढ़ कांग्रेस की अंतरकलह अब सतह पर आने लगी है। कोटकपूरा गोलीकांड मामले को लेकर कांग्रेस के तीन मंत्री व दो सांसद कैप्टन सरकार को घेर रहे हैं। कैबिनेट मंत्री चरणजीत सिंह

चन्नी दलित मुद्दों के पर सरकार को घेरने में जुट गए हैं। पंजाब कांग्रेस में इस घमासान को लेकर हाईकमान चुप है, वहीं कांग्रेस के प्रदेश प्रधान सुनील जाखड़ भी पूरी तस्वीर से गायब नजर आ रहे हैं।

कोटकपूरा गोलीकांड को लेकर पहले विधायक नवजोत सिंह सिद्धू ने कैप्टन के खिलाफ मोर्चा खोला हुआ था। अब कैबिनेट मंत्री सुखजिंदर सिंह रंधावा, चरणजीत सिंह चन्नी और गुरप्रीत कांगड़ भी कैप्टन के खिलाफ खड़े हो गए हैं। राज्यसभा सदस्य प्रताप सिंह बाजवा और लुधियाना से सांसद रवनीत सिंह बिट्टू का साथ भी उन्हें मिलने लगा है। आठ साल में यह पहला मौका है जब बाजवा की मंत्रियों के साथ दूरियां मिटी हों। मौके की नजाकत को देखते हुए रंधावा ने भी बाजवा से नजदीकी बढ़ा ली है। जबकि 2015 में जब बाजवा कांग्रेस के प्रदेश प्रधान थे तब उनका सबसे ज्यादा विरोध भी माझा में ही हुआ था और रंधावा विरोध करने वालों में शामिल थे। यह भी बताने योग्य है कि बिट्टू के भी कैप्टन के साथ मधुर संबंध नहीं रहे। रंधावा के साथ नजदीकियों को लेकर बाजवा का कहना है कि राजनीति में एक ही स्थान पर ठहरा नहीं जा सकता है। आज कांग्रेस को बचाने और लोगों से किए गए वादे पूरे करने की जरूरत है। हम किसी के खिलाफ नहीं है बल्कि हमारा उद्देश्य मुख्यमंत्री के किए वादों को पूरा करवा है।

चन्नी की अहम भूमिका- एक अन्य पहलू यह भी है कि इस पूरे घटनाक्रम में चरणजीत सिंह चन्नी अहम भूमिका अदा कर रहे हैं। यह चर्चा भी है कि चन्नी ने पटियाला में नवजोत सिंह सिद्धू के साथ बैठक की थी। उसके बाद धीरे-धीरे सभी नेताओं को एक मंच पर लाया गया। मौके की नजाकत को देखते हुए चन्नी ने मंगलवार को ही कांग्रेस के दलित विधायकों के साथ बैठक भी की। ठीक एक साल पहले 15 मई, 2020 को भी चन्नी ने अपनी सरकारी कोठी पर दलित मंत्रियों व विधायकों के साथ बैठक की थी। इस बैठक में एजेंडा दलितों को लेकर लंबित पड़े मुद्दों का था लेकिन तब स्थिति अलग थी। उस समय एक्साइज पालिसी को लेकर कैबिनेट सब कमेटी की बैठक में तत्कालीन चीफ सेक्रेटरी करण अवतार सिंह के विवाद हो गया था। जिसके बाद वित्त मंत्री मनप्रीत बादल और चन्नी ने बैठक छोड़ दी थी। बाद में तृप्त राजिंदर सिंह बाजवा ने चन्नी को धमकी दे दी थी कि कैप्टन उनकी मी टू की फाइल खोल सकते हैं। पार्टी सूत्र बताते हैं कि इस कलह की नींव पिछले महीने हुई कैबिनेट बैठक में ही पड़ गई थी। उसमें रंधावा और जाखड़ ने मुख्यमंत्री को इस्तीफा दिया था। इसी बैठक में कैप्टन ने करीब सभी मंत्रियों को लताड़ भी लगाई थी। इस कारण कई मंत्री कैप्टन से नाराज हो गए हैं।

लुधियाना पुलिस ने नकली सैनिटाइजर बनाने की फैक्ट्री पकड़ी, कई भरे ड्रम व कैन बरामद

लुधियाना । इकबाल गंज चौक एरिया में नकली सैनिटाइजर बनाने वाली दुकान पर बुधवार पुलिस ने दबिश दी। मौके पर भारी मात्रा में मिलावटी सैनिटाइजर बरामद किया गया है। पुलिस के सामने आरोपित दुकानदार विपुल जैन सैनिटाइजर बनाने का कोई लाइसेंस भी पेश नहीं कर सका। पुलिस ने उसके खिलाफ केस दर्ज करके उसे गिरफ्तार कर लिया है। एडीसीपी प्रज्ञा जैन ने बताया कि आरोपित विपुल जैन चंडीगढ़ रोड स्थित जीके इस्टेट का रहने वाला है। उसके खिलाफ साजिश के तहत धोखाधड़ी, ड्रग एंड कास्मेटिक एक्ट और डिजास्टर मैनेजमेंट एक्ट के तहत केस दर्ज किया गया है। उन्होंने बताया कि बुधवार सुबह पुलिस की टीम कानून व व्यवस्था की जांच के लिए इकबाल गंज चौक में गश्त पर थी। इसी दौरान उनकी नजर अरिहंत ट्रेडर्स नाम की दुकान पर पड़ी। इसके बाहर बैठा एक वर्कर ड्रम से सैनिटाइजर निकाल कर छोटी कैन में भर रहा था। मौके पर स्वास्थ्य विभाग को सूचना देकर ड्रग इंस्पेक्टर को बुलाया गया। प्राथमिक जांच में वह सैनिटाइजर मिलावटी पाया गया, उसके सैंपल लेकर लैब में भेजे गए हैं ताकि पता लगाया जा सके कि उसमें क्या मिलाया जाता था।

देर शाम एसीपी वरियाम सिंह ने बताया कि फिलहाल कब्जे में लिए गए सैनिटाइजर की मात्रा का आंकलन किया जा रहा है। जांच पूरी होने के बाद ही पता चलेगा कि कुल कितना सैनिटाइजर बरामद किया गया है। उन्होंने कहा कि अभी और भी बरामदगी होने की संभावना है। सूत्रों का कहना है कि पुलिस ने दुकान से 220 लीटर वाले 7 ड्रम और 5 लीटर वाली 18 के करीब कैन कब्जे में लिए हैं।

लालू परिवार को पप्पू यादव की गिरफ्तारी के बाद अलग ही डर, तेजस्वी-तेज प्रताप ने नहीं खोला मुंह

पटना । जन अधिकार पार्टी के संरक्षक और पूर्व सांसद पप्पू यादव की गिरफ्तारी को लेकर बिहार का प्रमुख विपक्षी दल राष्ट्रीय जनता दल पशोपेश में पड़ गया है। राजद के प्रमुख नेता तेजस्वी यादव, उनके बड़े भाई तेजप्रताप यादव या उनके पिता लालू प्रसाद यादव ने भी पप्पू यादव की गिरफ्तारी पर मुंह नहीं खोला है। अलबत्ता पार्टी के कई नेता इसे नौटंकी बता रहे हैं। राजद के कई नेताओं ने तो यहां तक का डाला है कि राज्य सरकार मुद्दों से ध्यान भटकाने के लिए ऐसा कर रही है। दरअसल राजद को डर है कि गिरफ्तारी के बाद पप्पू यादव कहीं हीरो न बन जाएं। युवा राजद के प्रदेश अध्यक्ष कारी सोहैब सहित कई नेताओं ने इशारों - इशारों में इसे नौटंकी तक करार दे दिया है।

लालू परिवार के किसी ट्विटर अकाउंट से नहीं निकला एक शब्द- दिन भर में पांच पांच बार ट्वीट करने वाले लालू परिवार के कई सदस्यों ने इस मसले पर कुछ भी नहीं बोला। सामान्य तौर पर लालू प्रसाद यादव, तेजस्वी यादव, तेज प्रताप यादव, मीसा भारती और रोहिणी आचार्य के ट्वटिर अकाउंट के अलावा राजद के अकाउंट से भी बिहार की हर प्रमुख राजनीतिक गतिविधि पर टिप्पणी जरूर की जाती है। और तो और चर्चा यह भी चली कि राजद की ओर से पप्पू यादव की गिरफ्तारी के विरोध में किया गया एक ट्वीट बाद में हटा लिया गया था। यही सवाल जब पत्रकारों ने पप्पू यादव से पूछा तो उन्होंने अपने तरीके से तेजस्वी यादव को चुनौती भी दे डाली। उन्होंने कहा कि तेजस्वी अस्पताल में मरीजों के बीच जाएं और उनकी सेवा करें। जरूरतमंदों की मदद के लिए बाहर निकलें। उनके लिए दवाएं और ऑक्सीजन की व्यवस्था करें।

एनडीए के दलों ने जो आरोप लगाया, वह वैसी ही की मांग- दरअसल ऐसे ही विषयों पर एनडीए में शामिल पार्टियां तेजस्वी को घेरती रही हैं। भाजपा और जदयू के नेता भी लगातार कहते रहे हैं कि आपदा के समय तेजस्वी यादव बिहार से गायब हो जाते हैं। जदयू के प्रवेश प्रदेश प्रवक्ता अभिषेक झा ने पिछले दिनों कहा कि लालू के दोनों बेटे फार्म हाउस में मौज कर रहे हैं। हालांकि जदयू के इस आरोप के तुरंत बाद तेजप्रताप सक्रिय हुए।

दाउदी बोहरा समुदाय के सदस्य भोपाल में ईद-उल-फितर पर घर में नमाज अदा करने के बाद परिवार के सदस्यों के बीच शुभकामनाएं देते हुए।

कोरोना संकट के कारण पीसीएस की प्रारंभिक परीक्षा स्थगित, 13 जून को थी प्रस्तावित

प्रयागराज । उत्तर प्रदेश में कोरोना वायरस संक्रमण की भयावह स्थिति को देखते हुए उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (यूपीपीएससी) ने पीसीएस प्रारंभिक परीक्षा 2021 स्थगित कर दी है। दो परीक्षाएं सम्मिलित राय/प्रवर अधीनस्थ सेवा (पीसीएस) व सहायक वन संरक्षक/क्षेत्रीय वन अधिकारी (एसीएफ-आरएफओ) की प्रारंभिक एक साथ 13 जून को होनी थी। इसके अलावा 20 जून को प्रस्तावित प्रवक्ता (पुरुष/महिला) राजकीय इंटर कॉलेज प्रारंभिक परीक्षा 2020 भी टाल दी गई है। आयोग टली परीक्षाओं की नई तारीख बाद में घोषित करेगा। दोनों परीक्षाएं टलने से प्रतियोगियों ने खुशी व्यक्त की है, क्योंकि इसके लिए इंटरनेट मीडिया में लगातार अभियान चलाया जा रहा था।

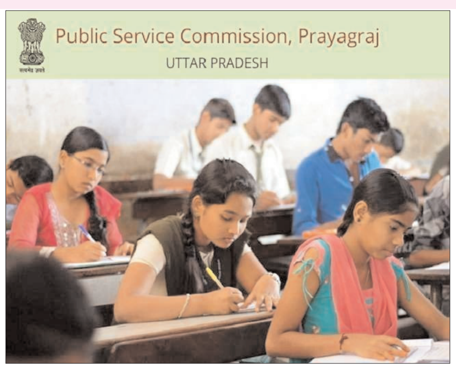

यूपीपीएससी की पीसीएस, एसीएफ/आरएफओ 2021 की प्रारंभिक परीक्षा भर्ती में करीब सात लाख आवेदन हुए हैं। परीक्षा के लिए केंद्र बनाने की प्रक्रिया शुरू कर दी गई थी। आयोग सचिव ने 23 जिलों के जिलाधिकारियों से केंद्र से संबंधित ब्योरा तलब किया था। लेकिन, कोरोना संक्रमण की वजह से अधिकांश जिलाधिकारियों ने ब्योरा नहीं भेजा। वहीं, प्रतियोगी कोरोना संक्रमण को देखते हुए परीक्षा टालने की मांग कर रहे थे।

परीक्षा नियंत्रक अरविंद कुमार मिश्र ने बताया कि दोनों परीक्षाओं को आयोग ने परीक्षा स्थगित कर दिया है। नई तारीखों के लिए प्रतियोगी वेबसाइट देखते रहे। इसके पहले 23 मई को प्रस्तावित प्रधानाचार्य श्रेणी-2/उप-प्रधानाचार्य/सहायक निदेशक (स्क्रीनिंग) परीक्षा-2019 और 30 मई को प्रस्तावित सम्मिलित राय कृषि सेवा (प्रारंभिक) परीक्षा-2020 भी स्थगित की जा चुकी हैं।

बता दें कि उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग की पीसीएस 2021 की प्रारंभिक परीक्षा के खिलाफ प्रतियोगी एकजुट हो गए थे। कोरोना संक्रमण की भयावह स्थिति का हवाला देते हुए प्रतियोगी परीक्षा स्थगित करने की मांग कर रहे थे। प्रतियोगी मुख्यमंत्री, दोनों डिप्टी सीएम व आयोग के अधिकारियों को ई-मेल से पत्र भेजकर परीक्षा टालने की मांग कर रहे थे। इसके अलावा इंटरनेट मीडिया में सुनो प्रतियोगियों की व्यथा नामक मुहिम चलाई जा रही थी।

यूपीपीएससी ने सम्मिलित राय/प्रवर अधीनस्थ सेवा व सहायक वन संरक्षक/क्षेत्रीय वन अधिकारी की प्रारंभिक परीक्षा 2021 की तारीख 13 जून को प्रस्तावित की थी। परीक्षा कैलेंडर में दर्ज तारीख के अनुरूप तैयारियां भी शुरू कर दी गई थी। प्रतियोगी छात्र संघर्ष समिति के अध्यक्ष अवनीश पांडेय का कहना था कि कोरोना संक्रमण के कारण लॉकडाउन बढ़ता जा रहा है। कोचिंग संस्थान बंद हैं। आवागमन का उचित प्रबंध नहीं है। इसके बीच आयोग पीसीएस की प्रारंभिक परीक्षा कराने काफी दिक्कतें होंगी। इस पर आयोग ने फैसला लेते हुए परीक्षा को स्थगित कर दिया। पीसीएस 2021 प्रारंभिक परीक्षा के लिए करीब सात लाख अभ्यर्थियों ने आवेदन किया है। यूपीपीएससी में यह पहला अवसर जब आवेदकों की संख्या छह लाख से अधिक हुई है, जबकि इस बार पीसीएस में पदों की संख्या पिछले वर्षों की अपेक्षा कम है। आयोग ने पीसीएस 2021 के 400 और एसीएफ व आरएफओ 2021 के 16 पदों के लिए ऑनलाइन आवेदन पांच मार्च तक लिए थे। आयोग के अनुसार इस बार छह लाख 88 हजार से अधिक अभ्यर्थियों ने आवेदन किया है। प्रतियोगियों का कहना है कि पहली बार इतनी संख्या में अभ्यर्थियों ने आवेदन किया है। पीसीएस 2020 के 487 पदों के लिए 5.95 लाख, जबकि पीसीएस 2019 के 453 पदों के लिए 5,44,664 अभ्यर्थियों ने फॉर्म भरा था।

आजम खां की हालत स्थिर, ऑक्सीजन रिक्वायरमेंट हुई कम; डॉक्टर बोले- अगले 72 घंटे अहम

लखनऊ । कोरोना वायरस से संक्रमित समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता व रामपुर के सांसद आजम खां की लखनऊ मेदांता अस्पताल में हालत पहले से स्थिर हो गई है। 72 वर्ष के आजम खां की स्थिति पर डॉक्टर लगातार नजर बनाए हुए हैं। बुधवार दोपहर मेदांता अस्पताल के निदेशक डॉ राकेश कपूर ने बताया कि कल की तुलना में आज आजम खां की ऑक्सीजन की स्थिति में सुधार आया है। ऑक्सीजन की रिक्वायरमेंट कम हुई है। वो भोजन भी ले रहे हैं। डॉक्टरों के मुताबिक, अब अगले 72 घंटे आजम खान के लिए अहम हैं।

बता दें, मंगलवार शाम अस्पताल प्रशासन ने हाई ऑक्सीजन सपोर्ट की जरूरत को देखते हुए आजम खां को कोविड आइसीयू में रखा। इस बीच आजम खान के निधन की अफवाह भी शाम को तेजी से वायरल हुई। इस खबर को खारिज करते हुए मेदांता अस्पताल ने कहा कि उन्हें अभी आइसीयू में रखा गया है और क्रिटिकल केयर टीम की निगरानी में उनका इलाज चल रहा है। सीतापुर जेल से लखनऊ मेदांता भतीर्~ मालूम हो कि 9 मई को आजम खां और उनके बेटे अब्दुल्ला खां को सीतापुर जेल से मेदांता अस्पताल लखनऊ सिफ्ट किया गया। उस समय उन्हें मोडरेट बीमारी थी, दो दिन बाद आजम की बीमारी बढ़ी और उन्हें आइसीयू मे सिफ्ट किया गया। कोविड निमोनिया के कारण उन्हें हाई ऑक्सीजन सपोर्ट की आवश्यकता पड़ी थी। वहीं, उनके पुत्र अब्दुल्ला खां की स्थिति स्थिर और संतोषजनक है।

...न बैंड बाजा न बराती, थाने में लिए सात फेरे, प्रेमिका बोली- मोहब्बत जिंदाबाद!

सीतामढ़ी । प्रेमी जोड़ों की शादी के किस्से तो आपने कई सुने होंगे, लेकिन यह जरा दिलचस्प और उससे अलग और पूरा फिल्मी है। लॉकडाउन में फिल्मी ट्विस्ट वाला यह लव स्टोरी चर्चा में है। इसका हीरो बाजपट्टी थाना क्षेत्र का रहने वाला रवि है, जिसे डुमरा की एक लड़की से प्यार हो गया था। इस प्रेमी जोड़े ने फिल्मी अंदाज में सात जन्मों के लिए सात फेरे लिए। डुमरा थाने में इस अनोखे प्रेमी जोड़े ने शादी रचाई। विवाह में न बैंड बाजा और न ही बराती। बस दोनों तरफ से गिनती के लोग और थानाध्यक्ष जनमेजय राय व पुलिसकर्मी इस शादी के गवाह बने। सबने मिलकर प्रेमी जोड़े की डुमरा थाने में शादी करा दी। पता चला कि पहली नजर का प्यार दीवानगी की हद में बदल गई थी। फिर दोनों ने एक दूसरे से शादी करने का फैसला कर लिया। मगर, कुछ अर्से के प्यार में ही दोनों के बीच ऐसा कुछ हुआ कि लड़के ने साइड ले लिया। और, दूसरी लड़की से शादी रचाने की सोच बैठा। लेकिन, पहली नजर का प्यार लड़की के दिल पर इस कदर हावी था कि वह किसी भी सूरत में उसको खोना नहीं चाहती थी। इसके लिए वह दुनिया से लड़कर भी अपनी मोहब्बत को हासिल करके ही दम लेने पर उतारु हो गई। लड़का रवि कुमार बाजपट्टी के बेलहिया गांव के गोनौर राय का पुत्र है जबकि, लड़की सोनी कुमारी पिता दयाराम महतो डुमरा के रिखौली पूर्वी गांव की रहने वाली है। मंगलवार दिनभन इस प्रेमी जोड़े और उनके स्वजन का हाई वोल्टेज ड्रामा देखने को मिला। दोनों के मां-बाप इस शादी के लिए राजी नहीं थे। शाम होते-होते नाटकीय घटनाक्रम का इस पूरी कहानी का हैप्पी एंडिंग हो गया।

पहले जान छिड़कता था लड़का और फिर फेर लिया मुंह- पुलिस के अनुसार, लड़की का कहना था कि पहले तो लड़का जान छिड़कता था और भागकर मंदिर में शादी रचाने की बातें करता था। लड़की की जिद और जुनून के आगे लड़के के साथ पूरे परिवार वालों ने हामी भर दी। तब डुमरा थाना ही मंडप स्थल में तब्दील हो गया। तुरंत ही जयमाला के लिए फूल और मिठाइयां मंगाई गई। दूल्हा तो जिंस पैंट व शर्ट में ही था लेकिन, लड़की दुल्हन के लिबास में तैयार आई थी। थाने में ही रवि और सोनी ने एक दूसरे को वरमाला पहनाया और पूरे रस्मो-रिवाज के साथ दोनों का विवाह संपन्न हुआ।

बीकानेर में कोविड -19 महामारी की दूसरी लहर के दौरान अंतर्राष्ट्रीय नर्स दिवस के अवसर पर दो नर्सें एक-दूसरे को बधाई देती हुईं।

नियम तोड़ने वालों पर रहेगी ड्रोन की नजर, त्यौहारों के लिए यूपी पुलिस ने कसी कमर

लखनऊ । उत्तर प्रदेश में कोरोना की जंग में लगातार डटी पुलिस के सामने चुनौतियां अभी कम नहीं हुई हैं। आने वाले दिनों में ईद, बड़ा मंगल व अन्य प्रमुख मौकों पर पुलिस के सामने कोविड-19 की गाइडलाइन का अनुपालन कराने की चुनौती भी होगी। इसे लेकर पुलिस ने अपनी तैयारियां शुरू कर दी हैं। एडीजी कानून-व्यवस्था प्रशांत कुमार का कहना है कि सभी धर्मगुरुओं से वार्ता कर कोविड-19 की गाइडलाइन का अनुपालन सुनिश्चित कराने का प्रयास किया जा रहा है। धर्मगुरुओं का सहयोग भी पुलिस को मिल रहा है। एडीजी कानून-व्यवस्था प्रशांत कुमार ने बताया कि सभी प्रमुख स्थानों पर वीडियोग्राफी करायेगी और ड्रोन कैमरों के जरिए भी नियमों की अनदेखी करने वालों पर नजर रखी जाएगी। एडीजी का कहना है कि शारीरिक दूरी का अनुपालन न करने व नियमों को तोड़ने वालों के विरुद्ध कार्रवाई होगी। प्रदेश में 51 हजार से अधिक कंटेनमेंट जोन में नियमों का सख्ती से अनुपालन कराया जा रहा है।

उत्तर प्रदेश सरकार ने सूबे में लागू आंशिक कर्फ्यू की मियाद बढ़ा दी है। 17 मई की सुबह सात बजे तक आंशिक कर्फ्यू लागू रहने का आदेश जारी हो चुका है। ऐसे में पुलिस के सामने नियमों का अनुपालन कराने की चुनौती भी है। खासकर कोरोना की बढ़ती रफ्तार को देखते हुए पुलिस को हर स्तर पर पूरी तत्परता बरतने के निर्देश दिए गए हैं। प्रदेश में 51 हजार से अधिक कंटेनमेंट जोन में नियमों का सख्ती से अनुपालन कराया जा रहा है। इन कंटेनमेंट जोन में 37 हजार से अधिक पुलिसकर्मी मुस्तैद किए गए हैं। मास्क न लगाने वालों के विरुद्ध भी पुलिस लगातार कार्रवाई कर रही है।

उत्तर प्रदेश भी कोरोना के संकट से जूझ रहा है, लिहाजा इसका असर अब ईद पर पड़ता दिख रहा है। ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के सदर मौलाना राबे हसनी नदवी की ओर से जारी गाइडलाइन में कहा गया है कि गले व हाथ मिलाने की बजाय इस बार बोलकर ईद की मुबारकबाद दें।

असम के सीएम हिमंत बिस्वा सरमा गुवाहाटी में कोविड -19 बीमारी के कारण निधन हो चुके असम के सबसे प्रमुख साहित्यकारों और दिग्गज पत्रकार हेमन बोरगोहिन को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए।

ओलंपिक बाउंड्री बॉक्सर मैरी कॉम ने पुणे के कमांड अस्पताल में कोविड -19 वैक्सीन की अपनी पहली खुराक प्राप्त की।

ठाणे में कोविड -19 वैक्सीन की एक खुराक प्राप्त करने के लिए, ठाणे नर्स प्रशिक्षण टीकाकरण केंद्र में नागरिक एक कतार में खड़े ।

एक नजर

कोविड-19 की दूसरी लहर से जूझ रहे भारत के लिए अच्छी खबर, निकल गया पीक, लेकिन खतरा बरकरार

नई दिल्ली । कोविड-19 की दूसरी लहर का सामना कर रहे भारत के लिए एक राहत भरी खबर सामने आई है। लगातार चार दिनों तक भारत में कोरोना के 4 लाख से अधिक नए मामले सामने आने के बाद अब दो दिनों से इसमें गिरावट दर्ज की जा रही है। इस महामारी से जूझ रहे देशवासियों के लिए ये एक अच्छा संकेत है। आपको बता दें कि स्वास्थ्य मंत्रालय के मुताबिक देश में बीते 24 घंटों के दौरान 3,48,421 कोरोना के नए मामले सामने आए हैं। इस आधार पर विशेषज्ञ भी इस बात को कह रहे हैं कि देश में कोरोना की दूसरी लहर का पीक अब निकल चुका है। आपको बता दें कि देश में फरवरी में कोरोना के मरीजों की संख्या में तेजी आनी शुरू हुई थी। सफदरजंग अस्पताल के कम्यूनिटी मेडिसिन डिपार्टमेंट के प्रमुख डॉक्टर जुगल कुशर के मुताबिक देश में दूसरी लहर का पीक या उच्चतम स्तर अब खत्म हो चुका है। उनका कहना है कि अब मामलों में धीरे-धीरे ही सही गिरावट दर्ज की जाएगी। हालांकि उन्होंने ये भी कहा है कि राष्ट्रीय स्तर पर दूसरी लहर का पीक जरूर खत्म हो चुका है लेकिन राज्य के स्तर पर अभी ये पूरी तरह से समाप्त नहीं हुआ है। उनके मुताबिक कुछ राज्यों में इस दूसरी लहर का पीक जहां आ चुका है वहीं कुछ ऐसे भी राज्य हैं जहां अब भी इसका आना बाकी है। लेकिन राष्ट्रीय स्तर पर ये कहा जा सकता है कि ये दौर अब निकल चुका है, हालांकि खतरा अभी तक टला नहीं है। तीसरी लहर आने की संभावना के बाबत पूछे गए सवाल के जवाब में डॉक्टर जुगल किशोर का कहना है कि कोई भी लहर वायरस के बदलते स्वरूप पर निर्भर करती है। यदि वायरस का म्यूटेशन लगातार जारी रहता है तो इसके आने की संभावना बनी रहती है। वहीं इसकी एक दूसरी वजह ये भी बनती है कि जिन लोगों में अभी इम्यूनिटी बनी है यदि वो कुछ समय के बाद खत्म हो जाती है तो भी इसकी संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि ऐसी स्थिति में वायरस का बदलता स्वरूप इन लोगों को दोबारा चपेट में ले सकता है। उनका कहना है कि कोरोना की दूसरी लहर के दौरान देश में करीब 50 फीसद आबादी की चपेट में आई है।

हालांकि पहली और दूसरी लहर के बाद भी कुछ लोग ऐसे हैं जो इसकी चपेट से बाहर रहे हैं। ऐसे में तीसरी लहर में उनके भी दायरे में आने की संभावना अधिक है। इसके अलावा नवजात बच्चे भी इसकी एक आसान पहुंच होते हैं। डॉक्टर किशोर के मुताबिक तीसरी लहर की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता है, लेकिन इसको रोका भी जा सकता है। इसके लिए हमें तेजी से लोगों का वैक्सीनेशन करना होगा। अधिक से अधिक वैक्सीनेशन होने की सूरत में वायरस का खतरनाक रूप इससे बदल जाएगा और हम इस पर लगाम लगाने में सफल हो जाएंगे। कम्यूनिटी मेडिसिन के प्रोफेसर डॉक्टर जुगल किशोर का ये भी कहना है कि तीसरी लहर को रोकने के लिए लोगों को ज्यादा चौकस और सजग रहना होगा।

भरूच में ट्रक और वैन की टक्कर में पांच लोगों की मौत, 10 घायल

अहमदाबाद । गुजरात के भरूच जिले में बुधवार को ट्रक और वैन की टक्कर में पांच लोगों की मौत हो गई, जबकि 10 अन्य घायल हो गए। पुलिस मामले की जांच कर रही है। अभी तक मारे गए लोगों की पहचान नहीं हो पाई है। यह भी नहीं पता चल पाया है कि ये कहां से आ रहे थे और कहां के रहने वाले थे। गौरतलब है कि इससे पहले भी गुजरात में अलग-अलग जगहों पर हुए सड़क हादसों में कई लोगों की मौत हो चुकी है। फरवरी, 2021 में गुजरात के तापी जिले में सड़क दुर्घटना मे दो लोगों की मौत हो गई और पांच लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार, दुर्घटना उस समय हुई जब यात्रियों से भरी प्राइवेट लग्जरी बस सड़क किनारे खड़े हुए ट्रक में जा टकरायी। टक्कर इतनी जोरदार थी कि बस में सवार दो यात्रियों की मौके पर ही मौत हो गई और पांच यात्री घायल हो गए। बस में सवार सभी लोग शादी समारोह में जा रहे थे। वलोद पुलिस स्टेशन के इंस्पेक्टर वीआर वासवा के अनुसार, हादसा वलोद गांव के पास व्यारा-बाजीपुरा राष्ट्रीय राजमार्ग पर हुआ। इस लग्जरी बस में सवार लोग महाराष्ट्र के मालेगांव से दक्षिण गुजरात के सूरत की एक शादी समारोह में शामिल होने जा रहे थे। इस हादसे में दो लोगों की मौत हो गई है और पांच लोग घायल हो गए। घायलों को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती करवा दिया गया है। दुर्घटना उस समय हुई जब बस चालक बस को नियंत्रित नहीं कर पाया और सड़क किनारे खड़े हुए ट्रक से जा टकराया। गुजरात के मोरबी में बीते 28 जनवरी को हुए सड़क हादसे में चार लोगों की मौत हो गई और एक व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गया था। गुजरात के मोरबी में एक मिनी ट्रक ने दोपहिया वाहन में टक्कर मार दी थी, इस हादसे में चार लोगों की मौत हो गई थी। घायल व्यक्ति की पहचान राजस्थान के दिनेश शंभू के रूप में हुई थी। इस दर्दनाक हादसे में शिवाजी गमेती (19), उनके भाई सुरेश (18), तेजाराम गमेती (17) और शिवाजी के बहनोई माणलाल कालवा (19) की मौत हो गई थी।

एचआइवी की दवा कोरोना को भी खत्म करने में पाई गई उपयोगी, सभी मरीज हुए ठीक

जबलपुर । ह्यूमन इम्युनोडिफिशियंसी वायरस (एचआइवी) से संक्रमित एड्स के मरीजों के उपचार में उपयोगी नाइटाजोक्सानाइड दवा कोरोना के वायरस को भी खत्म करने में उपयोगी पाई गई है। नेताजी सुभाषचंद्र बोस मेडिकल कालेज से संबंद्ध अस्पताल में कोरोना संक्रमित 200 मरीजों पर इस दवा का प्रयोग किया जा चुका है। सभी मरीज गंभीर स्थिति में पहुंचे बिना कोरोना को मात देकर घर जा चुके हैं। खास बात यह भी है कि नाइटाजोक्सानाइड टेबलेट का सेवन करने वाले किसी भी कोरोना मरीज की मृत्यु नहीं हुई। दवा के असर को देखते हुए कोरोना के सभी मरीजों पर इसके इस्तेमाल की तैयारी की जा रही है। नाइटाजोक्सानाइड एचआइवी मरीजों को क्रिप्टोस्पोरोडियम के संक्रमण के नियंत्रण के लिए दी जाती है। इसके कारण मरीज को दस्त की गंभीर समस्या का सामना करना पड़ता है। कोरोना की दूसरी लहर में बीमारी के अन्य लक्षणों में दस्त की समस्या भी सामने आई, जिसे देखते हुए प्रयोग के तौर पर ऐसे लक्षण वाले कोरोना के मरीजों को नाइटाजोक्सानाइड दी गई और इसके अच्छे परिणाम सामने आए। फिर अन्य लक्षण वाले मरीजों पर इसे आजमाया गया।

अस्पताल के कोविड प्रभारी डा. संजय भारती का कहना है कि कोरोना मरीजों के उपचार में शामिल डाक्टरों की टीम ने सर्वसम्मति से नाइटाजोक्सानाइड के उपयोग की योजना बनाई थी। दवा के प्रयोग के बेहतर परिणाम सामने आने के बाद कोरोना के गंभीर मरीजों पर इसके प्रयोग को लेकर चर्चा की जा रही है। यहां भर्ती उन मरीजों पर नाइटाजोक्सानाइड का प्रयोग किया गया जो गंभीर हालत में नहीं थे। दवा के असर के चलते वे गंभीर स्थिति में नहीं पहुंचे।

वहीं सामान्य लक्षण वाले कोरोना के वे मरीज जिन्हें नाइटाजोक्सानाइड नहीं दी गई थी, उनमें से कुछ गंभीर हालत में पहुंच गए।

अब बिना आईडी प्रूफ लग सकेगी जैन साधुओं को वैक्सीन

उदयपुर । अब देश में जैन साधुओं के वैक्सीनेशन की राह खुल गई है। बिना आईडी प्रूफ के उन्हें वैक्सीन नहीं लगाई जा रही थी। बुधवार को केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने एक नोटिफिकेशन जारी कर जैन साधुओं को बिना किसी आईडी प्रूफ के वैक्सीन लगाए जाने के आदेश दिए हैं। जारी नोटिफिकेशन में इसा बात का उल्लेख किया गया है कि जैन साधुओं की आध्यात्मिक दिनचर्या व उनके कठोरतम नियमों को देखते हुए यह निर्णय लिया गया है। जिसके बाद देशभर में विचरण करने वाले सभी जैन साधु-साध्वी अपने नजदीकी वैक्सीन सेंटर पर जाकर वैक्सीन लगवा सकते हैं। उल्लेखनीय है कि उदयपुर के श्री तारक गुरु जैन ग्रंथालय के श्रवण डॉ. पुष्पेंद्र ने सबसे पहले केंद्रीय चिकित्सा मंत्री डॉ. हर्षवर्धन को पत्र लिखकर इसकी मांग की थी।

इसके बाद देशभर के विभिन्न जैन संगठनों ने जैन साधु-साध्वियों के लिए बिना किसी आईडी प्रूफ के ही कोरोना संक्रमण से बचाव को लेकर वैक्सीन लगवाए जाने की मांग की थी। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के इस संबंध में नोटिफिकेशन जारी किए जाने के बाद जैन समाज ने स्वास्थ्य मंत्री का आभार जताया है। उदयपुर के विभिन्न जैन समाजों ने संत समाज से आग्रह भी किया है कि वह वैक्सीन अवश्य लगवाएं। जैन साधु परिवार तथा आवास आदि सांसारिक भौतिक वस्तुओं का त्याग कर जैन दीक्षा स्वीकार कर लेते हैं। इसलिए उनके पास किसी भी प्रकार का कोई आईडी प्रूफ नहीं होता है। बिना आईडी प्रूफ के उन्हें वैक्सीन नहीं लगाई जा रही थी।

गौरतलब है कि गत सोमवार को राजस्थान में कोरोना के 16487 नए मामले सामने आए, 160 मौतें हुई और 13,499 रिकवर हुए हैं। कुल सक्रिय मामले 2,03,017 हैं। कुल संक्रमित मामले 7,73,194 हैं। प्रदेश के कई जिलों में नित नए मामले सामने आ रहे हैं। इससे पहले राजस्थान में रविवार को कोरोना के 17921 नए मामले सामने आए, 159 लोगों की मौतें हुई और 16,880 डिस्चार्ज हुए। कुल मामले 7,56,707 हैं। कोरोना से 5,665 मौतें हो चुकी हैं। कुल 5,50,853 रिकवर हुए। सक्रिय मामले 2,00,189 हैं। इधर, उदयपुर जिले में कोरोना संक्रमितों का आंकड़ा दिनों दिन फिर बढ़ने लगा है। यहां बारह सौ से अधिक कोरोना संक्रमित मरीज सामने आए हैं। इस तरह अब तक उदयपुर में रविवार को नए मिले 1202 कोरोना संक्रमितों को मिलाकर कुल संक्रमित मरीजों का आंकड़ा बढ़कर 44 हजार 438 पर पहुंच गया है। उदयपुर में रविवार को अठारह कोरोना संक्रमितों ने दम तोड़ दिया।

दाउदी बोहरा समाज ने मनाई ईद, ख्वाजा की दरगाह में खुलेगा जन्नती दरवाजा; पर नहीं हो सकेगी जियारत

अजमेर/उदयपुर । अजमेर के दाउदी बोहरा समाज ने ईद उल फितर बुधवार को मनाई। कोविड महामारी के दौर में बचाव की दृष्टि से सभी ने घरों में नमाज अदा की और ईद की मुबारकबाद दी। बोहरा समाज के मोहम्मद भाई के अनुसार, मंगलवार रात्रि समाज के लोगों ने अफ्तार कर तीवां रोजा खोला। सभी ने उनके रोजा कुबूल करने व देश व दुनिया को कोरोना मुक्त करने की परवरदिगार से दुआ की। उन्होंने बताया कि बोहरा समाज ईदुल फितर बुधवार को शांति और सदभाव से मनाई। समूचे विश्व में कोरोना महामारी के दुख भरे माहौल में सभी ने व्यक्तिगत मेल मुलाकात नहीं करते हुए डिजीटल संवाद किया और एक दूसरे को घर पर रहने, मास्क लगाने और दूरी बनाए रखते हुए कोरोना से बचे रहने की खैर खबर ली।

इधर, सूफी संत ख्वाजा गरीब नवाज सैयद मोईनुद्दीन हसन चिश्ती की दरगाह खादिम सैयद कुतुबुददीन सखी के अनुसार, हिलाल कमेटी बुधवार रात को चांद दिखाई देने की तस्दीक करेगी। हिलाल कमेटी की बैठक में ऐलान हुआ तो ईद गुरुवार को मनाई जाएगी। सुबह दरगाह का आस्ताना खुलने के साथी ही ज्नती दरवाजा भी खुल जाएगा। जो दोपहर तीन बजे की खिदमत के समय बंद होगा। उन्होंने बताया कि कोविड महामारी के कारण ईदुल फितर के अवसर पर आम जन को या बिना पासधारी खादिमों को दरगाह में प्रवेश पर पाबंदी रहेगी। इसलिए जन्नती दरवाजे से प्रवेश कर जियारत करने की किसी को इजाजत नहीं होगी। उन्होंने बताया कि चांद नहीं दिखा तो ईदुल फितर शुक्रवार को मनाई जाएगी। चांद नहीं दिखने पर मुसलमानों को 30 वां रोजा

रखने का अवसर मिलेगा। दरगाह के खादिमों की संस्था सैयद जादगान अंजुमन के सदस्य सैयद फजले मोईन एवं तस्सदुक हसैन जमाली के अनसार बुधवार को चांदरात है, शाम को ईद का चांद दिखने की पूरी उम्मीद है। उन्होंने बताया कि रमजान माह की बीस तारीख की शाम से ऐतेकाफ में बैठकर इबादत करने वाले रोजदारों को भी ईद का चांद दिखने पर उठाया जाएगा।

ईद की नमाज से पूर्व फितरा बंटेगा

सुन्नी दावत एक इस्लामी के मौलाना मोहम्मद मोइनुद्दीन रजवी के अनुसार ईद की नमाज से पहले गरीब, यतीम, व जरूरतमंदों को फितरा बांटना जरूरी है ताकि त्योहार के दिन कोई नतो भूखा रहे और नही मायूस । उन्होंने गरीब व जरूरतमंदों को ईद की खुशी में शामिल करने का संदेश देते हुए कहा कि वे कोरोना महामारी के दौर में स्वयं को भी सुरक्षित रखे और आवश्यक नियमों को पालन करे।

उदयपुर में बोहरा समुदाय ने घरों में ही अदा की ईद उल फितर की नमाज़

उदयपुर में रमज़ान माह के तीस रोजे पूरे करने के बाद बोहरा समुदाय ने उदयपुर में बुधवार को वैश्विक महामारी कोरोना के चलते लगे लॉकडाउन के बीच ईद उल फितर का त्योहार मनाया। ईद के मौके पर पड़ी जाने वाली विशेष नमाज घर पर ही रह कर अदा की गई। समुदाय के लोगों ने घर पर रहकर ही ईद की खुशियाँ मनाई।

सुधारवादी बोहरा समुदाय से संबद्ध दाऊदी बोहरा जमात के प्रवक्ता मंसूर अली ओड़ावाला ने बताया की बुधवार को रमज़ान के तीस रोज़े पूरे होने पर ईद उल फ़ितर की विशेष नमाज़ (जो की आमतौर पर मस्जिदों में अदा की जाती है) घरों में ही पढ़ी गई। लॉकडाउन और कर्फ़्यू के मद्देनज़र एवं समाज की महामारी से सुरक्षित रखने को लेकर समुदाय ने ईद की नमाज घरों में ही अदा करने का फैसला किया। जिसके चलते मस्जिदों में मौलाना समेत सिर्फ अनुमति प्राप्त पांच व्यक्तियों ने नमाज अदा कर समाज और देशहित में दुआ की गई। इस अवसर पर ऑनलाइन यू ट्यूब पर प्रसारित ईद उल फ़ितर की नमाज के दौरान रसूलपुरा मस्जिद के इमाम मौलाना मुदस्सर जरी वाला ने ईद का मतलब समझाते हुए कहा कि जिस दिन गुनाहों से दूर रहा जाए, वहीं दिन ईद का दिन होता है। नमाज़ के बाद दुआओं में मुल्क में फैली महामारी महामारी से बचने के लिए दुआ की गई और समाजजनो को कर्फ़्यू की पालना और सोशल डिस्टेंडिंग की सख्त हिदायत दी गई।

इस बार नदारद रहा ईद का उत्सवी माहौल

समाज जनों ने इस अवसर पर घर पर सेवईया और मिठाइयां बनाई और सभी खुशियाँ घर पर ही मनाई। वहीँ दूसरी ओर ईद उल फ़ितर के अवसर पर जहाँ बोहरवाड़ी में आमतौर पर चहल पहल, रेलमपेल और उत्सव सा माहौल रहता है। वह इस बार नदारद रहा। सूनी सूनी गालियां कहीं से भी ईद का अहसास नहीं होने दे रही है।

बॉम्बे हाईकोर्ट ने केंद्र से कहा, डोर-टू-डोर टीकाकरण से कई लोगों की बच सकती थी जान

मुंबई । बॉम्बे हाईकोर्ट ने बुधवार को केंद्र से कहा कि जब वरिष्ठ नागरिकों के जीवन का संबंध है, तब डोर-टू-डोर टीकाकरण क्यों नहीं शुरू किया जाए। बॉम्बे हाईकोर्ट ने कहा कि अगर केंद्र सरकार डोर-टू-डोर टीकाकरण शुरू किया होता तो कई लोगों को बचाया जा सकता था। मुख्य न्यायाधीश दीपांकर दत्ता की खंडपीठ और जस्टिस जीएस कुलकर्णी ने केंद्र सरकार से पूछा कि क्यों ना इस कार्यक्रम को सक्रिय रूप से शुरू करें, क्योंकि कई वरिष्ठ नागरिक टीकाकरण केंद्रों में जाने में असमर्थ हैं। पीठ ने दो वकीलों ध्रुत कपाड़िया और कुणाल तिवारी द्वारा दायर की गई जनहित याचिका पर सुनवाई के दौरान यह बात कही। वरिष्ठ नागरिकों के लिए डोर-टू-डोर टीकाकरण सुविधा की मांग की गई थी। अदालत ने 22 अप्रैल के अपने पहले के आदेश को दोहराया। कोर्ट ने केंद्र सरकार को अपने फैसले पर ध्यान देने को कहा। इस मामले में अगली सुनवाई 19 मई को होगी। अदालत ने कहा कि कई देशों ने पहले से ही डोर-टू-डोर टीकाकरण की सुविधा शुरू कर दी। न्यायमूर्ति कुलकर्णी ने कहा कि भारत में हम कई चीजें देर से करते हैं। क्यों न डोर-टू-डोर टीकाकरण शुरू किया जाए। इधर, यूथ बार एसोसिएशन ऑफ इंडिया (वाईबीएआइ) ने गत दिनों घर-घर जाकर कोरोना टीकाकरण की खातिर नियम बनाने के लिए सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया था। वाईबीएआइ ने इसके लिए उचित कदम उठाने का निर्देश देने की मांग की है। कहा कि देश में रहने वाले बुजुर्ग, दिव्यांग, कमजोर तबके और अन्य ऐसे लोगों के लिए यह नियम बनाया जाना चाहिए, जो आनलाइन वैक्सीनेशन के लिए रजिस्ट्रेशन नहीं करा सकते।

वाईबीएआइ युवा और जागरूक वकीलों का संगठन है। इसने वकील सनप्रीत सिंह, अजमानी, कुलदीप राय, मंजू जेटली और बबली सिंह के जरिये सर्वोच्च न्यायालय में जनहित याचिका दायर की है। इन्होंने अपनी याचिका में कहा है कि प्रतिवादी को निर्देश दें कि वह बुजुर्गो, कमजोर तबके और ऐसे लोग जो आनलाइन रजिस्ट्रेशन नहीं करा सकते उन्हें घर-घर जाकर टीका देने पर विचार करे। याचिकाकर्ताओं ने प्रतिवादी को यह निर्देश देने का भी अनुरोध किया है कि वह एक पोर्टल बनाए, जिसके जरिये वंचित तबके के लोगों को खुद को रजिस्टर करने की सुविधा मिले। इसके साथ ही उनके सवालों और शंकाओं का भी इस पर उन्हें उनकी क्षेत्रीय भाषाओं में जवाब दिया जाए। इसके अलावा स्वास्थ्य कर्मियों, अगले मोर्चे के कर्मियों और 45 साल से अधिक उम्र के लोगों का सरकारी केंद्रों पर मुफ्त टीकाकरण जारी रहने देने की मांग की गई। याचिका में कहा गया कि सभी टीकाकरण राष्ट्रीय टीकाकरण कार्यक्रम के तहत करवाया जाना चाहिए।

गुजरात के भरूच के कोविड-19 स्पेशल हॉस्पिटल में आग पर अदालत ने गुजरात सरकार को लिया आड़े हाथ

अहमदाबाद । भरूच के कोविड-19 स्पेशल हॉस्पिटल में आग की घटना को लेकर उच्च न्यायालय ने राज्य सरकार से कहा कि फायर सेफ्टी को लेकर सरकार की कार्यवाही केवल कागजों पर ही नजर आती है। हाई कोर्ट की ओर से फायर सेफ्टी को लेकर 20 साल पहले आदेश जारी किए गए थे जिनका पालन नहीं किया गया यह अदालत की अवमानना जैसा है।

गुजरात उच्च न्यायालय में चल रही सुनवाई के दौरान न्यायाधीश ने कहा कि भरूच के पटेल वेलफेयर हॉस्पिटल में लगी आग की घटना के लिए किसी की तो जिम्मेदारी तय करनी पड़ेगी। भरूच महानगर पालिका को एक नोटिस जारी कर अदालत ने कहा कि किस अधिकारी ने इस अस्पताल का निरीक्षण किया उनकी रिपोर्ट में इसका स्पष्ट उल्लेख नहीं है। गांधीनगर में बैठे अधिकारियों को भरूच के अस्पताल की वस्तु स्थिति के बारे में जानकारी नहीं हो सकती है लेकिन राज्य सरकार की ओर से फायर सेफ्टी के लिए जारी दिशानिर्देश एवं उसकी सुविधाओं को लेकर जांच करना स्थानीय प्रशासन का काम है।

आखिर फायर सेफ्टी के अनापत्ति प्रमाण पत्र नहीं होने के बावजूद शहर में कोविड-19 अस्पताल का कैसे संचालन हो रहा था। अदालत ने सरकार को इस बात के लिए फटकार लगाई की जब अदालत के आदेशों की पालना ही नहीं होती है तो फिर न्यायिक जांच तथा आयोग गठन करने का क्या मतलब है। अदालत ने सरकार से यह भी पूछा कि भविष्य में इस तरह की आगजनी की घटना नहीं हो इसके लिए सरकार क्या कदम उठा रही है। याचिकाकर्ता अमित पंचाल ने अदालत को बताया कि अहमदाबाद के श्रेय हॉस्पिटल तथा राजकोट के शिवानंद अस्पताल मैं आग की घटना के बावजूद सरकार एवं स्थानीय भरूच प्रशासन ने वेलफेयर

कोविड-19 हॉस्पिटल के फायर सेफ्टी एनओसी की जांच को लेकर तत्परता नहीं दिखाई।

अदालत ने भरूच नगरपालिका, उसके चीफ ऑफिसर, फायर ऑफिसर, भरूच पटेल वेलफेयर हॉस्पिटल के नोडल ऑफिसर, डिस्ट्रिक्ट मेडिकल ऑफिसर आदि को नोटिस जारी कर आगामी 25 मई को होने वाली सुनवाई के दौरान जवाब पेश करने को कहा है। गौरतलब है कि गत 1 मई 2021 शुक्रवार को मध्यरात्रि भरूच के वेलफेयर हॉस्पिटल के कोविड वार्ड में आग लग गई थी जिसके कारण 16 कोरोना पीड़ित तथा दो नर्स की मौत हो गई थी।

इस हादसे में जख्मी हुई एक नर्स चार्मी गोहिल ने बाद में बताया कि वार्ड में लगे एक वेंटीलेटर में शार्ट सर्किट हुआ तथा अचानक आग लग गई। चार्मी की ड्यूटी 2 सप्ताह पहले ही इस वार्ड में लगाई गई थी तथा आग लगते ही वहां की बिजली बंद हो गई तथा अंधेरा छा गया, वह रास्ता जानती थी इसलिए मुख्य द्वार से बाहर निकल गई। लेकिन दो अन्य नर्स भाग कर बाथरूम में छिप गई जिसके कारण वे इस हादसे की शिकार हो गई।

पुलिस पर युवती को भगाने का आरोप, गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज

अहमदाबाद । गुजरात में अहमदाबाद के पॉश इलाके शाहीबाग में रहने वाली एक युवती ने शाहीबाग पुलिस थाने के निरीक्षक समेत चार पुलिसकर्मियों पर उसकी छोटी बहन को आणंद के हैदर नाम के युवक के साथ भगाने का आरोप लगाया है। शाहीबाग की एक युवती ने जॉन 4 के पुलिस उपायुक्त राजेश गढीया को सौंपी अपनी शिकायत में बताया कि शाहीबाग पुलिस थाने के निरीक्षक के डी जाडेजा व उप निरीक्षक पूनम चौधरी व दो अन्य पुलिसकर्मियों ने उसकी छोटी बहन को शाहीबाग पुलिस थाने से सिविल अस्पताल के ट्रॉमा सेंटर ले जाने के बहाने आणंद ले जाकर छोड़ दिया। उसने अपनी शिकायत में बताया कि इससे पहले जब 15 मार्च, 2021को उन्होंने उसकी बहन की गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई तो पुलिस ने जांच कर उसके आणंद में होने का पता लगाया। यहां वह हैदर नाम के एक युवक के साथ रह रही थी। पुलिस के साथ गए परिजनों ने जब वहां जाकर उससे मुलाकात की तो उसका स्वभाव पूरी तरह बदला हुआ था। अहमदाबाद पुलिस उसे अपने साथ लाई तथा शाहीबाग पुलिस थाना पर रखा।

शाहीबाग थाने के पुलिस निरीक्षक जाडेजा से जब पीड़ित परिवार के अन्य सदस्य मिलने पहुंचे तो उन्होंने परिवार को धमकाया और उन्हें बड़ी बहन से उसे मिलने भी नहीं दिया। दो पुलिसकर्मियों के साथ उसकी छोटी बहन को सिविल अस्पताल के ट्रॉमा सेंटर ले जाने के बहाने रवाना किया तथा वे उसे आणंद में हैदर के साथ छोड़ आए। आरोप है कि आणंद से उसकी बहन को अहमदाबाद लाने तक पुलिस व आरोपितों के बीच कोई बातचीत हुई। इसके चलते जाडेजा का रुख इस मामले में पूरी तरह बदल गया। उधर, पुलिस निरीक्षक जाडेजा का कहना है कि उसकी बहन ने पहले हैदर के साथ प्रेम विवाह किया तथा बाद में उसे छोड़कर उसने हैदर के साथ ही कार्यालय में काम करने वाले नडियाद के जय नामक लड़के के साथ विवाह कर लिया। कुछ दिनों बाद ही उसने जय पर मारपीट करने का आरोप लगाते हुए उसे छोड़ दिया तथा फिर से हैदर के साथ आकर रहने लगी।

पुलिस का कहना है कि युवती का दो बार विवाह हो चुका है तथा वह अपनी मर्जी से हैदर के साथ रह रही है, वह हैदर के साथ शादी कर चुकी है लेकिन पुलिस के पास उसके विवाह के कोई दस्तावेज मौजूद नहीं है। पुलिस को कुछ ऐसे कागजात दिखाए गए हैं, जिससे उसकी शादी होने की पुष्टि होती है।

महाराष्ट्र में कोरोना के 46781 नए मामले और 816 लोगों की मौत

मुंबई । महाराष्ट्र में पिछले 24 घंटे में कोरोना के 46781 नए मामले सामने आए, 58805 डिस्चार्ज हुए और 816 लोगों की मौतें हुई हैं। सक्रिय मामले 5,46,129 हैं। कुल मामले 52,26,710 हैं। कोरोना से अब तक कुल 78,007 लोगों की मौत हुई है। कुल 46,00,196 रिकवर हुए हैं। इससे पहले सोमवार को प्रदेश में कोरोना के 37236 नए मामले सामने आए, 549 लोगों की मौतें हुई और 61607 रिकवर हुए। कुल सक्रिय मामले 5,90,818 हैं। कुल संक्रमित मामले 51,38,973 हैं। कुल 76,398 लोगों को अब तक कोरोना से मौत हो चुकी है। कुल 44,69,425 रिकवर हुए हैं। वहीं, मुंबई में पिछले 24 घंटे में कोरोना के 1794 नए मामले सामने आए, 74 मौतें हुई और 3,580 रिकवर हुए हैं। कुल संक्रमित मामले 6,78,269 हैं। कुल सक्रिय मामले 45,534 हैं।

इससे पहले रविवार को महाराष्ट्र में कोरोना के 48401 नए मामले सामने आए, 60226 डिस्चार्ज हुए और 572 लोगों की मौतें हुई। सक्रिय मामले 6,15,783 हैं। कुल 44,07,818 डिस्चार्ज हुए। कोरोना से 75,849 की मौत हुई। वहीं, मुंबई में पिछले 24 घंटे में कोरोना के 2403 नए मामले सामने आए, 68 लोगों की मौतें हुई और 3375 रिकवर हुए। कुल मामले 6,76,475 हैं। कोरोना से 13,817 की मौत हुई है। कुल 6,13,418 रिकवर हुए। सक्रिय मामले 47,416 हैं। इससे पहले शनिवार को प्रदेश में कोरोना के 53605 नए मामले सामने आए, 82266 रिकवर हुए और 864 लोगों की मौतें हुई हैं। कुल मामले 50,53,336 हैं। कुल 43,47,592 रिकवर हुए। कोरोना से 75,277 लोगों की मौत हुई है। सक्रिय मामले 6,28,213 हैं। वहीं, मुंबई में कोरोना के 2678 नए मामले सामने आए, 3608 रिकवर हुए और 62 मौतें हुई हैं। कुल मामले 6,74,072 हैं। कुल 6,10,043 रिकवर हुए। कोरोना से 13,749 की मौत हुई। सक्रिय मामले 48,484 हैं। इससे पहले शुक्रवार को प्रदेश में कोरोना के 54022 नए मामले सामने आए, 37386 रिकवर हुए और 898 मौतें हुई हैं। कुल मामले 49,96,758 हैं। कुल 42,65,326 रिकवर हुए। कोरोना से 74,413 की मौत हुई। सक्रिय मामले 6,54,788 हैं।

वहीं, मुंबई में पिछले 24 घंटे में कोरोना के 3,039 नए मामले सामने आए, 4,052 रिकवर हुए और 71 मौतें हुई। कुल मामले 6,71,394 हो गए हैं, जिसमें 49,499 सक्रिय मामले हैं।

तारक मेहता का उल्टा चश्मा की बबीताजी ने ट्रोल होने के बाद मांगी माफी

यदि किसी शब्द का आप मतलब नहीं जानते हैं तो उसका इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। पर ये गलती लोकप्रिय टीवी धारावाहिक 'तारक मेहता का उल्टा चश्मा' में बबीताजी का किरदार अदा करने वाली एक्ट्रेस मुनमुन दत्ता कर गईं। जब उनके खिलाफ केस दर्ज करने की आवाज उठने लगी तो अब माफी मांग रही हैं। हुआ यूं कि उन्होंने एक वीडियो पोस्ट किया जिसमें लि?पस्टिक के रंग के बारे में वे बात कर रही थीं। इस दौरान उन्होंने पिछड़ी जाति के खिलाफ गलत शब्द बोल दिया कि मैं .... इसकी तरह नहीं दिखना चाहती। मुनमुन ने यह बोला और वीडियो वायरल हो गया। एससी-एसटी के नेताओं ने मुनमुन को गिरफ्तार करने की मांग की है। मुनमुन का कहना है ?कि उनका मकसद किसी को ठेस पहुंचाने का नहीं था। वे तो इस शब्द का मतलब भी नहीं जानती। माफी मांग रही हैं, लेकिन लोग मुनमुन को लगातार लताड़ लगा रहे हैं।

दिव्या खोसला ने लगवाई कोरोना वैक्सीन की पहली डोज

कोरोनावायरस ने पूरे देश में तबाही मचा रखी है। इस महामारी से लड़ने के लिए देश में वैक्सीनेशन का काम तेज हो गया है। कई सेलेब्स भी कोरोना वैक्सीन लगवा रहे है। हाल ही में एक्ट्रेस दिव्या खोसला कुमार ने भी कोरोना वैक्सीन की पहली डोज ले ली है। दिव्या खोसला कुमार ने सोशल मीडिया पर वैक्सीन लगवाते हुए एक वीडियो शेयर कर फैंस को इस बात कि जानकारी दी है। वीडियो को शेयर करने के साथ ही दिव्या ने अपने फैंस से भी कोविड वैक्सीन लेने की अपील भी की है। लेकिन इस वीडियो को शेयर करने के बाद दिव्या को ट्रोलिंग का सामना करना पड़ रहा है। दरअसल, वैक्सीन लगवाते हुए दिव्या ने अपना मास्क नीचे कर लिया था। जिसे लेकर सोशल मीडिया यूजर उन्हें ट्रोल कर रहे हैं। कई यूजर्स ने वीडियो के कमेंट सेक्शन में प्रतिक्रिया देते हुए एक्ट्रेस को मास्क पहनने की सलाह दी है। दिव्या खोसला ने इस वीडियो को शेयर करते हुए पोस्ट में लिखा, टीकाकरण पूरा, आज मैंने अपना पहला टीका ले लिया है, मैं आप सभी से आग्रह करती हूं कि आप भी अपना नामांकन करें, और वैक्सीन लगवा लें! हम सब इसमें एक साथ हैं, चलो टीकाकरण और दिशानिर्देशों का पालन करके वायरस को हराएं।

सफेद नागिन के अवतार में मौनी रॉय ने शेयर की तस्वीर

कोरोना वायरस की दूसरी लहर का प्रकोप पूरे भारत में त्रासदी मचा रहा है। कोरोना वायरस को कंट्रोल करने के लिए सरकारों ने लॉकडाउन लाया हुआ है। ऐसे में लोग अपने घरों में है। ऐसे में बॉलीवुड सितारें भी घर पर हैं और अपने फैंस का घर से ही मनोरंजन कर रहे हैं। टीवी की नागिन मौनी रॉय को अपने पुराने दिनों की याद आ रही है। उन्होंने सोशल मीडिया पर पुरानी तस्वीरें शेयर की है। मौनी रॉय ने मंगलवार (11 मई) को अपने इंस्टाग्राम टाइमलाइन पर कई थ्रोबैक तस्वीरें साझा कीं। तस्वीरें ऐसे समय में कैप्चर की गईं जब हालात ऐसे नहीं थे। इन फोटोज में मौनी काफी खुश नजर आ रही हैं और लगता है कि वह अपने दिन का आनंद ले रही हैं। मौनी रॉय ने कई तस्वीरें साझा कीं, जहां वह लंबी सफेद ड्रेस पहने नजर आ रही हैं। प्रतीत होता है कि तस्वीरें एक रेस्तरां में क्लिक की गई थीं मौनी ने तस्वीरों को कैप्शन दिया थ्रोबैक टू हैप्पी टाइम।

ईद पर आएगी फिल्म राधे? सलमान खान मे किया अपने फैंस से यह वादा

बॉलीवुड अभिनेता सलमान खान ने अपने प्रशंसकों से किया वादा पूरा करते हुए देश के कोविड-19 की दूसरी लहर की चपेट में होने के बावजूद अपनी फिल्म 'राधे - यॉर मॉस्टवॉन्टेड भाई' को ईद पर रिलीज करने का फैसला किया है। सलमान ने 'जूम राउंडटेबल' साक्षात्कार में सोमवार रात कहा कि जिन लोगों ने फिल्म 'मैंने प्यार किया' देखी है, वे उनसे प्यार करते हैं और अब उनके बच्चे भी उनसे प्यार करते हैं। मुंबई से उन्होंने कहा, '' मैं काफी खुशकिस्मत तथा कृतज्ञ हूं कि मेरे प्रशंसक बेहद वफादार हैं। दादा-दादी से माता-पिता... माता-पिता से नाती-पोते हर आयुवर्ग में मेरे प्रशंसक हैं।'' अभिनेता की फिल्म 13 मई को ओटीटी मंच 'डीटीएच' पर प्रसारित की जाएगी। फिल्म में सलमान मुंबई में मादक पदार्थों के गिरोह से निपटने वाले एक एनकाउंटर विशेषज्ञ की भूमिका निभा रहे हैं। फिल्म के सलमान की 2009 में आई फिल्म 'वॉन्टेड' का सीक्वल होने की अटकलों पर सलमान ने स्पष्ट किया कि यह एक नई कहानी और केवल किरदार का नाम एक है तथा वह भी अपने किए वादे पूरे करता है। साथ ही सलमान ने वक्त के साथ-साथ एक्शन के और चुनौतीपूर्ण होने की बात भी कही। उन्होंने कहा, '' मुझे पता नहीं कि एक्शन ज्यादा चुनौतीपूर्ण हो गया है या मेरे लिए यह चुनौतीपूर्ण हो गया है। लेकिन मैं अब भी इसे कर रहा हूं। मुझे लगता है कि आप जब तक एक्शन कर सकते हैं तब तक आप रोमांस कर सकते हैं। लोगों को एक्शन और रोमांस देखना पसंद है और मैं वहीं करने की कोशिश कर रहा हूं।'' फिल्म में सलमान के अलावा दिशा पटानी, रणदीप हुड्डा, जैकी श्रॉफ और गौतम गुलाटी भी नजर आएंगे।

अनन्या पांडे ने इंडस्ट्री में दो साल किए

अनन्या पांडे ने इंडस्ट्री में 2 साल पूरे कर लिए हैं। इन दो वर्षों में अभिनेत्री को आगे बढ़ते हुए और एक परफॉर्मर के रूप में बदलते हुए देखा है। अनन्या ने शो-बिज में पैर जमाने के बाद से हर बार खुद को साबित किया है। अपने सफर को दर्शाते हुए, अभिनेत्री ने साझा किया, पिछले दो वर्षों में यह एक शानदार सफर रहा है और मैं वास्तव में बहुत आभारी और धन्य हूं जो अपने सपने को जी रही हूं। अपने आस-पास के सभी लोगों के प्यार, प्रोत्साहन, ज्ञान और सलाह के बिना यहां होना संभव नहीं था। मैं उन सभी तकनीशियन, निर्देशकों, डीओपी और अभिनेताओं की हमेशा आभारी हूं, जिनके साथ मैंने काम किया है, क्योंकि मैंने उनमें से हर एक से बहुत कुछ सीखा है, जिन्हें मैं हमेशा याद रखूंगी। उन्होंने कहा, मेरे प्रशंसकों के बिना कुछ भी संभव नहीं था (मुझे यह शब्द को पसंद नहीं है, इसलिए मैं उन्हें अननियन्स नाम से संबोधित करूंगी- एक ऐसा शब्द जो उन्होंने खुद के लिए तैयार किया है) जो असीम प्यार वे मुझे हर दिन बरसाते हैं वह मुझे दोगुना काम करने के लिए प्रेरित करता है। मुझे उम्मीद है कि मैं आगे भी कड़ी मेहनत करती रहूंगी, अपने आप को चुनौती देती रहूंगी, कभी भी सीखना बंद नहीं करूंगी और फिल्म के सेट पर और भी बहुत सारे एडवेंचर के लिए तैयार हूं। अनन्या ने आगे कहा, यह बहुत कठिन समय है, ऐसे में सब जल्द से जल्द ठीक हो जाए ये आशा और प्रार्थना करती हूं और मैं सभी के लिए प्यार और प्रार्थना भेज रही हूं। उम्मीद है कि फिल्मों का जादू बहुत जल्द वापस आएगा।

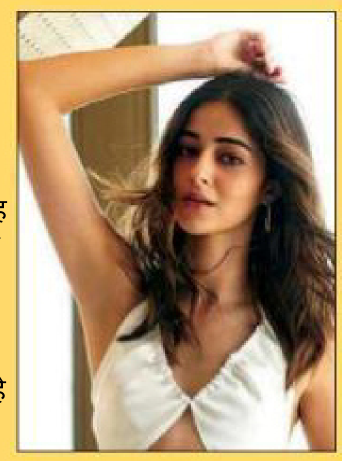

सदाशिव अमरापुरकरः आखिरी रास्ता देखने के बाद दर्शक उनसे नफरत करने लगे थे

सदाशिव अमरापुरकर को ज्यादातर हिंदी फिल्मों में खलनायकी करते देखा गया है। विलेन के रोल को निभाने के लिए उनके पास न हृष्ट-पुष्ट शरीर था और न ही दमदार आवाज, बावजूद इसके उन्होंने विश्वसनीयता के साथ खलनायकी के रंग दिखाए। पतली आवाज को संवाद अदायगी के जरिये बखूबी पेश करना और चेहरे पर ऐसे भाव लाना कि दर्शक उनसे नफरत करने लगे, सदा?शिव के अभिनय की खासियत थी। धर्मेन्द्र की एक फिल्म में सदाशिव ने भी अभिनय किया था। धर्मेन्द्र जब फिल्म डब कर रहे थे तो सदाशिव का अभिनय भी देख रहे थे। उन्होंने कहा कि यह फिल्म जरूर चलेगी क्योंकि सदाशिव की खलनायकी देख उन्हें ही गुस्सा आ रहा है तो दर्शक तो बैचेन हो जाएंगे। भेड़चाल के लिए प्रसिद्ध बॉलीवुड ने उन्हें ज्यादातर खलनायक की भूमिका ही निभाने को दी, लेकिन सदाशिव को सिर्फ 'खलनायक' की भूमिका में बांधना उनके प्रतिभा के साथ न्याय करना नहीं होगा। मराठी नाटकों और फिल्मों में उन्होंने कई तरह के चरित्र निभाए। 11 मई 1950 को जन्मे सदाशिव अमरापुकर का वास्तविक नाम गणेशकुमार नरवाड़े था। पहले उनका रुझान गायकी की ओर था, लेकिन बाद में उन्होंने अभिनय में करियर बनाने का निश्चय किया। 1974 में जब वे नाटक करने लगे तो अपना नाम बदल लिया। मराठी नाटक 'आमरस' से वे चर्चा में आए और मराठी फिल्मों में व्यस्त हो गए। 1982 में वे 'हैंड्स अप' नामक नाटक कर रहे थे और दर्शकों में गोविंद निहलानी बैठे हुए थे। गोविंद उस समय अपनी फिल्म 'अर्धसत्य' के लिए कलाकार चुन रहे थे। सदाशिव का अभिनय उन्हें इतना पसंद आया कि उन्होंने 'अर्द्धसत्य' में सदाशिव को अहम रोल सौंप दिया। इस फिल्म में रामा शेट्टी के रूप में सदाशिव का अभिनय देख दर्शक दंग रह गए और सदाशिव रातों-रात प्रसिद्ध हो गए। ओम पुरी जैसे विश्वस्तरीय अभिनेता के सामने सदाशिव अपने अभिनय की छाप छोड़ने में सफल रहे। अर्द्धसत्य के बाद हिंदी फिल्मों ने सदाशिव को हाथों-हाथ लिया और सदाशिव ने ढेर सारी फिल्में साइन की। उन्होंने हास्य तथा चरित्र भूमिकाएं भी निभाईं। इनमें से कई फिल्मों में वे महत्वहीन रोल में भी नजर आएं। सदाशिव ने खलनायक के रूप में कई यादगार भूमिकाएं की और उस दौर के सुपरस्टार्स से टक्कर लेते नजर आए। 'हुकूमत' (1987) में उन्होंने धर्मेन्द्र से टक्कर ली। 1986 में प्रदर्शित फिल्म आखिरी रास्ता में उन्होंने अमिताभ बच्चन के लिए मुश्किलें पैदा की। आखिरी रास्ता देखने के बाद कई दर्शक उनसे नफरत करने लगे थे। खतरों के खिलाड़ी (1988), सच्चे का बोलबाला (1989), ईश्वर (1989), एलान-ए-जंग (1989), वीरू दादा (1990), फरिश्ते (1991), इज्जत (1991) जैसी सफल फिल्मों का वे हिस्सा बने। 1991 में आई प्रदर्शित 'सड़क' में सदाशिव अमरापुरकर के करियर की श्रेष्ठ फिल्मों में से एक है। उन्होंने एक किन्नर का रोल निभाया जिसके लिए उन्हें आज भी याद किया जाता है। इस रोल के लिए उन्हें फिल्मफेअर पुरस्कार भी मिला। सन् 2000 तक सदाशिव फिल्मों में काफी व्यस्त रहे। उन्होंने कई हिंदी फिल्मों के अलावा मराठी, बंगाली और उड़िया फिल्मों में अभिनय के रंग बिखेरे। बाद में उन्होंने अभिनय से दूरी बना ली और दो वर्ष तक अमेरिका में रहे। इस दौरान उन्होंने काम नहीं किया। टीवी धारावाहिक 'शोभा सोमनाथ की' के जरिये उन्होंने अभिनय की दुनिया में वापसी की। श्याम बेनेगल के धारावाहिक 'राज से स्वराज' तक में उन्होंने लोकमान्य तिलक का किरदार निभाया। बेनेगल के धारावाहिक 'भारत एक खोज' में उन्होंने ज्योतिबा फुले का रोल निभाया। बड़े परदे पर अंतिम बार वे 'बॉम्बे टॉकीज' (2013) में दिबाकर बैनर्जी द्वारा निर्देशित फिल्म में दिखाई दिए। यह रोल उन्होंने अपनी बेटी के कहने पर किया था। फेफड़ों के इंफेक्शन के कारण कुछ समय वे अस्पताल में भर्ती रहे और 3 नवंबर 2014 को उन्होंने अंतिम सांस ली।

टीम इंडिया के लिए खतरे की घंटी:साउथैम्पटन में इस काउंटी सीजन के 3 मैचों में 2 बार 80 से कम के स्कोर पर ऑलआउट हो चुकी हैं टीमें

साउथैम्पटन। टीम इंडिया को 18 से 22 जून तक ICC वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल में न्यूजीलैंड का सामना करना है। यह मैच इंग्लैंड के साउथैम्पटन शहर के द एजेस बाउल में खेला जाना है। भारतीय टीम के लिए यह ग्राउंड अब तक अच्छा साबित नहीं हुआ है। यहां टीम इंडिया ने दो मैच खेले हैं और दोनों में उसे हार झेलनी पड़ी है। इसके अलावा इस काउंटी सीजन में वहां जिस तरह के मुकाबले हो रहे हैं, वह भी टीम इंडिया के लिए खतरे की घंटी है।

पहले मैच में मिडिलसेक्स की टीम 79 पर ढेर हुई

एजेस बाउल में इस काउंटी सीजन के पहले मैच (15 से 18 अप्रैल) में मिडिलसेक्स की टीम सिर्फ 79 रन के स्कोर पर सिमट गई थी। पहले बल्लेबाजी करते हुए मेजबान हैम्पशायर की टीम ने 319 रन बनाए थे। जवाब में मिडिलसेक्स की पारी बिखर गई। हैम्पशायर की ओर से खेलते हुए पाकिस्तान के स्विंग बॉलर मोहम्मद अब्बास ने 6 विकेट लिए थे। इसके बाद हैम्पशायर ने अपनी दूसरी पारी 290/4 के स्कोर पर घोषित कर दी। मिडिलसेक्स की टीम दूसरी पारी में 281 रन पर ऑलआउट हो गई और मेजबान टीम ने यह मुकाबला 249 रन से जीत लिया।

तीसरे मैच में मेजबान की टीम 79 पर सिमट गई

ऐसा नहीं है कि इस ग्राउंड पर सिर्फ विपक्षी टीम को मुश्किल हो रही है। तीसरे मैच में समरसेट के खिलाफ खुद हैम्पशायर की टीम 79 रन पर सिमट गई। इस पारी में भी मीडियम पेसर स्विंग गेंदबाजों का दबदबा रहा। लेविस ग्रेगरी ने 26 रन देकर 4 विकेट लिए। क्रेग ओवर्टन और जॉश डेवी ने 2-2 विकेट लिए। ये दोनों भी मीडियम पेसर हैं।

एक देश की एक साथ 2 क्रिकेट टीमें:भारत की तरह अन्य देश भी अपना सकते हैं यह मॉडल, विशेषज्ञ बोले- ऐसा करना समय की मांग

नई दिल्ली। टीम इंडिया जुलाई में वनडे और टी-20 सीरीज खेलने श्रीलंका दौरे पर जाएगी। हालांकि उस समय भारत की 20 सदस्यों वाली एक टीम इंग्लैंड में भी होगी, जो अगस्त-सितंबर में मेजबान टीम से पांच टेस्ट मैचों की सीरीज खेलेगी। यानी एक ही समय में भारत की दो टीमें अलग-अलग सीरीज के लिए अलग-अलग देशों में होगी।

माना जा रहा है कि कई अन्य देश भी आने वाले दिनों में इस मॉडल को अपना सकते हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि ऐसा करना समय की मांग है। चलिए जानने की कोशिश करते हैं कि क्या नियमित तौर पर ऐसा करना संभव है। क्या पहले भी कभी एक समय में एक देश की दो टीमें हुई हैं और सबसे बड़ी बात ये कि ऐसा करना अब क्यों जरूरी है?

1998 में एक टीम पाकिस्तान से खेल रही थी और दूसरी कॉमनवेल्थ गेम्स में

भारत ने पहले भी एक समय में दो अलग-अलग टीमें बनाई हैं। ऐसा 1998 में हो चुका है। उस समय भारत की एक टीम पाकिस्तान के खिलाफ कनाडा में वनडे सीरीज खेल रही थी। वहीं, अजय जडेजा की कप्तानी में दूसरी टीम मलेशिया में कॉमनवेल्थ गेम्स में हिस्सा ले रही थी। पाकिस्तान ने भी दो अलग-अलग टीमें बनाई थीं। इसी साल फरवरी-मार्च में ऑस्ट्रेलिया भी दो टीमें बनाने की तैयारी में था। एक टीम न्यूजीलैंड के साथ सीमित ओवर के मैचों की सीरीज खेल रही थी। वहीं, दूसरी टीम को टेस्ट सीरीज के लिए साउथ अफ्रीका के दौरे पर जाना था। हालांकि उस समय साउथ अफ्रीका में कोरोना महामारी के प्रकोप के कारण दौरा रद्द कर दिया गया।

क्रिकेटर्स को वैक्सीन:स्मृति मंधाना टीका लगवाने वाली पहली महिला खिलाड़ी, बुमराह समेत 4 और प्लेयर्स ने भी कोरोना वैक्सीन की पहली खुराक ली

नई दिल्ली । भारतीय क्रिकेटर्स ने भी कोरोना के खिलाफ जंग छेड़ दी है। भारतीय वुमन्स टीम की ओपनर स्मृति मंधाना, मेन्स टीम के तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह, दिनेश कार्तिक, दीपक चाहर और सिद्धार्थ कौल ने मंगलवार को वैक्सीन लगवाई। इसके साथ ही इन्होंने फैन्स से सुरक्षित रहने और वैक्सीनेशन करवाने की भी अपील की। इससे पहले विराट कोहली, उमेश यादव, ईशांत शर्मा और चेतेश्वर पुजारा ने भी वैक्सीन लगवाई थी।

मंधाना टीका लगवाने वाली पहली महिला प्लेयर

मंधाना टीका लगवाने वाली वुमन्स क्रिकेट टीम की पहली प्लेयर हैं। उन्होंने सोशल मीडिया पर फोटो शेयर कर इसकी जानकारी दी। साथ ही लोगों से भी वैक्सीन लगवाने की अपील की। भारतीय मेन्स टीम के साथ-साथ वुमन्स टीम भी इंग्लैंड का दौरा करेगी। वुमन्स टीम इंग्लैंड में 16 जून से 15 जुलाई के बीच 1 टेस्ट, 3 वनडे और 3 टी-20 खेलेगी। मंधाना भी इस टीम का हिस्सा हैं। इसके बाद वह द हंड्रेड टूर्नामेंट में भी हिस्सा लेंगी। यह टूर्नामेंट 21 जुलाई से 21 अगस्त तक चलेगा।

बुमराह ने इंग्लैंड टूर से पहले टीका लगवाया

वहीं, भारतीय तेज गेंदबाज बुमराह ने पहला डोज लिया। उन्होंने कैप्शन में लिखा कि मैंने वैक्सीन ले ली है। आप सभी लोग सुरक्षित रहें। वे इंग्लैंड दौरे पर जाने वाली टीम में से वैक्सीन लेने वाले छठे खिलाड़ी हैं। टीम 2 जून को इंग्लैंड के लिए रवाना होगी और वहां 18 से 22 जून के बीच न्यूजीलैंड के खिलाफ साउथैम्प्टन में वर्ल्ड टेस्ट चैम्पियनशिप का फाइनल खेलेगी। इसके बाद टीम इंडिया को करीब डेढ़ महीने च में गुजारना है। 4 अगस्त से इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट सीरीज की शुरुआत होगी। कोलकाता नाइट राइडर्स के विकेटकीपर दिनेश कार्तिक ने भी वैक्सीन की पहली खुराक ली।

आनंद ऑनलाइन मैच खेलकर जुटाएंगे धन

नई दिल्ली। पांच बार के विश्व चैंपियन विश्वनाथन आनंद और चार अन्य ग्रैंडमास्टर कोरोना राहत कोष के लिए धन जुटाने के लिए दूसरे शतरंज खिलाड़ियों के साथ ऑनलाइन शतरंज मैच खेलेंगे।

चेस डॉट कॉम ब्लिटज धारक या 2000 से कम फिडे रेटिंग वाले खिलाड़ी करीब 11000 रुपये (150 डॉलर) दान देकर आनंद के साथ खेल सकते हैं। बाकी ग्रैंडमास्टर्स के साथ खेलने के लिए करीब 1800 रुपये (25 डॉलर) देने होंगे। दानराशि नुमाइशी मैचों के दौरान भी स्वीकार की जाएगी। मैच शाम साढ़े सात बजे से चेस डॉट कॉम पर प्रसारित किए जाएंगे। वेबसाइट ने कहा कि वह भी दानराशि के समान रकम कोष में देगी। मैच में आनंद के अलावा

कोनेरू हंपी, डी हरिका, निहाल सरीन और पी रमेशबाबू भाग लेंगे। इससे एकत्र होने वाली सारी राशि रेडक्रॉस इंडिया और भारतीय शतरंज महासंघ के चेकमेट कोविड अभियान को जाएगी।

हमारी तरफ से छोटा सा योगदान है यह

'हमें पता है कि भारत कोरोना संकट से जूझ रहा है। इस समय हम सभी किसी ना किसी रूप में प्रभावित हैं। ऐसा कोई भी नहीं है जिस पर इसका असर नहीं हुआ है। हम सभी को कोरोना राहत कोष में योगदान देना चाहिए। आप भारत के सर्वश्रेष्ठ ग्रैंडमास्टर्स के साथ खेल सकते हैं और चेस डॉट कॉम पर दान दे सकते हैं। यह शतरंज समुदाय की ओर से छोटा सा योगदान है। उम्मीद है कि आप सभी इसमें बढ़-चढ़कर भाग लेंगे।' -विश्वनाथन आनंद

हॉकी: अमित रोहिदास बोले, यूरोप-अर्जेंटीना दौरे पर वीडियो विश्लेषण से मदद मिली

नई दिल्ली। भारतीय पुरुष हॉकी टीम के डिफेंडर अमित रोहिदास का मानना है कि यूरोप और अर्जेंटीना दौरे पर तैयारियों के दौरान वीडियो विश्लेषण के इस्तेमाल का उनकी टीम की कामयाबी में बड़ा हाथ रहा। उन्होंने कहा कि वीडियो विश्लेषण से राष्ट्रीय शिविर में खिलाड़ियों को अपनी गलतियों का पता चल जाता है।

उन्होंने कहा, 'वीडियो विश्लेषण से हमें दोनों दौरों पर मदद मिली।

हमने विरोधी टीम के खेलने के तरीके, आक्रमण और डिफेंस में उनके मूवमेंट और हालात के अनुरूप खुद को ढालने में मदद मिली। हमें मैदान पर उतना अनुभव नहीं था लेकिन हमने होमवर्क अच्छा किया। वीडियो विश्लेषण से काफी मदद मिली।'

रोहिदास इस समय भारतीय खेल प्राधिकरण केंद्र पर सीनियर पुरुष टीम के कोर समूह के साथ अभ्यास कर रहे हैं। उन्होंने कहा, 'शिविर में भी वीडियो विश्लेषण की मदद से हमें उन क्षेत्रों पर काम करने में मदद मिली जिनमें

सुधार की जरूरत है। इससे ओलंपिक की तैयारियों को लेकर काफी फायदा हो रहा है।'

यूरोप दौरे पर अजेय रही थी टीम

भारतीय टीम मार्च में यूरोप दौरे पर अपराजेय रही। भारत ने जर्मनी को 6-1 से हराने के बाद 1-1 से ड्रॉ खेला। इसके बाद ब्रिटेन से 1-1 से ड्रॉ खेलने के बाद 3-2 से जीत दर्ज की। अर्जेंटीना दौरे पर दोनों अभ्यास मैचों के अलावा एफआईएच प्रो लीग के भी दोनों मैच जीते। एक साल के ब्रेक के बाद अंतरराष्ट्रीय हॉकी खेलने वाले सुंदरगढ़ के इस खिलाड़ी ने कहा ,'मैं इस मानसिकता के साथ गया था कि कुछ असाधारण नहीं करना है। मुझे वही सब दोहराना है जो अभ्यास सत्रों के दौरान हम कर रहे थे।'

व्यस्त कार्यक्रम: आईपीएल के शेष सत्र से इंग्लैंड हटा

नई दिल्ली। इंग्लैंड क्रिकेट टीम का जून के बाद कार्यक्रम काफी व्यस्त है और अगर आईपीएल के बचे हुए मैच इस साल नए सिरे से आयोजित होते हैं तो इंग्लैंड के क्रिकेटर नहीं खेल सकेंगे। ईसीबी के क्रिकेट निदेशक एशले जाइल्स ने यह जानकारी दी।

आईपीएल बायो बबल में कोरोना संक्रमण के मामले आने के बाद लीग पिछले सप्ताह अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दी गई। अब इसे या तो सितंबर के आखिर में टी20 विश्व कप से पहले या नवंबर के मध्य में आयोजित किया जा सकता है। इंग्लैंड के शीर्ष क्रिकेटर दोनों समय व्यस्त होंगे। उन्हें सितंबर और अक्तूबर में बांग्लादेश और पाकिस्तान जाना है जबकि टी20 विश्व कप के ठीक बाद एशेज शृंखला खेली जाएगी।

जाइल्स ने ईएसपीएन क्रिकइन्फो से कहा ,'हमारा भविष्य दौरा कार्यक्रम (एफटीपी) काफी व्यस्त है। बांग्लादेश और पाकिस्तान का दौरा है।' जाइल्स ने इन सुझावों को खारिज किया कि ईसीबी ने अपनी रणनीति में बदलाव किया है जिसने पहले कहा था कि आईपीएल खेलने के कारण उसके खिलाड़ी जून में न्यूजीलैंड के खिलाफ टेस्ट शृंखला से बाहर रह सकते हैं।

जाइल्स ने कहा, 'न्यूजीलैंड का परिदृश्य अलग था। उस शृंखला का कार्यक्रम जनवरी के आखिर में बना था और तब तक खिलाड़ियों को आईपीएल खेलने के लिए अनापत्ति प्रमाण पत्र मिल चुके थे।' जाइल्स ने कहा कि इंग्लैंड के खिलाड़ी आईपीएल के पुनर्निधारित कार्यक्रम का हिस्सा बनने के लिए अपना अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रम नहीं छोड़ेंगे। इंग्लैंड के विभिन्न प्रारूपों में खेलने वाले कई खिलाड़ियों को श्रीलंका और भारत के तीन महीने के दौरे पर आराम देने के बारे में जाइल्स ने कहा कि इसका आईपीएल से कोई लेना-देना नहीं है।

हमने खिलाड़ियों को आराम देने और बारी-बारी (रोटेशन) से मौका देने का फैसला अपने कार्यक्रम की जानकारी की उपलब्धता के आधार पर किया। हमने उन्हें आईपीएल के लिए आराम नहीं दिया था। हमारा मानना था कि श्रीलंका और भारत में लगातार तीन महीने जैव सुरक्षा चक्र (बायो बबल) में रहना बेहद मुश्किल होगा।

'हमें नहीं पता कि आईपीएल के बाकी मैचों का कार्यक्रम क्या होगा और ये कब और कहां होंगे। इस सत्र में न्यूजीलैंड के खिलाफ मैचों से हमारा कार्यक्रम काफी व्यस्त है। हमें टी20 विश्व कप और उसके बाद एशेज शृंखला खेलनी है। अपने खिलाड़ियों के कार्यभार का भी ध्यान रखना है।'- एश्ले जाइल्स, क्रिकेट निदेशक, इंग्लैंड एंड वेल्स क्रिकेट बोर्ड

नए सत्र के लिए दो विंडो

भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड के अध्यक्ष सौरव गांगुली दो बात कह चुके हैं। पहली तो आईपीएल-14 का दूसरा सत्र भारत में करना संभव नहीं होगा और दूसरा बोर्ड की निगाह दो विंडो पर हैं। पहली विश्व कप से पहले सितंबर के दूसरे हाफ में और दूसरी विश्व कप के बाद नवंबर के मध्य में। ईसीबी ने कह दिया है कि दोनों विंडो के लिए इंग्लैंड के क्रिकेटर व्यस्त रहेंगे।

इटालियन ओपन : नडाल की टक्कर सिनेर से, दूसरी बार भिड़ेंगे दोनों

नई दिल्ली। पपिछले हफ्ते मैड्रिड ओपन के क्वार्टर फाइनल में जर्मनी के अलेक्जेंडर ज्वेरेव के हाथों शिकस्त का सामना करने वाले राफेल नडाल इटालियन ओपन के अपने शुरुआती मुकाबले में 19 वर्षीय स्थानीय खिलाड़ी यानिक सिनेर का सामना करेंगे। दुनिया के नंबर तीन खिलाड़ी नडाल दो साल से मास्टर्स 1000 खिताब नहीं जीत पाए हैं। मैड्रिड ओपन के अंतिम8 में हार के बाद वह रैंकिंग में फिर से तीसरे स्थान पर खिसक गए। नडाल नौ बार रिकॉर्ड रोम में खिताब जीत चुके हैं जबकि 11 बार फाइनल खेल चुके हैं। नडाल और सिनेर के बीच यह दूसरी भिड़ंत होगी।

इससे पहले दोनों पिछले साल फ्रेंच ओपन के क्वार्टर फाइनल में खेले थे जहां नडाल ने बाजी मारी थी। सिनेर ने पहले दौर में फ्रांस के युगो हंबर्ट को आसानी से 6-2, 6-4 से मात दी। अन्य मैचों में डेनिस शापोवालोव ने कैमिल को 6-1,6-3 से और कैमरून नौरी ने रॉबर्टो कारवेल्लस को 6-4,6-4 से हराकर दूसरे दौर का टिकट कटाया। जापानी खिलाड़ी केई निशिकोरी को पाब्लो कैरेनो बुस्ता ने वॉकओवर दे दिया।

सेरेना के सामने नादिया

रोम में चार बार की चैंपियन 39 वर्षीय सेरेना विलियम्स का सामना अर्जेंटीना की नादिया पोडोरोस्का से होगा। पोडोरोस्का ने पहले दौर में जर्मनी की लौरा सिगमुंड को तीन सेट के मुकाबले में 2-6, 7-6, 6-1 से

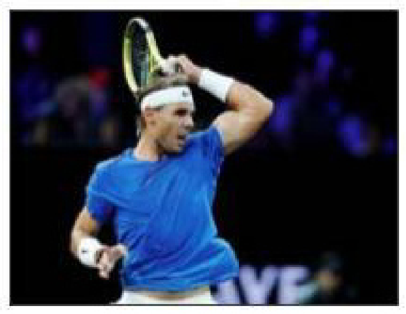

पराजित किया। सेरेना और नादिया पहली बार एक-दूसरे के खिलाफ खेलेंगी।

तीन माह बाद अपना पहला टूर्नामेंट खेलने जा रही सेरेना का यह रिकॉर्ड 54वां मैच होगा। वह इस टूर्नामेंट में सर्वाधिक मैच खेलने वाली खिलाड़ी बन जाएंगी। अन्य मैचों में दुनिया की नंबर एक खिलाड़ी एशले बार्टी की भिड़ंत यारोस्लावा श्वेदोवा से, नाओमी ओसाका का जेसिका पेगुला से और कोको गॉफ का मारिया सकारी से होगा।

गार्सिया व पेरा जीतीं

कैरोलिना गार्सिया ने एलिसबेट्टा कोकिएरेटो को 7-6, 6-2 से और बर्नार्डा पेरा ने जिदानसेक को 6-3,6-2 से शिकस्त देकर दूसरे दौर में जगह बनाई। गर्बाइने मुगुरुजा ने पेट्रीसिया मारिया को 6-1, 6-2 से और मेडिसन कीज ने स्लोएने स्टीफंस को 4-6, 6-2, 7-5 से हराया।

नडाल का ओलंपिक में खेलना तय नहीं

नडाल ने स्वीकार किया है कि वह सुनिश्चित नहीं हैं कि टोक्यो ओलंपिक में हिस्सा लेंगे या नहीं। खेलों के महाकुंभ की शुरुआत से कुछ महीने पहले तक भी जापान में महामारी नियंत्रण में नहीं है। उन्होंने कहा,'सामान्य समय में ओलंपिक खेल हमेशा मेरी मुख्य प्राथमिकता होते थे।

मौजूदा समय में ओलंपिक अब भी प्राथमिकता है लेकिन चीजें बदल गई हैं। हम लगभग डेढ़ साल से इस महामारी से जूझ रहे हैं और मैं सिर्फ इतना कह सकता हूं कि मैं फैसला थोड़े समय को ध्यान में रखकर लूंगा। मैं अगले छह महीने नहीं बल्कि कुछ हफ्तों का ही कार्यक्रम बना रहा हूं। यह सब कुछ बदलती चीजों पर निर्भर करेगा। मेरा शरीर और दिमाग कैसे प्रतिक्रिया देता है क्योंकि मैं पहले ही 35 बरस का हो चुका हूं।'

स्पिनर कनेरिया ने कहा- टीम इंडिया को चाहर को टीम में चुनना चाहिए था

कराची। पाकिस्तान के पूर्व लेग स्पिनर दानिश कनेरिया का मानना है कि भारत को न्यूजीलैंड के खिलाफ विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल के लिए टीम में किसी कलाई के स्पिनर का चयन करना चाहिए था। उनकी नजर में युवा राहुल चाहर ऐसे में उपयोगी साबित हो सकते थे। उन्होंने कराची से कहा, भारत ने मजबूत टीम का चयन किया है। कुल मिलाकर उनकी टीम अच्छी है, लेकिन ध्यान देने वाली बात यह है कि उन्होंने कलाई के स्पिनर का चयन नहीं किया है।

इंग्लिश काउंटी एसेक्स की तरफ से खेल चुके कनेरिया ने कहा कि इंग्लैंड की परिस्थितियां लेग स्पिनरों के अनुकूल होती हैं। उन्होंने कहा, उनके पास रविचंद्रन अश्विन, वाशिंगटन सुंदर, अक्षर पटेल और रविंद्र जडेजा के रूप में अंगुलियों के स्पिनर हैं लेकिन उनके पास कलाई का स्पिनर-दाएं हाथ का लेग स्पिनर नहीं है। जब आप इंग्लैंड में खेलते हो तो वहां काफी नमी रहती है। मुझे वहां खेलने का काफी अनुभव है। मैंने विभिन्न परिस्थितियों में आठ साल काउंटी क्रिकेट खेला है। कनेरिया ने कहा कि राहुल चाहर के कद और गेंदबाजी करने के तरीके को देखते हुए उन्हें टीम में होना चाहिए था। न्यूजीलैंड के पास ईश सोढ़ी के रूप में लंबे कद का लेग स्पिनर है और विराट कोहली हमेशा लेग स्पिनर के सामने संघर्ष करता है जैसे कि हमने एडम जंपा के मामले में देखा। राहुल गुगली, फ्लिपर और लेग स्पिन करता है इसलिए वहां अच्छा करता।'

अमेरिका के लिए खेलेंगे उन्मुक्त चंद? अंडर-19 विश्वकप जिताने वाले बल्लेबाज ने दिया ये जवाब

नई दिल्ली। दरअसल, अमेरिका में क्रिकेट को बढ़ावा देने के लिए एक टी-20 लीग शुरू किए जाने की चर्चा है। वहीं, उन्मुक्त चंद हाल ही में अमेरिका की यात्रा पर भी गए हैं। पाकिस्तान के क्रिकेटर समी असलम ने दावा किया है कि उन्मुक्त, अमेरिका वहां अपना क्रिकेट करियर बनाने गए हैं। इन दोनों बातों के सामने आने के बाद ऐसी चर्चाएं शुरू हो गई कि उन्मुक्त चंद अब अमेरिका की ओर से क्रिकेट खेलेंगे।

हालांकि, उन्मुक्त चंद ने इन खबरों को अफवाह बताया है। मीडिया से बात करते हुए उन्होंने कहा कि मैं अमेरिका केवल अपने रिश्तेदारों से मुलाकात करने गया था। वहां मैंने एक-दो दिन बल्लेबाजी का अभ्यास भी किया क्योंकि मैंने एक ट्रेनिंग सेशन (प्रशिक्षण सत्र) में हिस्सा लिया था। लेकिन मैंने अनुबंध जैसी कोई चीज नहीं की। उन्मुक्त ने कहा कि मेरी अमेरिका की यह यात्रा केवल घूमने के उद्देश्य से थी।

क्या कहते हैं बीसीसीआई के नियम

बीसीसीआई के नियमों के अनुसार कोई भी भारतीय खिलाड़ी (अनुबंधित या गैर अनुबंधित) देश के बाहर किसी फ्रेंचाइजी में बिना संन्यास की घोषणा किए हिस्सा नहीं ले सकता है। वह संन्यास लेने के बाद की विदेशी लीग में खेल सकता है। इसी नियम के चलते युवरा सिंह को एक विदेशी टी-20 लीग में हिस्सा लेने के लिए संन्यास लेना पड़ा था। वहीं, हरभजन सिंह को एक टूर्नामेंट से नाम वापस लेना पड़ा था। अंडर-19 क्रिकेट विश्वकप जिताने के बाद उन्मुक्त का करियर वैसा नहीं रहा जैसे की उम्मीद थी। वह घरेलू क्रिकेट खेल रहे हैं और राष्ट्रीय टीम में जगह बनाने की कोशिशों में जुटे हैं। उनका रिकॉर्ड देखें तो उन्होंने 67 प्रथम श्रेणी के मैच खेले हैं, जिनमें 3379 रन बनाए हैं। उन्होंने लिस्ट ए के 120 मैच खेले हैं और 4505 रन बनाए हैं।

इंडिया बनाम श्रीलंका: जुलाई में होने वाले मैच के लिए हार्दिक-शिखर में कप्तानी की होड़

लंदन। भारत को दौरे में तीन एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय मैचों के अलावा इतने ही टी20 मैचों में हिस्सा लेना है। दौरे की शुरुआत 13 जुलाई से होने वाली वनडे सीरीज से होगी तब जबकि विराट कोहली, और रोहित शर्मा सहित कई अन्य भारतीय सितारे इंग्लैंड के साथ पांच मैचों की टेस्ट सीरीज में व्यस्त होंगे।

भारतीय टीम के चयन मामलों से जुड़े एक सूत्र का कहना है कि अभी यह स्पष्ट नहीं है कि श्रेयस अय्यर श्रीलंका दौरे के लिए मैच फिट हो पाएंगे या नहीं। जिस तरह की चोट श्रेयस को लगी है उसमें सर्जरी के बाद फिटनेस की लंबी प्रक्रिया (रिहैब) के अलावा बड़े अभ्यास की भी जरूरत पड़ती है और ऐसे में आमतौर पर चार महीने का समय लग जाता है। यदि श्रेयस फिट हो जाते हैं तो वह स्वतः पहली पसंद होंगे। अन्यथा 35 साल के शिखर धवन और जूनियर पंड्या (हार्दिक) कप्तानी की दावेदारी में होंगे।

सूत्र ने कहा, 'शिखर का पिछले आईपीएल और इस सत्र के मैचों में अच्छा प्रदर्शन रहा है । वह सीनियर बल्लेबाज हैं और चयन के लिए उपलब्ध रहेंगे। वह कप्तानी के मजबूत दावेदार हैं। इसके अलावा पिछले आठ वर्षों में उन्होंने भारत की तरफ से भी बहुत अच्छा प्रदर्शन किया है।

जहां तक हार्दिक का सवाल है तो सीमित ओवरों की क्रिकेट में उनकी मैच विजेता की छवि को कम करके नहीं आंका जा सकता है। उन्होंने कहा, 'हां, हार्दिक ने हाल में मुंबई इंडियंस और भारत की तरफ से गेंदबाजी नहीं की लेकिन वह टीम के लिए तुरुप का इक्का है। प्रभाव छोड़ने वाले खिलाड़ियों में वह अपने साथियों से काफी आगे है। और कौन जानता है कि अतिरिक्त जिम्मेदारी मिलने से वह अपना अब तक का

सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने में सफल रहे।

पंड्या का फोकस बल्लेबाजी पर

हार्दिक को इंग्लैंड के खिलाफ चार टेस्ट मैचों की घरेलू सीरीज के लिए शामिल किया गया था ताकि उनका गेंदबाजी का कार्यभार बढ़ाया जा सके। पर माना जा रहा है कि बड़ौदा के क्रिकेटर के निकट भविष्य में ज्यादा गेंदबाजी की संभावना नहीं है। वह सीमित ओवरों में एक-दो ओवर जरूर फेंक सकते हैं। बोर्ड के सूत्र ने कहा कि

सूत्र ने कहा, 'शिखर का पिछले आईपीएल और इस सत्र के मैचों में अच्छा प्रदर्शन रहा है । वह सीनियर बल्लेबाज हैं और चयन के लिए उपलब्ध रहेंगे। वह कप्तानी के मजबूत दावेदार हैं। इसके अलावा पिछले आठ वर्षों में उन्होंने भारत की तरफ से भी बहुत अच्छा प्रदर्शन किया है।

पीठ की सर्जरी के बाद हार्दिक स्ट्रेस फ्रेक्चर से उबर रहे हैं। सर्जरी से पहले वह मध्य तेज गति के गेंदबाज रहे हैं लेकिन अगर अब वह लगातार 135 किमी की गति से गेंद फेंकते हैं तो उनकी पीठ पर असर पड़ेगा। ऐसे में वह मैच फिनिश करने की अपनी काबिलियत पर ज्यादा फोकस कर रहे हैं।

06 मैच सीमित ओवरों के मैच खेले जाएंगे जिसमें तीन वनडे और इतने ही टी20 में शामिल होंगे। वहीं 02 टीमें एक साथ विदेशी दौरे पर होंगी भारत की, एक इंग्लैंड में टेस्ट सीरीज के लिए और दूसरी श्रीलंका में सीमित ओवरों की सीरीज के लिए ।

कोलंबो में खेले जाएंगे सभी मैच

सफेद गेंदों से खेले जाने वाले वनडे और टी20 प्रारूप के छह मैचों की मेजबानी कोलंबो का आर प्रेमदासा स्टेडियम करेगा। मीडिया रिपोर्टों मेंश्रीलंका क्रिकेट (एसएलसी) के प्रशासनिक समिति के चेयरमैन अर्जुन डी सिल्वा के हवाले से कहा गया कि पूरी सीरीज को एक ही स्थान पर कराने की योजना है। भारतीय टीम पांच जुलाई को श्रीलंका पहुंचेगी और फिर इसके बाद एक सप्ताह तक एकांतवास में रहेगी जो चार और तीन दिन के दो चरणों में होगा। एकांतवास पूरा करने के बाद मेहमान टीम 13 जुलाई से तीन मैचों की वनडे सीरीज खेलेगी और फिर 22 जुलाई से तीन मैचों की टी20 सीरीज खेलेगी।

दर्शकों को प्रवेश नहीं

अर्जुन डी सिल्वा ने कहा, 'निश्चित रूप से यह इस पर भी निर्भर करता है कि कि उस समय की परिस्थितियां कैसी रहती है। कोरोना के कारण हम दर्शकों को स्टेडियम में प्रवेश करने की इजाजत नहीं दे सकते हैं, इसलिए सभी मैच बिना दर्शकों के ही खेले।